Title:

वर्तमान की चुनौतियों के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया:
जीवन की सादगी, परिवार में साक्ष्य, प्रवासियों का मिशन

Published and distributed by:

The Secretariat, The Syro-Malabar Major Archiepiscopal Assembly-2016
Mount St. Thomas, Kakkanad, Kochi – 682 030, Kerala, India
Email: smassembly2016@gmail.com

Layout and Printing:

Viani Printings, Ernakulam, Ph.: 0484 2401635

(For private circulation only)

fo'k; lph

सामान्य परिचय

भाग – एक

Lkknxh & dyhfl;k vkj 0;fDrxr thou e

प्रस्तावना (a 1– a 3)

1- ईसा मसीह का सादा जीवन एवं उन की शिक्षाएँ (a 4)

1.1. ईसा मसीह : सादगी का अवतार (a 5– a 7)

1.2. ईसा की आन्तरिक स्वतंत्रता : सादगी की पराकाष्ठा (a 8– a 14)

1.3. ईसा मसीह की सादगी एवं सहभाजन के लिए शिष्य का बुलावा (a 15– a 18)

2- सादगी–कलीसिया के प्रबोधनों में (a 19)

2.1. पवित्र सादगी एवं व्यवहारिक ख्रीस्तीय जीवन (a 20– a 23)

2.2. मानवीय संसाधनों के उपयोग में सादगी (a 24– a 26)

2.3. सादगी एवं पारिस्थितिक आध्यात्मिकता (a 27– a 28)

3- सादगी की समकालीन चुनौतियाँ

3.1. उपभोक्तावाद एवं मानवीय विकास (a 29– a 32)

3.2. दैनिक जीवन में विलासिता की सनक (a 33– a 37)

3.3. समारोहों एवं धार्मिक रिवाजों में अपव्यय (a 38– a 45)

4- सीरो–मलबार कलीसिया एवं सादगी की आध्यात्मिकता–व्यवहारिक सुझावें (a 46)

4.1. चरागाही नेतृत्व (a 47– a 52)

4.2. समर्पित लोग (a 53– a 57)

4.3. पैरिश एवं चरागाही जीवन (ª 58)
4.4. चरागाही सेवा में नई चुनौतियाँ (ª 59– ª 61)
4.5. ख्रीस्तीय भवने (ª 62)

निष्कर्ष (ª 63– ª 65)
चर्चा के लिए सवालें

भाग – दो
परिवार में साक्ष्य

प्रस्तावना (ª 1)

खंड – I

1- परिवार का सुसमाचार
1.1. परिवार के प्रति ईश्वर की योजना (ª 2– ª 7)
1.2. परिवार घरेलू कलीसिया के रूप में (ª 8– ª 9)
1.3. परिवार समाज की आधारभूत कोशिका के रूप में (ª 10)

खंड – II

2- समकालीन परिवार की चुनौतियाँ
2.1. परिवार की संरचना एवं स्थिरता (ª 11– ª 12)
2.2. प्रभावकारिता एवं भावुक परिपक्वता (ª 13– ª 14)
2.4. सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक चुनौतियाँ (ª 15– ª 18)

खंड – III

3- वर्तमान के पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के व्यवहारिक मार्ग

3.1. परिवार के सुसमाचार का बखान (ª 19– ª 24)
3.2. परिवारों एवं युवादंपतियों का साथ चलना (ª 25)
3.3. परिवार एवं ख्रीस्तीय निर्माण (ª 26– ª 29)
निष्कर्ष (ª 30)
चर्चा के लिए सवालें

भाग – तीन
प्रवासियों का मिशन

प्रस्तावना (ª 1)
1- प्रवजन के धर्मशास्त्रीय एवं बाईबिल संबन्धी दृष्टिकोण (ª 2– ª 5)
2- प्रवजन की प्रकृति एवं जटिलता (ª 6– ª 9)
3- सीरो–मलबार प्रव्रजन : इतिहास एवं विकास (ª 10– ª 18)
4- सीरो–मलबार प्रव्रजन की चुनौतियाँ (ª 19– ª 27)
5- सीरो–मलबार प्रव्रर्जन की संभावनाएँ (ª 28– ª 58)
निष्कर्ष (ª 59)
चर्चा के लिए सवालें

lkeku; ifjp;

सीरो–मलबार कलीसिया की मेजर आर्की एपिस्कोपल सभा संत थोमस ईसाईओं के 'योगम' नामक एक पुरानी कलीसियाई प्रतिष्ठान का एक नवीनीकृत एवं बहाल किया गया रूप है। सामान्य तौर पर, मेजर आर्च बिषप प्रत्येक पाचवाँ साल इस सभा का समाह्वान करते और ''संसार के लिए कलीसिया के प्ररिताई कार्यों एवं सेवाओं की समीक्षा करते और प्रभावशाली मार्गो की तलाश भी करते हैं''।[1] आगामी अगस्त 25–28, 2016 को होने वाली सभा में चर्चा के लिए, श्रद्धालुओं की तरफ से विभिन्न विषयों के सुझाव लेने का फैसला सन् 2015 जनवरी में हुई सीरो–मलबार कलीसिया के धर्माध्यक्षों की सभा ने किया था, ताकि ''समय के संकेत'' पहचान सकें और संसार में रहने के कलीसिया का कार्य और भी प्रभावशाली हो सके। उस के अनुसार धर्मप्रान्तों, धर्मसंघीय संस्थानों, प्रवासी बिरादरियों एवं व्यक्तियों से अलग–अलग मुद्दाएँ स्वीकार किये गये। सन् 2015, अगस्त में संपन्न हुई धर्माध्यक्षों की सभा ने उन मुद्दाओं से सबसे ज्यादा सुझाव किये गये इन तीन विषयों को चुना, जो निम्नलिखित है : 'जीवन की सादगी, 'परिवार में साक्ष्य' एवं 'प्रवासियों का मिषन', और तीन विशयों को 'वर्तमान की चुनौतियों' के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया के रूप में लिया गया। इन तीन विषयों पर तीन प्रारंभिक समितियों ने अलग से एवं संयुक्त रूप से विचार–विमर्श किया। एवं उन की निष्कर्षों को इस 'लीनिमेन्दा' के तीन अनुभागों में समाहित किया गया है। 'लीनिमेन्दा' के विषयों के अनुसार दिये गये अनुभागें, कलीसियाई जीवन के संबधित क्षेत्रों का एक सर्वग्राही समीक्षा अथवा नवीनीकरण की योजना नहीं देते हैं। फिर भी, वे चर्चाओं की

पहल कराने में समर्थ हैं, जो वापस 'अवाधारणाओं के, अनुभवों एवं आध्यात्मिक देनों के सहभाजन की ओर अग्रसर करते हैं'' (1 कुरि 12:4, 28, एफेसी 4:11)'' सामान्य तौर पर अपनी कलीसिया में एवं विशेषकर सभा में भाग लेनेवालों के बीच भी।

तीन मुख्य विषयों में सबसे प्रथम ''जीवन की सादगी'' है। प्रभु ख्रीस्त के शिष्यों की बिरादरी के रूप में कलीसिया को, ईसा नाज़री एवं उनके शिष्यों के द्वारा दिये गये नमूना का अनुसरण करते हुए, निरंतर एक सादा जीवन की ओर मन परिवर्तन करने की ज़रूरत है। हमारे ज़माने में संत पापा फ्रान्सीस, सुसमाचार के मर्म रूपी मूल्यों के बारे में हमारी संवेदानों को जगाते हुए सादगी का पर्याय बन कर उभरे हैं। 'सादगी वह क्षमता है, जिससे एक व्यक्ति 'पर्याप्त' कहने को समर्थ बनता है, जबकि उस ने कम से कम भी नहीं पाया हो। हमेशा, सादगी का अर्थ तापस संबन्धी किफायत नहीं होता है, बल्कि यह अपने लिये सांसारिक संसाधनों का न्याय संगत एवं मर्यादित उपयोग एवं ज़रूरतमंद लोगों के साथ अपने प्रावधानों के सहभाजन की माँग करती है। आखिरकार, सादगी उस ईश्वर से एक आनंदपूर्ण अनुराग से पैदा की जाती है, जिसने सब कुछ की रचना की और जो सब कुछ के मालिक हैं। प्रभु ख्रीस्त यह आग्रह करता है, वैसे ही आज की दुनिया, कि ईसाई लोग अपने मनोभावों, कार्यो, शैलियों एवं संरचनाओं में और भी अधिक सादगी का परिचय दें। समृद्धि की एक संस्कृति में, प्रभु ईसा के जीवन की सादगी के सद्गुण पर विचार करने और स्वयं के दैनिक जीवन की शैलियों और मार्गों पर विचार करने के लिए एक व्यक्ति को असामान्य ईमानदारी और साहस को ही अपनाने की ज़रूरत है। ''सादगी के

जीवन'' नामक लीनिमेन्दा का पहला भाग, उपभोक्तावाद एवं व्यक्तिवाद से दूषित एक दुनिया में हमें आत्म मंथन एवं नवीनीकरण की ओर ले जायेगा।

तीन मुख्य विषयों में दूसरा ''पारिवारिक जीवन में साक्ष्य'' है। जैसे हर कोई जानता है कि संसार भर के धर्माध्यक्ष गणों की सभा के मुख्य विषय पिछले दो वर्षों से परिवार ही रहा है। हाल ही में रोम में संपन्न हुई धर्माध्यक्षों की सभाओं की समितियों ने, पहली, 05 से 19 अक्टूबर 2014 तक, दूसरी 04 से 25 अक्टूबर, 2015 तक, वर्तमान में ईसाई परिवारों को घेरनेवाली पारिवारिक समस्याओं पर चर्चा की हैं। सार्वत्रिक कलीसिया की धर्माध्यक्षीय सभा की चर्चाओं के बाद सीरो–मलबार कलीसिया के धर्माध्यक्षीय सभा को यह उचित एवं आवश्यक लगा कि अगले मेजर आर्को एपिस्कोपल सभा में, परिवार में ईसाई साक्ष्य के विषय पर चर्चाएँ जारी रखा जायें। इस लीनिमेन्दा में परिवार के बारे में बताया गया भाग, सबसे प्रथम पवित्र ग्रन्थ में परिवार के बारे में ईश्वर के दर्शन, कलीसिया के अधिकारिक प्रबोधन एवं कलीसिया की परंपराओं को दुहराता एवं प्रबलित करता है। पहला भाग परिवार को एक धर्मशास्त्र सम्मत वास्तविकता के रूप में पुनः देखने का निमंत्रण देता है, जिस का अर्थ है परिवार में त्रिएक ईश्वर का प्रेम निहित है, परिवार एक कलीसियाई वास्तविकता है, परिवार एक घरेलू कलीसिया है, एवं एक राजनितिक वास्तविकता है; परिवार समाज का एक आधारभूत इकाई है। दूसरा भाग, समकालीन परिवारों की मुख्य चुनौतियों को पहचानने का प्रयास करता है और तीसरा भाग, वर्तमान पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के कुछ उपायों का सुझाव देता है। यह उम्मीद की

जाती हैं कि लीनिमेन्दा पर होनेवाली चर्चाएँ, समकालीन परिवारों की और अधिक चुनौतियों की पहचान करने एवं हमारे परिवारों को पवित्र परिवारें बनाने के और अधिक उपायों को खोजने में हमारी मदद करेंगी।

तीन मुख्य विषयों में तीसरा ''प्रवासियों का मिशन'' है। भारत और संसार के अन्य देशों के विभिन्न भागों में सीरो–मलबार कलीसिया के श्रद्धालुओं के मिशन प्रव्रजन के बदौलत आज सीरो–मलबार कलीसिया एक सार्वत्रिक कलीसिया बन गयी है। तत्व में, मिशन एवं प्रव्रजन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बाईबिल संबन्धी एवं धर्मशास्त्र संबन्धी दृष्टिकोणों के अनुसार प्रवासी लोगों को, साक्ष्य देने के लिए ईश्वर द्वारा चुनी गयी एक प्रजा के रूप में देखा जाता है, जो विभिन्न सांस्कृतिक धार्मिक एवं भाषाई परिस्थितियों में ईसा मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजे गये हैं, जो उन्हें विश्वास में अपने पिता प्रेरित संत थोमस से प्राप्त हुआ है। विश्वास के हस्तातंरण, परंपरा एंव पारिवारिक संबन्धों के हस्तातंरण में हमारी कलीसिया के प्रवासीगण जिन चुनौतियों का सामना करते हैं, यह बताती हैं कि प्रवासियों के प्रामाणिक एवं अर्थपूर्ण ईसाई जीवन के लिए उन्हें संसार के विविध भागों में आवश्यक चरागाही सेवा उपलब्ध कराने की सख्त ज़रूरत है। सीरो–मलबार कलीसिया के पुरोहितों द्वारा प्रवासियों को दी जानेवाली चरागाही सेवा उन्हें अपनी अद्वितीय कलीसियाई एवं सांस्कृतिक पहचान में बढ़ने के लिए अति आवश्यक है, मगर वह अक्सर अधिकार की सीमाओं के अन्तर्गत अपंग सा रह जाती है। फिर भी, द्वार तो खुलते ही जा रहे हैं: कल्याण एवं फरीदाबाद के धमप्रान्तों की स्थापना, एवं चरागाही सेवा के लिए भारत में पल्लवित अन्य अनेक केन्द्रों, अमेरिका के चिकागो

धर्मप्रान्त, एवं ऑस्ट्रेलिया के मेलबॉर्न धर्मप्रान्त एवं कैनडा के मिस्सिसागुआ का एग्जार्केट, आदि सीरो–मलबार कलीसिया के सार्वत्रिक प्रेरिताई प्रयाण के अर्थपूर्ण द्वार हैं। लीनिमेन्दा में प्रवासियों के बारे में बताया गया भाग, सीरो–मलबार के मेजर आर्की एपिस्कोपल सभा में भाग लेने वाले प्रवासियों के प्रतिनिधियों के सामने, सारी सीरो–मलबार बिरादरियों के लिए, समस्याओं का पूरा भण्डार ही खोलने का प्रयास करता है और यह उम्मीद की जाती है कि संपूर्ण कलीसिया प्रवासियों की उम्मीदों और भयों को समझने में सक्षम होगी।

मेजर आर्की एपिस्कोपल सभा, कलीसियाई आत्म–मंदन, एवं व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं संस्था के स्तरों पर आत्म–नवीनीकरण का अवसर होगा। इस लीनिमेन्दा के ध्यानपूर्वक अध्ययन एवं खुल्ली चर्चाएँ, जैसे इसके शीर्षक संकेत करता है, ''वर्तमान की चुनौतियों के प्रति कलीसिया की प्रतिक्रिया'', विशेषकर, दैनिक जीवन में सादगी, हमारे परिवारों में ख्रीस्तीय साक्ष्य एवं समूचे संसार में सीरो–मलबार के प्रवासियों का मिशन आदि, हमें 2016 के फलदायक सभा सत्रों की ओर ले चलें।

Hkkx & 1

Lkknxh % dyhfl;k vkj 0;fDrxr thou e

iLrkouk

1. हम एक उपभोग संस्कृति के ज़माने में जीवन बिता रहे हैं। जीवन को और भी सुखदायक बनानेवाली वस्तुओं का उत्पादन और ज़्यादा सा ज़्यादा लोगों द्वारा उन का उपयोग किये जाने की एक संस्कृति आज तेज गति से फैल रही है। विलासिता की गरिमा, सामाजिक स्थान–मान एवं मानसिक सुख प्रदान करनेवाले घरों, वेश–भूषाओं, गाड़ियों एवं गृहोपकरणों आदि और समारोहों और अनुष्ठानों का बढना इस का स्पष्ट प्रमाण है। इसलिए दैनिक जीवन बिताना आज के समाज में आम तौर पर महत्वहीन होते नज़र आ रहा है।

2. कलीसिया के श्रद्धालुओं ने ही यह आशंका का जतायी है कि समाज की इस प्रकार की चुनौतियाँ सीरो–मलबार कलीसिया में, विशेषकर केरल में रहनेवाले कलीसिया के श्रद्धालूओं में प्रकट रूप से नज़र आ रही हैं। उस की पृष्ठभूमि में कलीसिया की धर्मसभा के धर्माध्यक्षों ने इस विषय को, कि ख्रीस्तीय जीवन में सादगी की एक शैली का समावेश कैसे हो सकता है, अगस्त 25 तारीख को प्रारंभ होनेवाली सीरो–मलबार असेम्बिली का विषय चुना है। सादगी की शैली समकालीन रूप से सबदूर वांछित होती है, इस सत्य को ध्यान में रखकर यह विशेष रूप से कहा जाता है कि केरल के बाहर, क्षेत्रीय लोगों के बीच पैदा हुई बालावस्था की कलीसिया में यहाँ जिक्र की गयी कई चुनौतियाँ नज़र नहीं आती हैं।

3. ''सादगी कलीसिया और व्यक्तिगत जीवन में'' नामक विषय को यहाँ चार भागों में प्रस्तुत किया गया है। पहले भाग में ईसा की सादगी का जीवन एवं प्रबोधन और दूसरे भाग में कलीसिया की शिक्षाओं में बताये गये सादगी के जीवन दर्शन को भी प्रस्तुत किया गया है। ईश्वर के वचन और कलीसिया की शिक्षाओं में ही, हम कलीसिया और व्यक्तिगत जीवन में सादगी के जीवन–शैली अपनाने के आधार और आह्वान पाते हैं। तीसरे भाग में सादगी के जीवन की आधुनिक चुनौतियों की चर्चा की गयी है। सीरो–मलबार कलीसिया में सादगी के अभ्यास करने और उसे जीवन में उतारने के व्यवहारिक विचारों को स्पष्ट करनेवाला चौथाँ भाग खीस्तीय सादगी के बाह्य एवं प्रकट जीवन साक्ष्य की अभिव्यक्ति है।

1- bl k elhg dk lj y thou ,oa f k{kk

4. ईसा मसीह कलीसिया का शीर्ष है और कलीसिया उन का शरीर है (एफेसि 5:23)। प्रभु ईसा मसीह के सरल जीवन एवं शिक्षा कलीसिया और व्यक्तिगत जीवन में प्रकट होने वाली ठाठ–बाट की शैली से बाहर निकलने की हमें प्रेरणा देती है। सुसमाचार के ईसा हमारे मनन–चिन्तन का मार्गदर्शक बनें।

1-1- iHkq bl k elhg& lknxh dk ueuk

5. ईश्वर की सारी संपदा के अधिकारी होने पर भी स्वयं को शून्य बनाकर उस ने दास का रूप धारणा किया (फिलिप 2:6–7) वचन देहध ारणा कर एक मानव शिशु बन गया (योहन 1:14) नम्रता और सरलता का मूर्तिभाव बनकर ही उस ने चरणी में जन्म लिया (लूकस 2:7)

लोमडियों की अपनी माँदें है और आकाश के पक्षियों के अपने घोंसले, परन्तु मानव पूत्र को सिर रखने के लिए अपनी जगह नहीं थी। (मत्ति 8:20) सब कुछ का मालिक होते हुए भी अपने जन्म और जीवन में ईसा दरिद्र रहा है।[1]

6. फरीसियों और शास्त्रियों की शिक्षा शैली से अलग हटकर ईसा की शिक्षा शैली बिलकुल सरल थी। पूरी तरह सरल घर, खेत, सागर तट, घाट और मंदिर सब उस की शिक्षा के मंच बन गये। दैनिक जीवन के हिस्से होनेवाले खमीर (लूकस 13:20–21) अंगूरी मशकें (लूकस 5:37), दीपक (8:16;11:33), घाव में लगाने वाला तेल (लूकस 5:36) खेत में उगनेवाले बीज (मत्ति 13:4–9), आकाश के पक्षी (मत्ति 6:26–27) सब कुछ उस के बखान के हिस्से बन गये। यद्यपि दृढ़ निश्चय और कर्तव्य निष्ठा से उस ने शिक्षा दी, तो भी ईश्वरीय प्रजा को वह सरल और जीवन का स्पर्श करने वाली शिक्षा महसूस हुई।

7. ईसा मसीह की सरलता उस के देहधारणा और क्रूस मरण से समाप्त नहीं होने वाली थी। उल्टे, एक सादी रोटी बन जाने के लिए उस ने अपने को दीन बनाया। आज भी प्रतिदिन अर्पित किये जानेवाले पवित्र बलिदानों में इस सरलता की पराकाष्ठा दोहरायी जाती है। पवित्र बलिदान हम से कहता है कि सरलता के मनोभाव को हम अपने जीवन का नियम बना लें।

1-2- bl k dh vkUrfjd Lora=rk& lknxh dh J s’B vfHkO;fDr

8. सरल जीवन आन्तरिक स्वतंत्रता है। वह ज़रूरतों से होने वाला मोचन है। यह अन्तर्तम की स्वतंत्रता है, जो यह फैसला करता है कि

ज़रूरत मात्र की वस्तुएँ काफी हैं और जो उस के परे हैं उनको न तो जोर से पकड़ना और न उनमें चिपक जाना है। बेहद प्यार करने की क्षमता ही असली आन्तरिक स्वतंत्रता है। ईसा किसी भी चीज़, अधिकार, शान–मान, संपत्ति और स्वयं के जीवन के भी गुलाम नहीं रहे हैं। इस आन्तरिक स्वतंत्रता के मालिक होने के कारण उन सब बातों का, जो ईश्वर के राज्य के लायक नहीं है, निडर होकर परित्याग करने और बेहिचक नये मार्ग खोलने को ईसा समर्थ बना था।

9. ईसा जिन मित्रताओं का पोषण करता था, वे सब इस आन्तरिक स्वतंत्रता की बाहरी अभिव्यक्ति थी। बारह प्रेरितों की सहभागिता में उस ने अपनी सेवा–शुश्रूषा निभाई। उन लोगों को उस ने मित्र पुकारा (योहन 15:15) वह कभी भी मानव से दूर नहीं भागा, उल्टे सभी लोगों को ईश्वर के राज्य की मित्रता की ओर बुलाया। जनता की भारी भीड़ हमेशा उस का अनुगमन करती थी। ईसा की सादगी हमेशा मित्रता के लिए जगह खोजने वाली थी।

10. आन्तरिक स्वतंत्रता के मालिक होने के कारण समाज के गरीब और अमीर को, पापी और धर्मी को एक समान प्यार करने और उन्हें ईश्वर के राज्य की ओर बुलाने में ईसा समर्थ रहा। अमीरों एवं समाज की ऊपरी सतह के लोगों से उस ने नफरत नहीं की। जब कभी उन लोगों ने निमंत्रण दिया येसु उन के साथ उन की दावत में पधारा (लूकस 14:1, 5:29,7:6, 7:30, 11:37) मगर उस ने निस्संकोच यह शिक्षा दी कि सम्पत्ति से मानव जीवन धन्य नहीं होता है (लूकस 12:15)।

11. जिन लोगों का समाज ने अनदेखी की या जिन लोगों को घृणित समझा, उन सबों को विशेष रूप में उस ने प्यार किया। उन की बुरी दशा से उन्हें छुटकारा दिलाने के लिये ही उस ने उन के साथ मित्रता का सहभाजन किया। समाज में सबसे छोटे कोढ़ियों, लंगडों और अंधो को उस ने चंगा किया, पापियों के साथ भोजन किया और जिनके पास कुछ नहीं था उन के साथ रात बितायी। समाज के सभी स्तरों के लोगों के साथ एक ही मेज़ से भोजन करने से उस ने उन लोगों को बराबर बनाया और अपने भाईयों के रूप में उन को मान्यता दिया। ईसा ने सिखाया कि जब दावत की तैयारी की जाती है, तो दरिद्रों, अपंगों, लंगडों और अंधे लोगों को दावत में निमंत्रण दिया जायें। (लूकस 14:13–14) ईसा ने अपने जीवन से दूसरों को यह दिखलाया कि जाति–पाँत, वर्ग की षान नहीं, असीम प्रेम ही मानवता की गरिमा का आधार है।

12. सदूकियों के खिलाफ की गयी आलोचनाएँ सरलता पर ईसा के दृष्टिकोण की ओर संकेत करती हैं। मृत्योपरान्त जीवन के बारे में उन की कोई धारणा नहीं थी और वे विलासिता के प्रेमी और इस संसार में धन–दौलत और सुख–सुविधाओं का भरपूर आस्वादन करने में तुष्टि पानेवाले थे। दीन–हीन और कंगाल लोगों की वे अवज्ञा करते थे। इस से अलग हटकर ईसा नाकेदारों और पापियों का मित्र था (लूकस 7:34)। ईसा ने शिक्षा दी कि ईश्वर और धन दोनों की एक साथ सेवा नहीं की जा सकती (लूकस 16:13) ईश्वर के मंदिर को बाजार बनाने में अहम भूमिका निभानेवाले सदूकियों को भी जवाब देने के लिए उसने कोडा लिया (योहन 2:13–22) पत्थर के ऊपर पत्थर शेष न रहते हुए

येरूसालेम का मंदिर नष्ट होगा (मत्ति 24:2), ईसा का यह कथन हमारे लिए एक सबक है कि ठाट–बाट और व्यवसाय की रूख को जोर देते हुए होनेवाले चरागाही कार्यों का अन्त क्या होगा।

13. इस तरह फरीसियों के प्रति ईसा की रूख ध्यान रखने लायक है। बदलती परिस्थितियों के दबाव में विश्वास को कमज़ोर होने से बचाने के लिए, नियमों के अनुष्ठानों और अन्य रिवाज़ों में सुरक्षा खोजने वाले थे फरीसी लोग 'शुद्ध' धार्मिकता सुरक्षित रखने के लिए आम जनता से दूरी रखनेवाले और पापियों और नाकेदारों के साथ भोजन न करनेवाले थे फरीसी लोग। उन का धार्मिक जीवन इस प्रकार का था कि लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वे उपवास, प्रार्थना और भिक्षादान करते थे और चौकों में खड़े होकर प्रार्थना करते थे (लूकस 20:47, मत्ति 6:16), डींग मारने में (लूकस 18:11–12) और प्रथम आसनों की तलाश करने में (लूकस 11:43, 14:7, मत्ति 23:6–7) वे चौकस रहते थे। नियमों की, विशेषकर विश्राम दिवस की, अक्षरशः व्याख्या करनेवाले उन की नियम संहिता आम जनता के लिए असह्य बोझ बन गयी थी (लूकस 11:46, लूकस 13:14)।

14. ईसा न तो फरीसियों और शास्त्रियों से नफरत करता और न उन्हें अपना दुश्मन मानता है। वह उन के अतिथि सत्कार में भी भाग लेता था(लूकस 7:36, 11:37, 14:1)। निकोदेमूस जैसे लोग चुपके से उस का अनुगमन भी करते थे (योहन 3:1)। मगर, स्वयं को धार्मिक मानकर दूसरों को अपराधी समझते हुए उन पर अनावश्यक रूप से नियमों को थोपने का ईसा ने विरोध किया। पिता ईश्वर की दया और इनसान के

महत्व को भुलाकर नियमों का अनुष्ठान करने का उस ने विरोध किया। नियम का पालन एवं विश्राम दिवस का पालन ये सब मनुष्य की भलाई के लिए होना चाहिए (मारकुस 3:4, 2:27) नियम के संकरे दृष्टिकोण से जब देखा जाता है तो मनुष्य को ईश्वर का सादृश्य के रूप में नहीं देखा जा सकता है और इस तरह बिना कोई दया से मनुश्य के साथ व्यवहार होने लगेगा। नाकेदारों और पापियों को ईश्वर के राज्य की सन्तान बनाने के लिए प्रभु ने उन के अन्तर्तम की ईश्वरीय चेतना को जगाया (मत्ति 21:31, 8:11, लूकस 7:29–30)। ईसा ने जिस पिता को प्रकट किया वह सरलता सम्पन्न है, इसी कारण सुसमाचार का ईसा भी सरलता सम्पन्न है और हम भी सुसमाचार के अनुसार सरलता के लिए बुलाये गये हैं।

1-3- b:lk dh lknxh ,oa f k'; d: lgHkkt u dh cykgV

15. दीन–हीन लोग ही प्रभु ईसा के सरल जीवन जी सकते हैं। संत मत्ति के सुमाचार (5:3–12) में बताये गये आशीर्वचन, जो सुसमाचार का सार है, 37वाँ स्त्रोत्र गीत का पुनःवाचन माना जाता है (स्त्रोत्र 37:1–11) इस की पृष्ठभूमि पुराने विधान के अनाविम याह्वे (Anawim Yhwh), यानी, ईश्वर के दीन–हीन का मतलब उन लोगों से है जिन के पास ईश्वर के अलावा और कोई सहारा नहीं है। यानी, समाज के सबसे पतित लोग । वे ही रो–रोकर ईश्वर की दुहाई देते हैं। ईश्वर उन्हें कभी नहीं भुलायेगा (स्त्रोत्र 9:18)। वह उनका रूदन सुनता (स्त्रोत्र 10:17), उन्हे अपने मार्ग की शिक्षा देता (स्त्रोत्र 25:9) उन्हें तृप्त करता (स्त्रोत्र 22:6) उन का साथ देता (स्त्रोत्र 47:6), उन के लिए न्याय करता

(इसयाह 11:4), उन्हें अपनी मुक्ति से अलंकृत भी करता है (स्त्रोत्र 149:4) और वे ईश्वर में आनन्द मनायेंगे (इसयाह 29:19) संक्षिप्त में दीन–हीन लोग वे हैं, जो सम्पूर्ण रूप से ईश्वर की शरण जाते और ईश्वर द्वारा संपन्न किये जाते हैं। प्रभु ही उन की विरासत और उन का गढ़ है।

16. जो भौतिक संपत्ति का मालिक हैं और जिनके पास भौतिक संपत्ति नहीं होती, दोनों को प्रभु में (आत्मा में) दीन–हीन बनना है। मगर, भौतिक संपत्ति के मालिक को दरिद्र बनना हो, तो उसे ज़केयुस की तरह अपनी संपत्ति को बाँटने के लिए तैयार होना है। आत्मा में दीन–हीन लोग वे हैं, जो सम्पूर्ण रूप से ईश्वर पर अपना आश्रय रखकर अपनी संपत्ति गरीबों के साथ बाँटते हैं। संत पापा फ्रान्सीस के अनुसार प्रभु ईसा में संपन्न बनने की प्रक्रिया है ईश्वर पर आश्रय पाना और उसे अपनी सम्पत्ति समझना[2] इसी अर्थ में जो शिष्य ईसा की सादगी का अनुसरण करता है, उसे अपने छोटे से छोटे भाई को भी प्रभु ख्रीस्त का शरीर समझकर उस के साथ अपना सबकुछ बाँटना होगा (मत्ति 25:45)[3]।

17. अपने पास जो बचा हुआ है उसे दान में देने के लिए नहीं, बल्कि व्यक्ति की ज़रूरत के लिए, जीवन संधारण के लिए भी (मारकुस 12:44) देने के प्रभु ख्रीस्त के सहभाजन में सहभागी होने के लिए शिष्य बुलाया गया है। सादगी के लिए प्रयुक्त हप्लोतेस, जो युनानी शब्द है, सहभाजन की सादगी की ओर संकेत करता है। प्राचीन कलीसिया की जीवन शैली को सबसे खूबसूरत तरीके से प्रस्तुत करने के लिए इस शब्द का प्रयोग

किया जाता था। ''सब विश्वासी एक हृदय थे। उन के पास जो कुछ था, उस में सबों का साझा था। वे अपनी चल–अचल संपत्ति बेचते थे और उस की कीमत हर एक की ज़रूरत के अनुसार सबों में बाँटते थे। वे सब मिलकर प्रतिदिन मंदिर आया करते थे और निजी घरों में प्रभु–भोज में सम्मिलित होकर निष्कपट हृदय से आनन्दपूर्वक एक साथ भोजन करते थे'' (प्रेरित चरित 2:44–46)। अपने पास जो कुछ था उसमें सबों का साझा मानकर और ज़रूरतमंद लोगों के साथ बाँटकर प्राचीन ईसाई लोग अपने ख्रीस्तीय जीवन के प्रतीक प्रार्थना, प्रभु–भोज सहभागिता आदि के ज़रिए आनन्द और हृदय की सरलता के मालिक बने थे। सत्य निष्ठा, उदारता आदि हप्लोतेस नामक शब्द–सादगी का पर्याय है। दान देनेवाला उदारता से दान दे (रोमि 12:8) उदारता ही – सरलता ही दान में रंग लाता है। दरिद्रता में किया गया दान तो अपार संपत्ति बन जायेगा (2 कुरि 8:2, 9:11) भ्रामक शिक्षाओं से अलग हटने के लिए प्रभु ईसा में हमारी सादगी और पवित्रता हमारी मदद करेंगी (2 कुरि 11:3)।

18. सादगी मात्र ठाठ–बाट रहित या साज सज्जा रहित जीवन तक सीमित नहीं होती है। वह अपने वचन और कर्म के बीच का मेल है। वह दृढ़धारणाओं के अनुसार एक सहभाजन है। वह अन्तर और बाहर एक जैसे रहने की निश्कपटता है। दया सरल जीवन से बाहर की तरफ बहनेवाले ईष्वरीय प्रेम की निर्मल अभिव्यक्ति है। जो दया महसूस करता है, वह दया करनेवालों में ईश्वर के चेहरे का दर्षन करता है। जो दया करता है, वह अपने से प्रकाशित होनेवाली ईश्वरीय आभा में ईश्वर के अनुभव से भर जाता है। इस तरह सरलता और दया मानव समाज को

आन्तरिक और बाहरी रूप से ईश्वरीय अनुभव में बढ़ने की मदद देती हैं। प्रभु ईसा की जीवन–शैली रूपी निधी खोज निकालनेवाले के समाने सारी भौतिक संपत्ति निष्प्रभ हो जायेंगी।[4] यह दृढ़ धारणा कि जो मेरे पास है वह दूसरों के लिए बाँटने का है, जीवन की सरलता में गर्व करने की प्ररेणा हमें प्रदान करेगी। आज कलीसिया में इस मनोभाव की सख्त ज़रूरत है।

2- ljy thou&dyhfl;k dh f k{kkvk e

19. कलीसिया की शिक्षाओं और धर्मविज्ञानों में हमें जो पवित्र सादगी (Sancta simplicitas) देखने को मिलती है, वह सादगी के बारे पवित्र ग्रन्थ में बतायी गयी बातों का सिलसिला है। यह वह प्रेरणा स्त्रोत है, जो ख्रीस्तीय जीवन बिताने के लिए हमें मदद देता है। संत बेसिल हमें शिक्षा देते हैं कि ईश्वर मनुष्य की वाणी की नहीं, बल्कि हृदय की सरलता की जाँच करता है। नम्रता का सद्‌गुण एवं ईश्वर पर सम्पूर्ण आश्रय ही पवित्र सरलता का आधार है। हम देख सकते हैं कि संत क्रिसोस्टम ख्रीस्तीय सादगी पर बेधड़क बोलते हैं: ''शान्त भाव से समय बिताने वाले, ईमानदारी और संयम का जीवन बितानेवाले, अन्याय की अभिव्यक्ति नहीं करनेवाले, शहरी जीवन की ठाट–बाट नहीं रखनेवाले, स्वयं की इच्छा पर नहीं चलनेवाले, प्रकाश पूर्ण होश के साथ जीवन बितानेवाले, परिश्रम करने में लज्जित नहीं होनेवाले, सभी बुराईओं का स्त्रोत आलस्य में लज्जित होनेवाले, बाहरी आकार को श्रेष्ठ नहीं मानने वाले मगर, अपने मन की आन्तरिकता में गर्व करनेवाले...''[5]

2-1- ifo= lknxh ,oa 0;ogkfjd [khLrh; thou

20- lknxh ,oa l;e %हेरमस का गडेरिया सिखाते हैं कि सादगी किस तरह ख्रीस्तीय जीवन को गरिमामय बनाती है : ''विश्वास से आत्म–नियंत्रण पैदा होता है, आत्म नियंत्रण से सादगी भी। सादगी से निष्कपटता जन्म लेती है।''[6] सादगी और आत्म नियंत्रण आपस में जुड़े हुए हैं। बाद में ख्रीस्तीय आध्यात्मिकता में पनपने वाला संयम (Temperance)रूपी सद्‌गुण सादगी का हमसफर होता है। वह हमें सीमित करनेवाला एक नकारात्मक कार्य नहीं, बल्कि हमारे आन्तरिक शान्त भाव को लक्ष्य बनाने की जीवन की एक क्रमबद्धता है। यह वह सद्‌गुण है, जो हमें अपनी स्वार्थपरता की पूर्ती के लिए सब कुछ ढेर करने से हमें मुक्ति दिलाता, हमारे जीवन की भलाईओं को पहचान कर, अपनी सीमा से पार न जाकर, उन का आस्वादन करने के लिए हमें समर्थ भी बनाता है।

21- lknxh vkj mRlkg %ऐसे कुछ लोग हैं, जो सरल होने का दावा करते हैं, मगर, बिलकुल धीमी गति से काम करते हैं। संत अगस्तीन यह स्पष्ट करते हैं कि सरलता को अपनाना मतलब आलस्य को अपनाना नहीं है। संत योहन के सुसमाचार 1:32 में ईसा की बपतिस्मा के समय कपोत के रूप में उतरनेवाला पवित्र आत्मा सादगी का प्रतीक है। संत अगस्तीन के दृष्टिकोण में स्वयं की इच्छा की परवाह किये बिना ईसा के कार्यों की खोज करनेवाले ही कपोत की तरह सरल होते हैं। मगर, पुनरूत्थित ईसा पेन्तकोस के दिन उस में विश्वास करनेवालों को अग्नि के जीभ के रूप में पवित्रात्मा को बाँट देता है। कपोत की तरह सरल

बनने की कोशिश करते समय भी ख्रीस्तीय को अग्नि की ज्वालाओं की तरह उत्साही बने रहना है। संत स्तेफनुस पवित्रात्मा से भरे रहने के कारण उत्साह से प्रज्वलित होते रहते थे। इसलिए जिन विरोधियों ने उन्हें सुना था, उन्हें मारने के लिए पत्थर उठाया था। मगर पत्थरबाजी के बीच घुटने टेकनेवाले संत स्तेफनुस में संत अगस्तीन कपोत की सरलता को देखते हैं। इसलिए उन्होंने अपने गुरू की तरह यह दुआ की, ''हे प्रभु यह पाप इन पर मत लगा''।[7]

22. संत क्रिसोस्टम यह शिक्षा देते हैं कि मछुवारे, पापी लोग एवं शिविर बनानेवाले शिष्यों की सरलता ने ही उन्हें उत्साही प्रेरित बनने की मदद दी।[8] वे इस प्रकार विवरण देते हैं कि ख्रीस्तीयों के ठाट–बाट भरे जीवन किस तरह उन के द्वारा चलाया गया आध्यात्मिक संग्राम को फलहीन बनाता है। चरणों तक लम्बा वस्त्र, और मलमल पहनकर सिर पर कम कीमत के आभूषण (Trinkets) पहनकर खड़े रहनेवाले लोग द्वंद्व युद्ध कर सकते हैं। शत्रु को पराजित करने के बजाय अपने कीमती कपड़ों पपर कीचड़ न लगने देने और उसे फटने से बचाने में ही उन का ध्यान अटक जायेगा। बाहरी साज–सज्जा में ध्यान दिये बिना आन्तरिक कार्यो में जब एकाग्र चित्त होंगे, तभी हम बुराईओं पर विजय हासिल कर सकते हैं।''[9]

23- fo okl dh 0;k[;k e gkuokyh ljyrk % संत बेसिल यह शिक्षा देते हैं कि बड़े पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हुए विश्वास की सरलता और शुद्धता को नष्ट नहीं करें।[10] सांसारिक भाषा के डींग में नहीं ''विनम्र संवाद में ही ईश्वर प्रसन्न होता है''।[11] ''सादगी सत्य का

मित्र है।''[12] अपने शब्द और बातचीत की सरलता से ही संत पापा फ्रान्सीस दुनिया का ध्यान आकर्षित करते हैं।

2-2- lknxh vkj lk/kuk dk fofu;kx

24- साधनों के विनियोग के बारे कलीसिया की शिक्षा सरलता के मज़बूत स्तरों की ओर हमें अग्रसर करेगी। यह मैं ने अपनी मेहनत से बनायी संपत्ति है, उस का मैं अपनी इच्छानुसार खर्च करूँगा और उस के आस्वादन करके जीऊँगा, उस में आप को क्या? यही विचार कई लोगों को ठाट–बाट की ओर ले चलता है। मगर, पवित्र ग्रन्थ और कलीसिया के प्रबोधन हमें यह सिखलाते हैं कि ईश्वर की कृपा से हमें प्राप्त साधनों को हमें किस तरह देखना है। सृष्टि के प्रारंभ से ही धरती और उस के सारे साधनों की परवरिश करने, मेहनत के ज़रिए उन के ऊपर अधिकार जताने और उन के फलों का आस्वादन करने के लिए ईश्वर ने इंसान को नियुक्त किया (उत्पत्ति 1:26–29)। मगर, कलीसिया हमें याद दिलाती है कि साधनों का सार्वत्रिक लक्ष्य को कभी भुला न दिया जाये।[13] सृष्ट वस्तु सारी मानव जाती के लिए बनायी गयी है। सार्वजनिक कारिन्दगी के लिए ईश्वर उन्हें इनसान के जिम्मे सौंप दिये, न कि इनसान के स्वार्थ लाभ के लिए।[14] ''सब लोग सभी के लिए हैं, यह सहाधिकार की जिम्मेदारी का बोध 2000 वर्षों तक कलीसिया की आत्मा में जीवन्त बना हुआ है।''[15]

निजी सम्पत्ति के हक का कलीसिया समर्थन करती है।[16] मगर, अमित खर्च और अपव्यय बिलकुल अनैतिक है।[17] ''इनसान ने जिन वस्तुओं को नियम के अनुसार अपनाया है, उन्हें अपने स्वयं के मात्र

के रूप में देखना नहीं है। बल्कि स्वयं को और दूसरों को फायदा मिलना चाहिए। इसी मतलब से उन्हें अपने भाई–बहनों का हक समझना है''[18] धरती का मालिकाना हक ईश्वर का है, मानव अतिथि या परदेशी मात्र है (लेवि 25:23)। पुराने विधान की यह शिक्षा ही इस का आधार है। इसलिए संत पापा पॉल VI सिखाते हैः ''निजी सम्पत्ति का हक न तो संपूर्ण है ओर न शर्तों के परे है।''[19]

25. हर एक ख्रीस्तान का यह फर्ज बनता है कि जहाँ–जहाँ गरीबी और अत्याचार मानव जीवन को अपना शिकार बनाते हैं, वहाँ सहानुभूति के साथ–अपना सब कुछ दूसरों के साथ बाँट लें। पाप के दागों से विकृत हुई मानव जाति के लिए जिस तरह ईसा मसीह ने अपनी जान की कुर्बानी दी, उसी तरह अपने भाई–बहनों की ज़रूरतों में उनके साथ सहानुभूति से व्यवहार करने का फर्ज ख्रीस्तानों का है।[20] इसलिए संत अम्ब्रोस ने ऐसी शिक्षा दी है, ''तुम गरीबों को दान नहीं दे रहे हो, बल्कि जो उन के हक में हैं, उन्हें वापस दे रहे मात्र हो। सबके सार्वजनिक उपयोग के लिए दी गयी वस्तुओं तुम पर कब्जा जमाकर बैठे हुए थे। धरती सबों की है, अमीरों की नहीं।''[21] तगंहाली में पड़े व्यक्ति को देखकर भी उस के साथ अपनी सम्पत्ति बाँटने से इनकार करनेवाले व्यक्ति पाप करता है, ऐसा संत योहन हमें याद दिलाते हैं (1 योहन 3:17)[22]

26. सरलता के साथ अपनी सम्पत्ति खर्च करने में सहायक कुछ सद्गुणों के बारे में कलीसिया हमें शिक्षा देती है।[23] मानव के महत्ता के प्रति अपने आदर के कारण इस संसार की वस्तुओं से अपने लगाव पर काबू रखने का संयम उन में सब से प्रथम है। पड़ोसी के हकों का

संरक्षण करने और जो उस के हक में है वह उसे दिलाने के लिए न्याय रूपी सद्गुण का अभ्यास करना है। हमारे अन्तर होनेवाला तीसरा पुण्य है सहानुभूति। यह ईसा मसीह के मनोभाव के ही है, जिससे स्वयं संपन्न होते हुए भी हम को संपन्न बनाने के लिए वह दरिद्र बन गया (2 कुरि 8:9)। यह एक ऐसा बुलावा है, जो हमारे भाई–बहनों की बुरी हालात में सादगी का जीवनयापन कर सहानुभूति से उन के साथ व्यवहार करने का है, जबकि हम स्वयं अपनी संपत्ति खर्च कर सकते थे।

2-3. lknxh vkj ikfjLFkfrd vk/;kfRedrk ¼Eco-Spirituality½

27. लौदात्तो सी. (तेरी स्तुति हो) में संत फ्रान्सीस पापा द्वारा बताये गये वातावरण की ओर मनपरिवर्तन ख्रीस्तीय सादगी की सबसे विशाल भावना है। लालच के साथ कुदरत के शोषण करने की आज की हालात को हमें नष्ट करना होगी। इस प्रकार का एक फैसला और परिवर्तन ही वातावरण की ओर मनपरिवर्तन कहलाता है। सारे ब्रहमाण्ड की सारी वस्तुओं को अपने ही भाई–बहन माननेवाले संत फ्रान्सीस असीसी का चैतन्य ही इस का आधार है। पहाड़, नदि, वृक्ष–लताएँ, पशु आदि मेरे भाई होने के कारण उन का सत्यनाश नहीं करना है। मेरे जीवन गुजारने के लिए जितना चाहिए सिर्फ उतना ही कमाना है। वातावरण की ओर मनपरिवर्तन का आधार यह विवेक है कि जिस ईश्वर ने इनसान का सृजन किया था, ठीक वही ईश्वर ने इस ब्रहमाण्ड और इस के सारे चराचरों की रचना की है। इस के साथ–साथ यह ज्ञान भी हो कि उत्थित प्रभु ईसा मसीह ने भौतिक संसार को अपने में समाहित किया है और इसी से हर एक सृष्ट वस्तुओं में वह विद्यमान रहता है।[24]

28. वातावरण पर आधारित आध्यात्मिकता की एक ओर सीख है कम में ही आनन्द पाना। कम से कम में जीवन बिताने और तृप्त होने की आदत बनानेवाली एक शैली है।[25] इस प्रकार के वातावरण पर आधारित आध्यात्मिकता की नींव यह ज्ञान है कि यह धरती और उस के साधन बहुत ही सीमित है। मानव के लालच को तृप्त करने तक के साधन ध ारती पर मौजूद नहीं है, बल्कि उस की ज़रूरत के लिए ज़रूर है। वातावरण पर आधारित आध्यात्मिकता इस जिम्मेदारी के बोध से उत्पन्न होती है कि हम मानव इस सार्वजनिक भवन के मालिक नहीं, बल्कि केवल रखवाले और कारिन्दे हैं।[26] मानव की जिम्मेदारी है कि हमारे बाद आनेवाले सभी पीढ़ियों के लिए इस धरती और सभी चराचरों का संरक्षण करें।[27] इसलिए स्वयं के जीवन निर्वाह के लिए ज़रूरी वस्तुओं को इस धरती से स्वीकार करने की सादगी का जीवन है वातावरण पर आधारित आध्यात्मिकता।

3. lknxh dh ledkyhu pukfr ;k

3-1- miHkksx lL—fr vkj ekuo&fodkl

29. जैसे मनुष्य के ज्ञान और शिक्षा में विकास होता है मनुष्य के मन में अपनी कई सारी ज़रूरतों का बोध भी गहरा होता जाता है। तुलनात्मक रूप से मनुष्य के जीवन संधारण के लिए महत्वपूर्ण शारीरिक ज़रूरतों को पूरी करना आसान है, फिर भी मनुष्य के मानसिक एवं सामाजिक ज़रूरतें निरन्तर बढ़ती जाती हैं और पूर्ण रूप से उन्हें तृप्त नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए, अपने बदन को गर्मी और सर्दी से बचाने के लिए और, अपनी नग्नता को ढकने के लिए ज़रूरी

कपड़े खरीदने में ज़्यादा पैसा खर्च करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि समाज में एक व्यक्ति के शान–मान के अनुसार अपने मनपसंद वस्त्र खरीदरने के लिए कितने अधिक पैसे खर्च करना पड़ेंगे? एक परिवार को सुरक्षित रूप से रहने के लिए ज़रूरी एक भवन से कितने सुविधा युक्त भवन पैसे वाले अपने सामाजिक शान–मान दिखाने और अपने मन को ज़्यादा सुख प्रदान करने के लिए बनवाते हैं, जो बेहतरीन और कई मंजिलों का रहता है। इस प्रसंग में सादगी से ज़्यादा वह व्यक्ति अपनी मानसिक एवं सामाजिक ज़रूरतों में सहायक विलासिता को ही प्रमुख स्थान देता है। इस तरह आर्थिक और सामाजिक रूप से विकसित और समर्थ होने के साथ–साथ समाज में विलासिता की वांछा भी बढ़ती जाती है।

30. आज विकासशील राष्ट्रों की जनता भी विकसित राष्ट्रों की जनता की भाँति ज्यादा से ज़्यादा उपभोग वस्तुओं का भोग करने की इच्छा रखती है। एक ही समाज के निम्न श्रेणी के लोग उसी समाज के ऊँची श्रेणी के लोगों के जैसे जीवन का मज़ा लेने की इच्छा करते हैं। जैसे चाहते हैं वैसे नहीं होने के कारण बहुत से लोग असंतुष्ट एवं हताश होकर जीवन बिताते हैं। आनुपातिक रूप से आय नहीं होने के कारण दोनों वर्गों के बीच का अंतर प्रतिदिन बढ़ता जाता है और यह गरीब लोगों की असंतुष्टि और निराशा को गहरी कर देता है।

31. मानव की बढ़ती जा रही ज़रूरतों की पूर्ति के अनुसार मानव–विकास के आकलन किये जाने वाले इस परिस्थिति में सादगी का हमारे समाज में महत्व क्या होता है? सामाजिक अध्ययनों से यह प्रमाणित किया गया

है कि मानव की मानसिक और सामाजिक ज़रूरतों को कभी भी पूरी नहीं की जा सकती है। एक प्रकार से वे सब अनन्त हैं। अधिकार, स्थान, विलासित का सुख आदि ऐसी मानसिक एवं सामाजिक ज़रूरतें है, जिन की अधिक से अधिक मानव खोज करता रहता है। इसलिए विलासिता का वांछा को जीवन में कभी भी पूरी तरह तृप्त नहीं की जा सकती है। अथवा उस को खत्म नहीं की जा सकती है। सादगी वहाँ से पनपने लगेगी, जहाँ मनुष्य स्वयं उस की एक सीमा निर्धारित करता और उस से संतुष्ट रहने का निर्णय लेता है। दूसरे शब्दों में कहा जायें, तो ज़रूरतों को पूरी तरह से तृप्त करने से नहीं, बल्कि उन के परे जाने से सादगी का शुभारंभ किया जा सकता है।

32. संत पापा योहन पौलूस द्वितीय 1979 में पहली बार अमेरिका में अपने भ्रमण के दौरान और संत पापा फ्रान्सीस बार–बार ख्रीस्तीयों को यह शिक्षा देते आये हैं कि उपभोग संस्कृति के खिलाफ एक अन्य संस्कृति की रचना करने के लिए हर एक ईसाई को सादगी अपनाना होगी। ''सुसमाचार जो आनन्द दायक सरल जीवन का आह्वान देता है वह आह्वान कठोर आलोचना, थकानेवाली शंकाएँ एवं धन के प्रभाव को मानव विकास के मापदंड बनाने की प्रवृत्ति का मुकाबला करने का एक उत्तम दवा है।''[28] मगर, जैसे पहले बताया गया है, विलासिता की वांछा सदा इस के खिलाफ रहती है। हमारी कलीसिया के श्रद्धालुओं के जीवन के अधिकतर क्षेत्रों में यह पाया जाता है।

3-2- nfud thou e foykfl rk dh okNk

33. यह सच है कि मोबाईल फोन, इन्टरनेट एवं सैकडों टी.वी. चैनलों ने भी अधिक तकनीकी विकास के साथ जीवन बिताने को हमें सक्षम बनाया है। मगर, इन के द्वारा प्रोत्साहित किये जानेवाले फिजूल खर्च के मार्ग हमारे जीवन को स्वयं पर केन्द्रित सुख–सुविधाओं और सब कुछ बटोर लेने के प्रलोभन की ओर ले चले हैं।

34. मकान के निर्माण में लगी हमारी आपसी होड एक से बढ़कर एक में गुणवत्ता बढ़ाने की हमारी चाह मात्र को नहीं दर्शाती है। हमारे मकान एक परिवार को जीने की सुविधाओं से बढ़कर अपनी गरिमा, आकर्षण और धन की अधिकता का प्रदर्शन करनेवाले बन गये हैं। उस के लिए पैसा उधार लेकर, आय से ज़्यादा पैसा खर्च करके कर्ज के फँदे में फँसने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। गिरजाघरों के निर्माण में भी यह प्रवृत्ति नज़र आने लगी है।

35. कलीसिया की संस्थानों में अधिकतर संस्थानें नाम और यश बनाये रखने के साधन बन गये हैं। अक्सर उन संस्थानों के बीच में नकारात्मक होड भी लगी रहती है। इस बात की जाँच होनी चाहिए कि गुणवत्ता के नाम पर ख्रीस्तीय मूल्यों की शिक्षा देने में क्या हमारी संस्थाओं से भूल होती है या नहीं। हमें यह सचाई समझना होगा कि हमारी कई संस्थाएँ और सन्यास भवन भी गरीबों से अक्सर अलग ही रहती हैं। ध न–दौलत, ताकत एवं स्थान–मान से हमें मिली व्यग्रताएँ हमें बुलानेवाले और हम जिनके लिए भेजे गये हैं उन की तरफ मुड़ने से क्या हमें पथभ्रष्ट कर रही हैं? ख्याति के सोपान चढ़ने के चक्कर में क्या गरीबों

और दीन–हीन लोगों की हम उपेक्षा करते हैं? गरीब लोग हमेशा ही ईसा की सेवा शुश्रूषा गरीबों के मुख्य आदाता रहे है। क्या हमारी संस्थाओं और सेवा का लक्ष्य उन पर केन्द्रित नहीं रहना है? संत पापा फ्रान्सीस का आह्वान है कि हमारी सेवा–शुश्रूषा गरीबों और समाज के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहनेवाले सभी लोगों की ओर बढ़ती रहें। संत पापा का यह आह्वान हमारे मनन–चिन्तन का विषय बने।

36. नौकरी के प्रति हमारे मनोभाव का भी आत्म–मंथन होना ज़रूरी है। कि नौकरी को धन कमाने का और ठाठ–बाट का साधन के पर उसे ईश्वर द्वारा इनसान को भेंट की गयी सृजनात्मकता के सफलता के रूप में समझने वाले बहुत बिरले होते जा रहे हैं। श्रमिक लोग श्रम और श्रम की संस्थानों से अपनी वचन बद्धता खो बैठे हैं और श्रमिकों को अपने ही परिवार के सदस्य समझने का दृष्टिकोण श्रमदाता ने खो दिया है। जब श्रमिकों की यह कोशिश रहती है कि कम श्रम करके ज़्यादा धन कैसे कमा सकते हैं, तो श्रमदाताओं का यह विचार रहता है कि कम पैसे में ज़्यादा सा ज़्यादा काम कैसे करवाया जा सकता है। आलस्य और विलासिता श्रम के क्षेत्र को घटिया बनाती है और समाज की एकता के नाश करने वाले बनाती है।

37. ऊँची श्रेणी की शिक्षा और पेशाएँ हमारे कई परिवारों को उच्च श्रेणी के जीवन स्तर पर पहुँचा दिया है। मगर सोचने की बात है कि उस के समान ख्रीस्तीय सहभाजन की ओर हमें अग्रसर किया है या नहीं? हम ऐसे लोगों से वाकिफ है, जो अधिक से अधिक बटोर लेने के इरादे से ज़्यादा समय श्रम करते और परिवार और व्यक्ति के बीच

आपसी सम्बन्ध की परवरिश करने में चूक जाते हैं। किसी के सहारा लिये बिना जीवन यापन करने की आर्थिक स्थिति हासिल करने की व्यग्रता में कई लोग सहभाजन की दरकार को भुला देते हैं। हमें यह पहचनानना होगा कि इन सब का मूल कारण अधिक से अधिक कमाने की व्यग्रता होती है, इसलिए इस का एक मात्र समाधान सरल जीवन ही है। सरल जीवन बिताने वाले अपने परिवार, कलीसिया और समाज को अपना समय दे पाते हैं। तुलनात्मक रूप से ऊँची श्रेणी का जीवन बिताने वाले केरल की सीरो–मलबार कलीसिया के सदस्यों को प्रवासी कलीसियाई बिरादरियों और बालावस्था की ख्रीस्तीय बिरादरियों का विकास अपना लक्ष्य बनाना है।

3-3- lekjkgk vkj vu'Bkuk e vkMEcj

38. जन्म से लेकर मृत्यु तक जिन अनुष्ठानों और समारोहों से होकर हम गुजरते हैं, वे हमारे सामाजिक जीवन को आपस में जोड़ने के महत्वपूर्ण घटक होते हैं। मगर, आज समाज के सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव डालने वाला बाजारीकरण हमारे समारोहों और अनुष्ठानों में प्रतिबिम्बित होता है। यह भी देखा जाता है कि बाजारीकरण द्वारा मूल्य की श्रेणी के महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रस्तुत की जानेवाली आर्थिक समृद्धि ही कलीसिया और ख्रीस्तीय परिवार के आत्यंतिक लक्ष्य के रूप में हमारे व्यवहारिक जीवन में भी आ गयी है।

39. अनुष्ठानें अपने स्वभाव से ही फल प्राप्ति से सम्बन्ध रखते हैं। मगर, आज की बाजारीकरण की संस्कृति में अनुष्ठानों को पूँजी निवेश के रूप में देखने की स्थिति पैदा हुई है। इन अनुष्ठानों से हमें क्या

मिलेगा? क्या फायदा होगा? आदि सवाल इस का संकेत है कि खरीद–फरोख्त की संस्कृति कलीसियाई जीवन में पदार्पण कर रही है। जाने या अनजाने चरागाही कार्य में लगे हुए सेवकगण इस संस्कृति को अपनाते आ रहे हैं। नवीनता और विविधता से अलंकृत अनुष्ठानों की असीम गुजाईशों को प्रस्तुत करने में क्या हमारी चरागाही उत्सुकता सीमित हो रही है? ऐसा लग रहा है कि बढ़ते आ रहे तीर्थस्थान, पर्व एवं त्यौहारें और होड़ा–होड़ी से वादाओं का विज्ञापन देनेवाली नौ दिनी प्रार्थनाएँ आदि बाजार के खरीद–फरोख्त के चालों को उधार ले रही हैं। कलीसिया की संतानों को यह पहचानना होगा कि क्या ये सब हमारे विश्वास–जीवन की परवरिश करने में सहायक है या नहीं।

40. ख्रीस्तीय संस्कार रूपी बपतिस्मा, परम प्रसाद–ग्रहण, विवाह, पुरोहिताई अभिषेक आदि से लेकर सन्यस्त व्रतधारण एवं मृत्यु का वर्षगांठ तक आर्थिक समृद्धि और ठाठ–बाट की अभिव्यक्तियाँ बन रहे हैं न? समारोह फिजूल खर्च में और फिजूल खर्च झूठी ख्याति की खोज में बदल रहा है। अस्थायी फायदा के लिए उपभोग की रूख से इकट्टे होनेवाले श्रद्धालुओं की बहुलता ज़रूर होगी, फिर समय के चलते ये सारी रूख कलीसिया को विश्वास के अभाव की ओर अग्रसर करेंगी। इसलिए हमें चाहिए कि चरागाही सेवा को हम गंभीरता से लें और विकल मनोभावों और अंधविश्वासों से हमारे विश्वास के अनुष्ठानों को मुक्त करने का प्रयास करें। जब समाज सुखलोलुपता और फिजूल खर्च की ओर अग्रसर होता है, तो इस के खिलाफ एक अन्य संस्कृति का निर्माण करना ही कलीसिया का दायित्व होता है।

41. हमारे साधना केन्द्र, सन्यस्त भवन एवं पैरिश चर्च भी वचन के बखान करनेवाले की ही ओर ध्यान केन्द्रित करानेवाले ठाठ–बाट और राजत्व की स्थिति पैदा करनेवाले हो गये हैं। प्रभु ख्रीस्त को साफ–साफ प्रस्तुत करने के लिए कलीसिया के अधिकारियों और समर्पितों को सरलता अपनाना होगी। व्रतधारणा, पुरोहिताई अभिषेक आदि कलीसिया के सामान्य समारोह के मंच भी फिजूल खर्च के दिखावे के बन जाते हैं। यह हमारे लिए सोचने की बात है न? हम में से बहुत सारे लोगों को यह झूठा अभिमान लगे हुए हैं कि साज–सज्जा और सजावट दूसरें लोगों की सजावट से भी ज़्यादा नयनहारी और आकर्षक होनी चाहिए। हमारे त्यौहारों का संचालन ईश्वरीय प्रजा के विश्वास को बढ़ाने में कितना सहायक होता है? इस बात की जाँच हो कि आध्यात्मिक उत्साह, सहभागिता एवं सामाजिक एकता सुनिश्चित करनेवाले त्यौहारों और पर्वो का कहीं व्यवसायीकरण तो नहीं हुआ है।

42. कई शादी समारोह से यह प्रतीत होता है कि वह समारोह परिवार और बन्धुजनों की दौलत और कुल की गरिमा के बखान करनेवाले मंच है। कई लोग निमंत्रण पत्रिका की चमक और शादी में भाग लेनेवालों की बहुलता को ही विवाह –समारोह का माप दंड मानने लगे हैं। शीतक लगे ऑडिटोरियम, सोने के आभूषणों और वेश–भूषा की ठाठ–बाट एवं संचालकों की निपुणता, आदि बातों ने कई विवाह–समारोहों को विलासिता और फिजूल खर्च के मंच बना दिये हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, वे इन सब का अनुकरण करते और अंत में कर्ज के गहरे गर्त में पड़ जाते हैं।

43. मंदिर सजाने के लिए जब हजारों, लाखों रूपये खर्च किये जाते हैं, तो वह देवालय की गरिमा को खूबसूरत नहीं बनाता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो यह जिद करते हैं कि शादी की आशिष करने के लिए एक से ज़्यादा धर्माध्यक्षों की उपस्थिति हो। विवाह–समारोह में भाग लेने के लिए जब हमारे जान पहचान के सभी पुरोहितों को बुलाये जाते हैं, तो याद रखना कि उन के चरागाही शुश्रूषा का कीमती समय हम बरबाद कर रहे हैं। कई विदेश राष्ट्रों में यह देखा जाता है कि वधु–वर को शादी के लिए तैयार करनेवाले पुरोहित ही शादी की आशिष करते हैं। यह प्रथा बहुत ही अर्थपूर्ण है।

44. हर एक अनावश्यक कार्य को जब हम ज़रूरी कार्य में बदल लेते हैं, तो हमें यह ज़रूर याद रखना होगा कि हमारे जीवन के सीमावर्ती क्षेत्रों में कई सारे लोग खड़े हैं। हमारे बीच ऐसी बहुत सारी युवतियाँ हैं, जिन के लिए विवाह अब तक एक सपना मात्र रह गयी है, ऐसी हालात में हिसाब बताता है कि केरल के लोग के हर साल 800 टन सोना शादी के लिए खर्च करते हैं। 2015 में केरल के वनिता आयोग ने यह सवाल किया था, कि दस तौले सोने से क्या शादी समारोह सम्पन्न नहीं हो सकता? यह सवाल हमारे मनन–चिंतन का विषय बने। निमंत्रित लोगों की संख्या में भी कमी होनी चाहिए। हजार अथवा पंद्रह सौ लोगों की दावत से दो सौ लोगों की दावत और भी आनन्ददायक होगी न?

45. यह हमें यह ज़रूर लगेगा कि अपव्यय और फिजूल खर्च की बुरी हालत से सरलता के स्तरों तक अनुष्ठानों और रीति–रिवाजों को उठाना बहुत ही दुर्दम है। ऐसे कई लोग हैं, जो संपत्ति और पैसे का

व्यय करना व्यक्तिगत स्वतंत्रता मानते हैं। यह तो स्थान, समय, परिस्थिति और हालात पर निर्भर रहता है। मगर, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्तिगत व्यवहारों में बदलाव लाने का प्रयास करना है। हर एक समारोह के पश्चात बीते हुए समस्त कार्यकलापों का अवलोकन करके अनावश्यक कार्यों और ठाठ–बाट के खिलाफ विचारों का समन्वय कलीसिया के हर स्तरों में होना ज़रूरी है। समारोहों के बारे में जब हम फैसला लेते हैं, तो यह सोचना होगा कि यह समारोह समाज के निम्न श्रेणी के लोगों पर क्या असर करनेवाला है। यह पहचानना होगा कि जिनके पास अधिक संपत्ति है, जब वे अपनी संपत्ति उन लोगों के साथ बाँटते है, जिनके पास कुछ भी नहीं है, समारोह की गरिमा अपने आप बढ़ जाती है। तब जाकर सरलता के स्तरों तक समारोहों को बढ़ाने में हम समर्थ होंगे।

4- lhjk&eyckj dyhfl;k vkj lknxh ij vk/kkfjr vk/;kfRedrk

dN0;ogkfjd fpUru

46. ख्रीस्तीय सादगी के आध्यात्मिक भाव रूपी ईसा के सादगी का जीवन, शिक्षाएँ, कलीसिया की शिक्षाओं में चर्चित सादगी का जीवन–दर्शन, एवं सादगी के जीवन की आधुनिक चुनौतियों का हमने विश्लेषण किया है। अब हम उन के बाह्य एवं प्रकट रूपों पर विचार करते हैं। ईसा की सादगी का किस तरह सीरो–मलबार कलीसिया में हम पालन और अभ्यास कर सकते हैं? संत पापा फ्रान्सीस अपने जीवन और सन्देश से ईसा की सादगी का साक्ष्य देते रहते हैं। अगर ऐसा हो, तो हमारी

कलीसिया के ऊपर से नीचे तक की चरागाही कार्यो की शैली में परिवर्तन के बारे में हमें व्यवहारिक चिन्तन करना होगा।

4.1. dyhfl;k dh pjkxkgh urRo

47. हमारे महाधर्माध्यक्षों, धर्माध्यक्षों, पुरोहितों, पुरोहितार्थियों से ईसा के शिष्यत्व जिस सादगी की अपेक्षा करता है, उस के विविध स्तरों को अपनी जीवन–शैली के रूप में अपनाना होगा। ऐसे बहुत सारे पुरोहित आज हमारी कलीसिया में हैं, जो सुसमाचार के ईसा का निकट से अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। फिर भी कुछ व्यवहारिक शैली पर चरागाही नेतृत्व को विचार करना होगा।

48. **(1)** miyC/krk % सादगी का एक बड़ा मापदंड है सबों के लिए उपलब्ध रहना। कलीसिया के धर्माध्यक्षगण ईश्वरीय प्रजा के लिए, विशेषकर समाज के गरीब तबके के लोगों के लिए अभिगम्य होना चाहिए। पुरोहितों के जीवन एवं सेवा समाज के सबसे निचली श्रेणी के लोगों की जरूरतों पर विशेषरूप से ख्याल रखनेवाले हों। ईसा की तरह ''नाकेदारों और पापियों का मित्र कहलाने लायक पुरोहित को अपनी चरागाही सेवा में गरीबों के लिए उपलब्ध रहना होगा।

49. **(2)** O;fDxr thou esa ljyrk चरागाही सेवा में लगे हुए लोग सादगी के बारे में केवल प्रवचन देनेवाले नहीं रहें, बल्कि उस के स्वाभाविक प्रकटन भी रहें। तब जाकर कलीसिया के कार्यो को प्रामाणिकता प्राप्त होगी। पहनावा, भोजन, यात्रा, जीवन में प्रयुक्त उपकरण आदि में ठाट–बाट छोड़कर सादगी अपनानी है। चरागाही नेतृत्व में रहनेवालों के समागम की जगह पर वाहनों एवं भोजन कक्षों का निरीक्षण करने पर

सुसमाचार की सादगी से हमारी दूरी साफ नज़र आती है न? यात्रा के लिए कभी–कभी सार्वजनिक सुविधाओं का उपयोग करना नमूनादायक होगा। आम जनता के साथ बैठकर उनके हृदय विचारों को जानकर चरागाही कार्य में मन लगानेवाले संत पापा फ्रान्सीस की तरह कलीसिया में सेवा करनेवाले लोग आम जनता के साथ रहने में आनन्द पानेवाले हों।

50. **(3)** Pkjkxkgh nf'Vdks.k अपनी सेवा में सुपूर्द लोगों के साथ दृष्टता से व्यवहार नहीं करें, बल्कि दयाभाव से व्यवहार करें। हमें इस बात का मूल्यांकन करना होगा कि समाज की किस श्रेणी के लोगों के साथ हम गुलमिल जाते हैं। कलीसिया गरीब है और गरीबों की है। इसी दर्शन को अपने जीवन में उतारने से ही हम ईसा की सादगी के गवाह बन जाते हैं।

51. **(4)** lgHkkftu गरीबों के साथ संपत्ति बाँटने के अवसरों को नष्ट नहीं करना। ईश्वरीय प्रजा को इस का बोध कराना और गिरजाघर के त्यौहारों, मंदिर निर्माण के अवसरों जैसे मौकाओं में गरीबों के गदगदों पर कान देने की उन्हें प्रेरणा देना।

52. **(5)** U;k; dk lkFk nuk % कलीसिया की सेवा में विशेषरूप से नियुक्त लोग न्याय के लिए हो रहे संग्रामों में क्रियाशीलता से भाग लेनेवाले हों। कलीसिया के सेवकों का यह फर्ज बनता है कि जब हमारे समाज को न्याय निषेध होने के अवसर पर मात्र नहीं, बल्कि जहाँ–जहाँ न्याय का निषेध होता है, वहाँ कलीसिया के प्रतिनिधि के रूप में ख्रीस्तीय मूल्यों को समाने रखकर वे दखल दें।

4.2. dyhfl;k d lU;Lr ykx

53. दरिद्रता के प्रति ईसा के लगाव को नैतिक रूप से अपने जीवन में उतारने के लिए ही हर एक सन्यस्त समूह बुलाया गया है। सन्यस्त वे हैं, जिनके हृदय में यह दृढ़ धारणा है कि ईश्वर अपनी विरासत है, तो किसी भी चीज़ की कमी नहीं रहेगी और इस सत्य का अपना जीवन से साक्ष्य देते हैं। कुछ व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाना समय की माँग है।

54. **(1)** ljy thou& kyh dh vkj ykVuk सन्यस्त श्रेष्ठ गण एवं सभी सन्यस्तों को ईसा की सरल जीवन–शैली को अपनाना है। ''हमारे विश्वास और गरीबों के बीच अटूट बन्धन है''[29]। संत पापा यह माँग करते हैं कि जिन लोगों ने समर्पित प्रेरिताई को ग्रहण किया है उन्हें यह सर्वाधिक साफ समझना चाहिए।[30]

55. **(2)** xjhck l rknkRE; LFkkfir djr g, lleckpkj ipkj dju dk nkf;Ro % ईसा की तरह समाज के सबसे गरीब, दीन–हीन, बीमारों, उपेक्षितों एवं विस्मृत हुए लोगों एवं प्रतिफल देने में असमर्थ लोगों (लूकस 4:13–14), का विशेष ख्याल रखते हुए सुसमाचार प्रचार करने के लिए सन्यस्त–समर्पित लोग विशेष रूप से बुलाये गये हैं ।[31] अधिकार के सारे हकों को तजकर, गरीबों के साथ दैनिक जीवन के असमंजस में जीवन बिताते हुए सन्यस्तों को ईश्वरीय प्रेम के जीवन्त संकेत बन जाना है। इस तरह गरीबों के भाई–बहन बन जाने से सुसमाचार के आनन्द के गवाह बनने में वे समर्थ हो जायेंगे।

56. **(3)** lLFkkuc) ugh gkuk % संस्थानों की सुरक्षा में सीमित होनेवाले नहीं बनना हैं। इस का विश्लेषण हो कि हमारे परम्परागत चरागाही कार्य, शिक्षा का प्रेरिताई कार्य, रोगी–सेवा शुश्रूषाएँ, समय के प्रलोभन रूपी दुनियादारी का प्रसार, प्रतिस्पर्धा एवं विलसिता को किस तरह जीत लिया जायें। असहाय लोगों की व्यग्रताओं और बीमारों के आपातकालीन ज़रूरतों का शोषण नहीं करना है।

57. **(4)** इस धारणा को बढ़ावा दी जाये कि सन्यस्त बिरादरियों की सम्पत्ति आम भलाई के लिए हैं। नबियों के मनोभाव से निराश्रय लोगों की पनाह बनने में जीवन की सफलता का अनुभव पानेवाले बन जाना। जीवन की डगर में लडखड़ाकर गिरनेवालों को उठाते हुए नये स्थानों के प्रबन्ध करनेवाले सन्यस्त लोग ईश्वर के राज्य का विस्तार कर रहे हैं।

4.3. ifj k ,o pjkxkgh dk;& kyh %

58. ''पैरिश एक इलाके में, देश में कलीसिया की मौजूदगी है'' ।[32] कलीसिया की संतानों एवं उस इलाके में रहनेवाले अन्य धर्म के लोगों के जीवन में ईसा का करूणामय प्रेम एवं ईश्वर के परिपालन पैरिश के साहचर्य से बरसा जाना चाहिए। उसके उपयुक्त शैली–परिवर्तन पैरिशों को और भी ज़्यादा सार्थक बना देगी।

(1) पैरिश के चरागाही कार्यों का प्राथमिकता के आधार पर मूल्यांकन हों। सादगी और आध्यात्मिक उत्कर्ष मुख्य लक्ष्य बन जायें। और वे गरीबों के प्रति दया के कार्य बनकर प्रवाहित हों। उस तरह उस इलाके के लोगों को यह एहसास हो कि पैरिश सब लोगों का स्वागत में खुला हुआ एक द्वार है।

(2) बेहद समारोहों, अनावश्यक निर्माण कार्यो एवं निरर्थक अनुष्ठानों के लिए खर्च होनवाले समय और ऊर्जा में कमी करके, पैरिश के चरागाही कार्यों में ध्यान केन्द्रित करने का वातावरण तैयार करना। कार्य–कलापों की बहुलता में पैरिश के परिवारों की असली हालात तक जानने में असमर्थ होने की स्थिति में बदलाव होना चाहिए। हमारा चरागाही कार्य एक इलाके की ईश्वरीय प्रजा के गद्‌गदों एवं मुसीबतों के लिए प्रभु द्वारा दिये जानेवाला जवाब बन जायें।

(3) समारोहों के भाग माने जानेवाले आतिशबाजी को दिये जानेवाले महत्व की पुनः जाँच करने का कईबार कलीसिया के नेतृत्व ने आहवान किया है। शब्द–प्रदूषण, पर्यावरण प्रदूषण, धन का अपव्यय आदि सामाजिक बुराईयाँ हैं। ये सब जीवन एवं सेहत को बड़ी हानी पहुँचाती हैं। हमें यह पहचानना होगा कि देवालय परिसर में होनेवाली शान्ति, देवालय की पवित्रता आदि, आतिशबाजी से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

(4) प्राचीन कलीसिया बिरादरी की तरह पैरिशों को भी प्रार्थना, समागम, पवित्र परम प्रसाद आदि में गढ़ी हुई जीवन्त ख्रीस्तीय बिरादरी बन जाना चाहिए। जिन गिरजाघरों के पास अधिक सम्पत्ति है, वे उसे सार्वजनिक भलाई में खर्च करें। समारोहों के लिए इकट्टे किये जानेवाले धन के एक अच्छा प्रतिशत गरीबों की मदद करने की करूणा–निधि के रूप में अलग किया जाये और योग्य लोगों की मदद के लिए उस का उपयोग भी किया जायें।

4.4. pjkxkgh {k= dh vk/kfud pukfr;k

59. भले समारी का दृष्टान्त आज के चरागाही कार्य के लिए एक चुनौती है। दृष्टान्त में दर्शाये गये याजक और लेवी की तरह संस्थानों और संगठनों के रखवाले बनने में क्या हमारा चरागाही कार्य समाप्त हो रहा है? बलि चढ़ाने की व्यग्रता में मंदिर की ओर प्रस्थान करनेवाले याजक और उस के साथ रहनेवाले लेवी। रास्ते में घायल होकर पड़ा मनुष्य उन के अनुष्ठानों में बाधा डालनेवाला होता है। मगर, भले समारी का विचार यह है कि रास्ते में घायल होकर पड़े मनुष्य का क्या होगा। वह अपने गधे से नीचे उतरा; चोटों पर पट्टी बाँध दी; उन घावों में तेल लगाया। सराय में पहुँचा दिया। उधर पवित्र बलिदान गली में ही सम्पन्न हुआ। संत पापा हमें आह्वान देते हैं कि हम संस्थानों और संगठनों के परे ईसा के मनोभाव को अपना लें।

60. यह बड़ी शुभ आशा का विषय है कि हमारी कलीसिया में इस प्रकार के बहुत सारी चरागाही पहलों की शुरूआत हुई हैं। बाजार का प्रेरिताई कार्य, अंग–दान की पहल, अन्य राज्य के मज़दूरों के बीच की शुश्रूषाएँ, मानसिक रूप से विक्षुब्ध लोगों, नशे की लत में पड़े लोगों, वैश्यावृत्ति में लगे लोगों आदि बहुत सारे प्रेरिताई क्षेत्र आज विद्यमान हैं। घायल करनेवाले डाकु का मनपरिवर्तन भी आज चरागाही कार्य का हिस्सा बना हुआ है। यह देखा जा सकता है कि कतरा कर चले जानेवाले याजक और लेवी एवं चोटों में पट्टी बाँधकर सराय में पहुँचाने वाले भला समारी भी कलीसियाई शुश्रूषा में एक ही मन से, ईसा के मनोभाव से भागी होते हैं। यहाँ बलि, बलिवेदी और बलि वस्तु के बीच

एक लय है। मैं खुशी के साथ यह कहना चाहूँगा कि ये सब संसार के सामने हमारी कलीसिया द्वारा दिये जाने वाले नूतन साक्ष्य हैं। मगर इस साक्ष्य को कलीसिया के सभी क्षेत्रों में फैलाना हो, तो कलीसिया को सादगी के लघुत्व में ज़्यादा सा ज़्यादा अपना पैर टिकानी होगी।

61. इतने कहने का मतलब यह नहीं है कि कलीसिया अपनी सारी संस्थानों का परित्याग करें। समय की अपेक्षा के अनुसार कलीसिया के संस्थानों में शैली परिवर्तन अनिवार्य है। हमारी शैक्षणिक संस्थाएँ समाज की निचली श्रेणी को भी उपलब्ध ऊँची शिक्षा के वक्ता बन जायें। गरीबी की निस्सहायता झेलनेवाले कंगाल मरीज हमारे अस्पताल के सबसे बड़ा विशिष्ट व्यक्ति बने। ऐसे लोगों की मदद करना घाटा के तालीका में न जोड़ा जायें। ऊँचे स्तर के मान्यता प्राप्त स्कूलों में दस प्रतिशत सीटें गरीबों के लिए आरक्षित रखा जायें। मकान के निर्माण में ठाट–बाट से ज्यादा सुविधाओं को महत्व देने की जागरूकता पैदा कर दिया जायें। संस्थाओं के संचालन में धर्मप्रान्तों एवं सन्यस्त बिरादरियों को सत्यता सुनिश्चित करना होगी। इन के प्रशासन–समिति में खीस्तीय धारणाओं से संपन्न लोकधर्मियों की साझेदारी बढ़ाने का हमें प्रयास करना होगा।

4.5. [kLrh; ifjokj e lknxh dh pukfr;k%

62. खीस्तीय परिवार एक पारिवारिक कलीसिया है। यह शिक्षा कलीसिया और परिवार के अटूट बन्धन को प्रकट करती है। परिवार मात्र एक सामाजिक संस्थापन नहीं है, बल्कि ईसा में प्रांरभ हुए ईश्वरीय राज्य का किवाड है। उन का दैनिक जीवन कलीसिया का असली रूप है।

(1) खीस्तीय परिवारें ईश्वरीय जीवन की क्रमबद्धता का अभ्यास करने की पाठशाला बनें। प्रेम पर आधारित जीवन बिताना, बच्चों के साथ प्रार्थना करना, एक साथ बैठकर ईश्वरीय वचन का अध्ययन करना, पढ़ना, पवित्र बलिदान एवं अन्य संस्कारों में भाग लेना, आदि से बच्चों में यह दृढ़ धारणा पैदा करनी है कि केवल भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में नहीं, बल्कि ईश्वरीय योजना पहचाकर उस के अनुसार जीने में ही उन का भविष्य शोभायमान होगा।

(2) समारोहों और त्यौहार को ठाठ–बाट के अवसरों के रूप में देखे बिना, वह विश्वास की बाहरी अभिव्यक्ति बन जाने लायक दृष्टिकोण इस असंबली में पैदा हों।

(3) संतानों का ईसा की करूणा की बाहों के रूप में गढन करना है। अपने संतानों को, उन के अपने जीवन द्वारा, अनेकों संतानों के लिए पनाह और छाया बनने और होठों पर सुसमाचार और बाहों में परोपकार के कार्यों एवं हृदय में ईश्वरीय प्रेम के जीवन बिताते देखने को कितने सारे माता–पिता तरस रहे हैं।

(4) संपत्ति और साधनों के प्रति माता–पिता के दृष्टिकोण न्यायपूर्वक खीस्तीय दृष्टिकोण हो, तो संतान भी मूल्यों पर आधारित जीवन बिताने वाले बन जायेंगे। ऐसे बहुत सारे माता–पिताओं को हम देख सकते हैं, जो अपनी नौकरी करते समय रिश्वत लेते और अधिक से अधिक संपत्ति कमाते और अपने बच्चों को ठाठ–बाट के जीवन बिताने के लिए पैसे कमाते हैं और अन्त में अपने ही बच्चों से तिरस्कृत होकर बड़ी परेशानी में जीवन यापन करते हैं। जाने या अनजाने हम अपने चरागाही

दृष्टिकोण से यह गलत सोच अपनाने का प्रोत्साहन न दें कि किसी भी प्रकार के छल से कमाया गया धन का एक हिस्सा कलीसिया के विकासोन्मुख कार्यों के लिए चंदा के रूप में देने से सभी गुनाहों से मुक्ति मिलेगी।

(5) माता–पिताओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे परिवार में होनेवाले समारोहों में गरीबों का ख्याल और सहभाजन का आनन्द एक अविभाज्य हिस्सा बनें। बचपन से ही अपनी संतानों को इस का अभ्यास भी कराया जायें।

(6) यह मनन–चिन्तन हो, कि विवाह समारोह के ठाठ–बाट पर नियंत्रण रखने के लिए हम क्या–क्या व्यवहारिक कार्यवाही कर सकते हैं।

(7) सदगी के जीवन बिताने से कलीसिया, समाज और ज़रूरतों में दबे हुए लोगों के लिए समय खर्च करने को परिवार के सदस्य समर्थ होगें। बौद्धिक, तकनीकी एवं पेशा सम्बन्धित अपनी कुशलताओं को कलीसिया की सहभागिता एवं सार्वजनिक समाज की भलाई के लिए हमें उपयुक्त बनाना होगा। विशेषकर, नौकरी से सेवानिवृत्त लोगों की क्षमताओं का फायदा लेना है।

63. ईसा और उन के अनुसरण करनेवाले संत फ्रान्सीस, धन्य मदर तेरेसा आदि लोगों के ख्रीस्तीय जीवन की पहचान आन्तरिक स्वंतत्रता से उत्पन्न सरल जीवन की शैली है। इसी आन्तरिक अनुभूति और सौभाग्य की खोज में ही समर्पित लोग सब कुछ का परित्याग कर सादगी का जीवन बिताने की कोशिश करते हैं। उपभोग संस्कृति के बीच रहते हुए आन्तरिक सादगी का अनुभव करने को सारे ख्रीस्तानों को समर्थ बनना होगा। तब जाकर सहभाजन के ख्रीस्तीय प्रेम की ओर हम अग्रसर हो सकते हैं।

64. सादगी हमें याद दिलाती है कि अपव्यय और स्वार्थता को पाप ही मानें। असलियत में अपव्यय हमें अशान्ति और उत्कंठा भेंट करता है। सब कूछ होने पर भी, जब पिता का प्रेम जीवन से नष्ट हो जाता है, तब उत्कंठाएँ और आकुलताएँ हृदय में भर जाती हैं। सादगी तो, आकाश की पक्षियों की तरह, खेत के फूलों जैसे पिता के परिपालन में पूर्ण रूप से आश्रय रखकर उत्कंठा के बिना जीवन बिताने की हमें सीख देती है। (मत्ति 6:25–34) शान्ति और अमन–चैन की तलाश में मनुष्य नये मार्गों की तलाश करता है। मगर, ईश्वर के सन्निधि में नम्रता भरा हृदय ही शान्ति प्राप्त करता है। उन के हृदयों में ईश्वर अपनी शान्ति बरसा देगा।

65. सादगी ईसा की जीवन–शैली की तरह सादगी कलीसिया की भी जीवन–शैली बना दी जायें। तभी कलीसिया ईसा को संसार के लिए उपलब्ध बनायेगी। यह शैली अपनाने पर होनेवाली सभी घाटाओं को

फायदाओं के रूप में जब देखा जाता है, तब कलीसिया वास्तव में ईसा की सरलता को अपने जीवन में उतार लेती है। आज के संसार आकर्षक रूप से हमारे सामने जो बाजार की संस्कृति, समारोह और ठाट–बाट प्रस्तुत करता है उन सबके के सम्मुख सादगी की जीवन शैली हर परिस्थिति में पाने का विवेक कलीसिया की हर एक संतान में पैदा हो। ईसा की सादगी ख्रीस्तीय जीवन का आधारभूत नियम बनें और ईश्वर की दया के अद्‌भुत चेहरा जैसे वह जीवन में पल्लवित हो जायें। ''तुम्हारे स्वर्गिक पिता जैसे दयालू बनो '' (लूकस 6:36)। इस तरह आज की दुनिया में कलीसिया नबी की वाणी बन कर उभर जाती है।

ppk d fy, loky

1. सादगी के जीवन से आप का क्या तात्पर्य है? सादगी के जीवन में बाधा डालने वाली आधुनिक प्रवृत्तियाँ कलीसिया में और व्यक्तिगत जीवन में क्या–क्या हैं? उन के मुकाबला करने के मार्गों की राय दें।
2. चर्चा सहायक के उजाले में, एक अर्थपूर्ण जीवन के बारे में आम समाज के एवं हमारे व्यक्तिगत दृष्टिकोण की ईसा के दृष्टिकोण से तुलना करें।
3. उपभोक्ता संस्कृति की संतती रूपी विलासिता एवं खरीद–फरोख्त की रूख, क्या हमारे सामाजिक जीवन पर गंभीर प्रभाव डालती हैं? अगर है, तो उन के लिए व्यवहारिक समाधनों के सुझाव दें।

4. कलीसिया एवं सन्यस्त धर्मसंघों की संस्थाएँ सादगी की आध्यात्मिकता के बखान में क्या अडचनें पैदा करती हैं? आप के विचारों को व्यक्त करें।
5. सादगी के जीवन को अपनाने के लिए चरागाही नेतृत्व, सन्यस्त बिरादरियों, पैरिशों, परिवारों एवं व्यक्तियों को किन–किन सक्रिय शैलियों को अपनाने होंगे?

Endnotes

1. Pope Francis Speech on 20/07/2015.
2. Pope Francis Speech on 16/06/2015.
3. Pope Francis Speech on 16/06/2015.
4. *Evangelii Gaudium* 179.
5. Chrysostom, "Twenty-one Homilies on the statues, Homily XIX, 2-3", in *NPNF*, First Series, Vol. XIX, p. 465.
6. Shepherd of Hermes, 15 - *ANF,* II, p. 16.
7. Augustine, "Tractates on the Gospel of St. John, Tractate 4", in *NPNF*, First Series, Vol. VII, p. 40.
8. Chrysostom, "Twenty-one Homilies on the Statues, Homily XIX, 5", in *NPNF,* First Series, Vol. XIX, p. 465.
9. Chrysostom, "Homilies on the Acts of the Apostles. Homily VII on Acts 2, 37", in *NPNF,* First Series, Vol. XI, pp. 48-49.
10. Basil, "On the Spirit, VI, 13", in *NPNF*, Second Series, Vol. VIII, p. 8.

11. Otloh von St. Emmeram - ca 1020, *Rustica humilium dicta*, *PL* 146:246.
12. Gilbertus of Hoilandia (1150), *PL* 184: 115.
13. CCC 2403.
14. CCC 2402, 2403.
15. Pius XII, *Discourse*, June 1, 1941; CCC 1942.
16. CCC 2402.
17. CCC 1409.
18. *Gaudium et Spes* 69.
19. Paul VI, *Populorum Progressio*, 23.
20. Pius XII, *Summi pontificatus*, Oct. 20, 1939 in *AAS* 31 (1939) 423ff.; CCC 1939.
21. *De Nabute*, c. 12, n. 53: *PL* 14. 747.
22. Paul VI, *Populorum Progressio*, 23.
23. CCC 2407.
24. *Laudato Si* 221.
25. *Laudato Si* 222.
26. *Laudato Si* 67.
27. *Laudato Si* 68.
28. John Paul II, *Homily*, 2 October 1979, Yankee Stadium, New York, no. 6.
29. *Evangelii Gaudium*, 48.
30. Pope Francis Speech on 24/05/2015.
31. Pope Francis Speech on 24/05/2015.
32. *Evangelii Gaudium*, 28.

Hkkx & 2

lkfjokj e: Lkk{;

iLrkouk

1. ''एक पुरूष और स्त्री, जो विवाह में एक हो गये हैं, अपनी संतानों के साथ एक परिवार का निर्माण करता है'' ।[1] ''एक ख्रीस्तीय परिवार व्यक्तियों का समन्वय है, जो पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के समन्वय के संकेत और प्रतिरूप होता है'' ।[2] संसार के लिए ईश्वर की योजना में परिवार का विशेष स्थान है। एक ख्रीस्तीय परिवार में, जो मधुर साहचर्य होता है वह कलीसियाई समन्वय का पहला तीव्र यथार्थीकरण होता है।[3] परिवार ही सबसे उत्तम स्वाभाविक समाज है और इस तरह ''परिवार के अन्दर जो संबन्धों का जीवन है, समाज में स्वतंत्रता, सुरक्षा एवं भाईचारे की नींव का गठन करता है'' ।[4] फिर भी, समकालीन परिवार बहुत सारी चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसे सुविधापूर्वक तीन समूहों में बाँटा जा सकता हैः प्रथम, परिवार की संरचना एवं स्थिरता की चुनौतियाँ द्वितीय, प्रभावकारिता एवं परिवार के सदस्यों की भावुक परिपक्वता की चुनौतियाँ एवं तृतीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक चुनौतियाँ। हर एक परिवार को एवं संपूर्ण कलीसिया को आज के पारिवारिक जीवन को समृद्ध बनाने के व्यवहारिक मार्गों की खोज करनी है। परिवार के नवीनीकरण के व्यवहारिक कदम मुख्यतः तीन क्षेत्रों में उठाया जायें : पहला, परिवार के सुसमाचार के बखान करने के प्रभावशाली मार्गों की हमें खोज करनी है; दूसरा, परिवारों एवं युवा दंपतियों के साथ चलने के सफल मार्गों एवं शैलियों को पहचाना

है, एवं तीसरा परिवारों के खीस्तीय निर्माण की धारणा एवं प्रथा को हमें नवीनतम बनाने की ज़रूरत है।

[kM & I

1. lkfjokj dk l|lekpkj

1.1. lkfjokj d ifr b oj dh ;kstuk

2. ''पुरूष और स्त्री के रूप में मानव की रचना करते हुए, एवं, फिर उन्हें यह आशीर्वाद देते हुएः ''फलो और पृथ्वी पर फैल जाओ'' ईश्वर ने परिवार की स्थापना की । अपने आप को देते हुए एवं दूसरे को स्वीकार करते हुए, स्त्री और पुरूष ''एक शरीर बन गये'' और ईश्वर की कृपा से, वे संतानों को पैदा करने लगे। यहाँ दो बातें हमारे विशेष ध्यान के योग्य हैं : पहला, ईश्वर अपनी छाया और सादृश्य से दंपतियों पर छापा मारता है। संत पापा इस बिन्दु की इस तरह व्याख्या करते हैं: ''पुरूष अकेला ईश्वर का प्रतिरूप नहीं है न कि स्त्री अकेली ईश्वर का प्रतिरूप। पुरूष और स्त्री के बीच में जो फरक है, वह एक दूसरे के खिलाफ खड़े होने के लिए नहीं अथवा एक दूसरे पर अधिकार जताने के लिए नही, बल्कि वह साहचर्य और प्रजनन के लिए है, हमेशा ही ईश्वर की छाया और सादृश्य में''। परिवार में एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा एवं बुलाहट को ''पुरूष और स्त्री के विशिष्टता पुरूष की विशिष्टता से भिन्नता एवं व्यक्तिगत मौलिकता के संदर्भ में समझा जाना चाहिए''।[5] और यह भी, जैसे कलीसिया के सामाजिक सिद्धान्त के सार–संग्रह में हम पाते हैं : पुरूष और स्त्री समान प्रतिष्ठा के दो व्यक्तियों का विभेद करते हैं, जो मगर एक गतिहीन बराबरी को प्रतिबिम्बित नहीं करता है,

क्योंकि स्त्री की विशिष्टता पुरूष की विशिष्टता से भिन्न होती है, और बराबरी में यह भिन्नता समृद्ध है और सामाजिक जीवन के सामंजस्य के लिए अनिवार्य है। स्त्री पुरूष का पूरक होती है, जैसे पुरूष स्त्री का पूरक होता है। पुरूष एवं स्त्री आपस में एक दूसरे को पूर्ण करते हैं''।[6] वास्तव में, जैसे संत जॉन पॉल द्वितीय ने कहा, ''स्त्री पुरुष के लिए 'सहायक' होती है, जैसे पुरूष स्त्री के लिए 'सहायक' होता है।''

3. दूसरा, एक बनाने और प्रजनन करने की विवाह की पहलुओं की पूरक प्रकृति ईश्वर की योजना का हिस्सा है, जो मानव जाति की संरचना में प्रकट की गयी है। विवाह एक साथ शारीरिक एवं आध यात्मिक मिलन है। जहाँ तक विस्तार के तत्व, जीवन का स्रोत और जब वैवाहिक कार्यों बरकरार रखा जाता है, तो पुरूष एवं स्त्री का मिलन इस का पूरा अर्थ प्राप्त करता है। वैवाहिक कार्य की प्रतिष्ठा इस कार्य की चार आधारभूत पहलुओं पर आधारित रहता है:

i. वैवाहिक कार्य एक ही समय दंपतियों के बीच आपसी सहयोग और ईश्वर के साथ सहयोग होता है।

ii. वैवाहिक कार्य के विभिन्न साध्य हैं – सबसे प्रथम जीवन की ओर इस की स्पष्टता, यानी इसके प्रजनन का आयाम, जहाँ ईश्वर द्वारा निध ारित है इस की आन्तरिक संरचना बरकरार रखी जाती है; जिसे द्वितीय वत्तिकान सहासभा ने विवाह की गरिमा का ताज कहती है;

iii. वैवाहिक कार्य मूलभूत रूप से आपसी और पारस्परिक दान का फल है अथवा आत्मा, शरीर, कोमलता और प्रेम की आत्मीयता में एक बनना है; एवं

iv. वैवाहिक कार्य के सार यानी, लैंगिक संभोग एवं एक जवाबदार और आध्यात्मिक कार्य के रूप में इसे करने की तरीके से ही वैवाहिक कार्य की सुन्दरता और उवं पवित्रता पैदा होती है।

4- oSokfgd dk;Z ,d ifo= dk;Z gS: बाईबिल एवं कलीसिया की आधिकारिक शिक्षा के अनुसार वैवाहिक कार्य एक पवित्र कार्य है। यह दंपतियों के प्रेममय एवं अभेद्य बन्धन की अभिव्यक्ति है और यह वैवाहिक बन्धन को मज़बूत बनाता है। एक बन जाने की अभिलाषा दंपतियों के हृदय में ईश्वर द्वारा अंकित है। आपस में स्वयं को दान के रूप में देते हुए एक बनने का कार्य ईश्वरीय इच्छा की पूर्ति है एवं इस कार्य की सफलता, चाहे एक संकल्पना के रूप में हो या दंपतियों के बन्धन की मज़बूत आत्मीयता के रूप में, ईश्वर का वरदान है। उस तरह दंपतियों के बीच के वास्तविक, जवाबदार एवं प्यारा वैवाहिक कार्य न सिर्फ एक अभिव्यक्ति है, बल्कि ईश्वर की योजना में एक अनुभव और प्रेम की समृद्धि है और वह पवित्र कार्य बन जाता है। इसलिए वैवाहिक जीवन में पवित्रता का प्रयास करना किसी भी तरह लैंगिक कार्य के वर्जन को बढ़ावा नहीं देता है।

5- ,d djus okys ,oa iztuu ds vk;ke: ईश्वर, जो सृजन करता है, वह ख्याल भी करता है। इसलिए विवाह में प्रजनन कार्य को जवाबदार पितृत्व की माँगो के साथ वास्तविक संबन्ध में समझा जाना चाहिए। फिर भी, विवाहं एवं परिवार की ऐतिहासिक वास्तविकता पाप के कारण ईश्वरीय योजना से भटक गयी। मुक्ति विधान के इतिहास में आज्ञाएँ एवं रिआयत विवाह, परिवार एवं ईश्वर की समस्त प्रजा की असली आध्यात्म विद्या सम्बन्धी समग्रता की रक्षा के लिए दी गयी थी, मगर, विवाह की, उस के असली रूप में, स्पष्ट पुनः प्रतिष्ठा प्रभु ईसा मसीह ने की, जिसे के द्वारा सबको कृपा एवं सत्य प्राप्त हुए।

6- fookg dh vHkS|rk % विवाह के संस्कार में सफल हुए दंपतियों का बन्धन ख्रीस्त और कलीसिया के बीच की प्रसंविदा से उस का संपूर्ण अर्थ प्राप्त करता है। विवाह में एक साथ आनेवाले दंपतियों और परिवार के सारे सदस्यों को पवित्रातत्मा में एक करते हुए, प्रभु ईसा इस धरती पर हर परिवार को ईश्वर के प्रेम और जीवन के गवाह बनने को समर्थ बनाता है; उस तरह प्रभु ईसा पवित्र त्रित्व के सादृश्य में परिवार की पुनः प्रतिष्ठा करता है। देहधारी वचन के रहस्य में ही व्यक्ति की रहस्य प्रकट किये जाने के कारण, एक व्यक्ति को व्यक्तिगत जीवन का अर्थ, विवाह की रहस्यात्मक गहरायी एवं पारिवारिक जीवन की सुन्दरता समझने के लिए ईसा–केन्द्रित कुंजी की ज़रूरत होगी।[7] असली ईश्वरीय योजना का जिक्र करते हुए ईसा विवाह की अभेद्यता को पुनः पुष्ट करता है। दंपतियाँ, जो पूर्ण एवं आनन्दपूर्ण रूप से अपने ख्रीस्तीय विवाह को जीते हैं, विवाह की अभेद्यता एवं वैवाहिक विश्वस्तता को गवाही देते हैं, जो हर एक दंपति का अपने साझेदार के प्रति चिरस्थायी प्रेम के अतिरिक्त ईश्वर के प्रति उनकी साझा प्रतिबद्धता में उस का व्यवहारिक अभिव्यक्ति पाता है, उस ईश्वर के प्रति जिस ने उन्हें एक बनाया जो सब कुछ उन के सुर्पुद करता है, विशेषकर उनकी संतानों को भी।

7- fookg laiw.kZ thou dk ,sD; % विवाह का संस्कार दंपतियों को एक संपूर्ण जीवन के ऐक्य में न्यौता देता है (Consortium totius

vitae) जिसमें साझेदार की कुशलता और खुशी देनेवाला स्वयं को समर्पित करने का प्रेम, वैवाहिक नैतिकता के प्रति आदर, वैवाहिक मित्रता की स्थापना करने में दोनों पति–पत्नि की जवाबदारी, परिवार की भौतिक कुशलता का ध्यान ; नौकरी में स्थिरता, बजट सम्बंधी दीर्घदृष्टि एवं विवेकहीन वैवाहिक जीवन एवं सामंजस्य को खतरे में डालने वाले सभी विवेकहीन आवेशों, आवेगों या अन्तःप्रेरणा पर नियंत्रण आदि शामिल हैं।[8]

1.2. lfjokj ?kjyw dyhfl;k d: i e

8. परिवारिक जीवन की ओर अग्रसर करने वाली बुलाहट और उस का अनुगमन करने वाली कृपा ईश्वर द्वारा दी गयी है। विवाह के संस्कार द्वारा एक बनने वाले दंपति प्रभु ईसा और कलीसिया के बीच के ऐक्य और उपजाऊ प्रेम में ''सहभाजन करते और उस का प्रतीकत्व करते हैं', और ''इस वैवाहिक जीवन से परिवार का उदय होता है जिसमें मानव समाज के नये नागरिकों का जन्म होता है'' ।[9] परिवार की ओर की बुलाहट पवित्रता की ओर ईश्वरीय न्यौता है। परिवार एक घेरलू कलीसिया है , जिसमें माता–पिता न सिर्फ विश्वास का बखान करते, बल्कि हर एक सदस्य की बुलाहट पहचानते और उसे बढ़ावा देते हैं। जैसे संत जॉन पॉल द्वितीय ने कहा है, परिवार वास्तव में ''कलीसिया की राह'' है। परिवार का सुसमाचार इस का स्रोत का जिक्र त्रित्व के प्रेम और जीवन में करता, कलीसिया के स्वयं परावर्तन के साथ इस की निरतंरता एवं मानवता और प्रकृति के साथ इस की अमोघ एकजुटता, विशेषकर गरीब एवं दरकिनार लोगों के साथ। हालांकि परविार का

सुसमाचार विभिन्न तरीके से विभिन्न क्षेत्रीय कलीसियाई संदर्भो में जीया जाता है, सभी परिवारें अपनी प्रेरणा दैनिक पारिवारिक प्रार्थनाओं से पाते हैं, जिस में ईश्वरीय वचन के पवित्र वाचन का एक विशिष्ट स्थान होता है। पारिवारिक प्रार्थना से समृद्ध बनाये गये आध्यात्मिक जीवन परिवारों को अपनी क्षेत्रीय कलीसियाई बिरादरी के साथ अति पवित्र बलिदान मनाने की प्रेरणा देता है। उस तरह पारिवारिक आध्यात्मिकता परम प्रसादीय आध्यात्मिकता की ओर ले चलती है, जो वापस पहले की परवरिश करती है।

9. परिवार ही सबसे प्रथम स्थान है, जहाँ पवित्र माता कलीसिया की हर एक शिशु ''महानतम बुलाहट–प्रेम की बुलाहट का बोध प्राप्त करता है'' ।[10] विश्वास, प्रत्याशा और प्रेम का जीवन बिताने का प्रशिक्षण एवं जारी रहनेवाली मौखिक शिक्षा कलीसिया के हर नवजात सदस्य को माता–पिता द्वारा दिया जाता है। जैसे हर क्षेत्रीय कलीसियाई बिरादरी परिवार में जीवित रहती और विकसित होती है, हर एक परिवार इस का ख्रीस्तीय उद्भव एवं सामूहिक पहचान कलीसिया में पाता है। कलीसियाई बिरादरी, चाहे पैरिश के स्तर पर हो या धर्माप्रान्तीय के साथ साथ सार्वत्रिक स्तर पर हो, न सिर्फ एक केन्द्र होती है, जहाँ परिवारें आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं के लिए जाते हैं, बल्कि यह वह स्थान है, जहाँ संस्कार–सम्मत कृपा चरागाही कार्यों एवं सामाजिक सहभाजन के द्वारा परिवारों में जन्म लेते और समृद्ध किये जाते हैं। भारत और विदेश के संत थोमस कैथलिक परिवारें विभिन्न घरेलु उपासना पद्धति के समान अनुष्ठानों में सीरो–मलबार कलीसियाई पंरपरा के अद्वितीय धार्मिक क्रियाओं एवं सांस्दृतिक विशिष्टताओं को समाविष्ट करती हैं।

जैसे कलीसिया अपने स्वभाव से ही प्रेरितिक है, वैसे परिवारों का भी अपना सुसमाचार प्रचार और प्रेरितिक कार्य है।[11]

1.3. ifjokj lekt dh vk/kkjHkr dkf kdk d : i e%

10. जैसे द्वितीय वत्तिकान महा सभा सिखाती है : परिवार ''समाज के आधार का गठन करता है''।[12] युवा और वृद्ध, पुरूष एवं स्त्री, सब आनन्दपूर्वक एक साथ परिवार में जीते और विकास करते हैं, उस अर्थ में, ''यह संपन्नतर मानवता के लिए एक विद्यालय है''।[13] परिवार में व्यक्ति अपने को एक दूसरे से संबन्ध रखने वाले पाते हैं और उस तरह संबन्ध को एक उपहार के रूप में मानना सीखते हैं। परिवार में व्यक्ति को यह एहसास होता है कि उसे स्वीकृत किया जाता है और ख्याल रखा जाता है, विशेषकर जब कोई अक्षमता, बीमारी या बुढ़ापे का शिकार बन जाता है। एक जगह के लोगों की सांस्कृतिक कुलीनता उस क्षेत्र के परिवारों के गुणों से निर्धारित होती है, जो हर एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा को सुनिश्चित करने के ठोस तरीके से अभिव्यक्त किया जाता है। इसलिए सभी सामाजिक –राजनीतिक निकायों की जवाबदारी है कि वे विवाह के वास्तविक स्वभाव एवं परिवार के आध्यात्मिक कार्यों के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यों को पहचाने, उस की रक्षा करें और उन्हें बढ़ावा दें।[14] सामाजिक कल्याण प्रणालियों की स्थापना करते हुए परिवार के गुणों को बढ़ाने, सबकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने, सामाजिक, आर्थिक एवं लिंग असमानता को कम करने, युवा लोगों के लिए नौकरी के मौकाएँ बनाने और धार्मिक स्वतंत्रता का रख–रखाव करने की दिशा में पर्याप्त नीतियाँ बनाने वाला एक राज्य वास्तव में स्वयं के उज्जवल भविष्य में ही निवेश कर रहा है।[15]

[kM II

2. Lkedkyhu ifjokj dh pukfr;k

2.1. ifjokj dh lajpuk vkj fLFkjrk%

11. विवाह एवं परिवार में ईश्वर की सृजनात्मक योजना के प्रेम और संरक्षण की झलक पाने के कारण सीरो–मलबार कलीसिया के अधिकांश श्रद्धालू विवाह एवं परिवार पर कैथालिक कलीसिया की शिक्षा का समर्थन एवं प्रोत्साहन करते हैं। फिर भी कुछ पुरूष और स्त्रीयाँ एक बेकार प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हुए नज़र आते हैं, और जो संस्कार रहित वैवाहिक क्रियाओं, विवाह के व्यवहारिक भंग, परिवार के आकार में सिकुडन एवं परिवार विघटन की ओर ले जाती है। सीरो–मलबार परिवार आयोग द्वारा हाल में किया गया सर्वेक्षण हमारी आँखें खोलने लायक है। इस सर्वेक्षण के मुताबिक ख्रीस्तीय परिवार की संरचना और स्थिरता को ही चुनौती देने वाले घटक; जैसे नागरिक विवाह–विच्छेद, सहवास, बाँझपन, एक दंपति की मृत्यु होने पर एक ही दंपति द्वारा बच्चों की देखरेख, विवाह–विच्छेद आदि बढ़ते ही जा रहे हैं। सीरो–मलबार बिरादरियों में परिवार के आकार में होनेवाला क्षय चिन्ताजनक है; पहले से ही अल्पसंख्यक रहे इस बिरादरी का आकार और भी सिकुडता जा रहा है। ऐसा लग राह है कि अधिक से अधिक दंपतियाँ ईश्वर के उपहार के रूप में दिये गये बच्चों को स्वीकार करने को और उन की परवरिश करने को इच्छुक नहीं है। बच्चों की संख्या सीमित करने की नयी प्रवृत्ति के कारण कई सीरो–मलबार परिवारें नष्ट हो जायेंगे।

12. हमारी कलीसिया के युवा पुरूष और स्त्रीयाँ बहु–धर्म के अतिरिक्त धर्मनिरपेक्ष वैचारिक प्रतिस्पर्धाओं के एक सार्वभौम सदंर्भ में जीवन बिताते हैं। कभी–कभी कोई हैरान भी हो सकता है कि हमारे जमाने में परिवार और विवाह की साधारण अवस्था नई पीढ़ी के अनुसार रूपान्तरित होती जा रही है। व्यवसायीकृत सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रबल अपवित्र प्रवृत्तियों के खिलाफ मानक व्यवहार, संस्कार सम्पन्न व्यक्तित्व, सुव्यवस्थित विवाह, आनन्दमय पारिवारिक जीवन, विश्वास भरा जीवन, आदि सीरो–मलबार कलीसिया की श्रेष्ठ धारणाओं की रक्षा करनी होगी। फिर भी कलीसिया की पहली चुनौती इन सबको बढा–चढ़ाके दिखाने और बाद में अपने युवाओं और परिवारों की खामियों के खिलाफ लड़ने की नहीं है, बल्कि हमारी कलीसिया के बहुत नमूनादायक परिवारों एवं अनुकरण करने लायक पारिवारिक जीवन बिताने वाले बहुत से युवाओं के समर्पण को प्रकट करने की है। कलीसिया को, जो पहले फसल से ज़्यादा जगली घास पर ध्यान दे रही थी, अबसे ''चारों तरफ दृष्टि लगाना'' होगी और यह ''देखना होगी कि खेतें किस तरह कटनी के लिए तैयार हो गये हैं''।

2-2- iHkkodkfjrk ,oa Hkkod ifjiDork

13. अमोघ प्रेम और ममता का अनुभव एक वास्तविक ख्रीस्तीय परिवार की कसौटी है। अधिकांश सीरोमलबार परिवारें ईश्वर के करूणामय प्रेम की गवाही देते हैं, जिसे वे दंपति–माता– पिता– पुत्र–पुत्री–दादा–दादी के संबन्धों में आनन्द पूर्वक बाँटते हैं। परिवार के कमज़ोर एवं बीमार निशक्त लोगों को ज़्यादा प्यार और विशेष ध्यान दिया जाता है। मगर,

विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक सांस्कृतिक कारणों से समकालीन परिवारों में प्रभावकारिता की कमी नज़र आ रही है। प्रभावकारिता में बढ़ने के बजाय कुछ दंपतियाँ धीमे–धीमे आपसी प्रेम और ख्याल की कमी महसूस करते हैं; ऐसे परिवारें हैं, जहाँ बच्चों के साथ बिताने के लिए माता–पिता समय नहीं दे पाते; ऐसे बच्चें हैं, जो माता–पिता के प्रेम और ऊष्मा के भूखे रहते हैं; ऐसे माता–पिता हैं, जो बच्चों की शादी के बाद अपने बच्चों को पूरी तरह खो देते हैं, और ऐसे दादा–दादी हैं, जिनकी बुढ़ापा अपने बच्चों और पौता–पौतियों की ओर से प्रेम और ख्याल की कमी के घने बादलों से भरी रहती है। हमारी कलीसिया में नगण्य न समझने लायक एकल–पिता, एकल–माता एवं एकल बच्चों वाले परिवारें भी हैं। ऐसी कूछ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियाँ भी हैं, जहाँ मानसिक रूप से तंग, शारीरिक रूप से निशक्त, अंतिम सिरे से बीमार एवं कई प्रकार से परिवार में विशेष ख्याल से वंचित लोग प्रेम और ख्याल से वंचित रह जाते हैं। ध्यान रखनेलायक बात है, कि परिवार का हर एक सदस्य, विशेषकर कम क्षमता प्राप्त लोग, एक दूसरे के लिए एक उपहार है। हमारी कलीसिया में ऐसे बहुत से अनुकरणीय परिवारें हैं, जो उपेक्षित, बीमार एवं बुजुर्ग लोगों को गोद लेते और उन का संरक्षण करते हैं। उल्टे कुछ ऐसी हालात भी हैं, जिसमें कुछ परिवार आर्थिक एवं मानवीय संसाधनों की कमी के कारण अपने घर के दुर्बल लोगों का ख्याल नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थितियों में स्थानीय पैरिश चर्च अथवा लोक धर्मी या समर्पित लोगों द्वारा चलायी गयी परोपकारिक संस्थाएँ उन की सेवा में आगे आती हैं।

14. कोई भी अपने स्वयं का परिवार चुनता नहीं; बल्कि हर एक व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है। परिवार में एक ऊष्म एवं भावात्मक जीवन बिताने की नींव और लक्ष्य यह है कि परिवार में हर एक सदस्य को प्रेमपूर्वक और आभार के साथ स्वीकार किया जायें और परिवार को हमेशा के लिए एक ही बार ईश्वर द्वारा दिया गया उपहार के रूप में देखा जायें। जिस तरह हमारे विश्वास का भावपूर्ण पल्लवन ईश्वर के साथ हमारे गहरे आध्यात्मिक सम्बन्ध का कारण बनता है, ठीक उसी तरह परिवार के सदस्यों के भावपूर्ण जीवन की गुणवत्ता परिवार की प्रभावकारिकता की दृढ़ता को तय करती है। इसलिए उचित भावात्मक परिपाक ही परिवार में प्रभावकारिता के निर्माण की कुंजी है। प्रभावकारिता एवं भावुक परिपक्वता के बारे में कैथालिक धारणा प्रेषित करने के लिए परिवार की विशिष्ट आध्यात्मिकता और परिवार के मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण है। अपनी संतानों को पारिवारिक प्रभावकारिकता एवं व्यक्तिगत परिपक्वता की ओर अग्रसर होने में बाधा डालने वाली सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की कलीसिया उपेक्षा नहीं कर सकती है। चौबीस घण्डे सिनेमा, धारावाहिक एवं अन्य कार्यक्रमों को दिखाने वाले टी.वी. चैनल का विवेकहीन उपयोग, एवं इन्टर नेट एवं मोबाईल फोन आदि का दुरूपयोग, न सिर्फ बहुत सारे युवाओं को अपनी प्रभावकारिता और लैंगिक जीवन के अपरिपक्व अवस्था में ठहर जाने को बाध्य करता है, बल्कि परिवार के सदस्यों के एक साथ आने और बातचीत करने का समय भी नष्ट कर देता है।

2.3. lkekftd] vkfFkd ,o ikfjfLFkfrd pukfr;k :

15. समकालीन समाज की कई सारी प्रवृत्तियाँ होती हैं। चरागाही अनुभव हमें बताता है कि हर एक पैरिश, चाहे ग्रामीण क्षेत्र में हो या फिर शहरी क्षेत्र में, सभी प्रकार समजातीय होने से बहुत ही दूर हैं। न सिर्फ पैरिशें, बल्कि परिवारें भी कम से कम समजातीय होते जा रहे हैं, एक ही परिवार के सदस्य विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को प्रकट करते हैं। हमारे जमाने के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हमारे परिवारों पर दोनों सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

16. **dN ey pukfr;k:** शिक्षा एवं पेशा के अवसरों में बढ़ती समानता, नारी एवं बच्चों के अधिकार की पहचान, सभी स्तरों पर फैसला करने की साझेदारी की प्रशंसा आदि सकारात्मक चुनौतियों के दायरे में आते हैं। समकालीन समय के ऐसे वास्तविक सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों से परिवार का पुनः गढन होने देना है। दूसरी ओर हमें नकारात्मक चुनौतियों पर भी ध्यान देना होगा। व्यक्तिवाद एवं उपभोक्तावाद ऐसी दो मूल चुनौतियाँ हैं, जो अलग–अलग रूप में दिखाई देती हैं। व्यक्तिवाद इस कल्पित कथा की अभिव्यक्ति है कि व्यक्ति को पूरी तरह आत्मनिर्भर रहना चाहिए और यह इस आधुनिक विचारधारा से प्रज्वलित की जाती है कि संपूर्ण व्यक्तिगत अधिकार एवं आर्थिक स्वतंत्रता होना ज़रूरी है। परिवार के सदस्यों के बीच संपर्क की कमी, दंपतियों के बीच आत्मीयता की कमी़, गुप्तता की अतिरंजित धारणा, जो परिवार के अन्य सदस्यों के दखल न देने पर ज़ोर देती है, सामान्य रूप से मानवीय लैंगिकता को परिवार से पृथक करता, एवं विशेषकर प्रजनन से पृथक

करता, जो व्यक्ति की लैंगिकता के दुरूपयोग, व्यक्ति के आर्थिक एवं मानवीय संसाधनों के दुरूपयोग आदि की ओर ले चलता है; ये सब परिवार में परेशानी पैदा करने वाले व्यक्तिवाद के रूप हैं। हर एक मनुष्य एक उपभोक्ता है, जो ईश्वर की उदारता में दी गयी सेवाओं और साधनों को आभार भरे हृदय से अपना सकता और उन का उपयोग भी कर सकता है। मगर उपभोक्तावाद, जो जान बूझकर साधनों को बटोर लेने का प्रोस्ताहन देता है, प्रतिबंधित किया जाना है। उपभोक्तावाद का मतलब है धन का लापरवाह उपयोग और यह दूर–फेंकने की संस्कृति की ओर ले चलता है। दूसरे परिवारों को, विशेषकर गरीबों को राजस्व, एवं सुचारू रूप से चल रही पारिस्थितिक प्रणाली आदि को नुकसान पहुँचाने वाले उपभोक्ता व्यवहारों को पहचानना और उन्हें सही करना हर एक परिवार के सामने एक चुनौती है।

17. **fo k'k pukfr ;k:** ऐसी बहुसंख्यक सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ हैं जिनका आज परिवार को मुकाबला करना पड़ते हैं:

1. विभिन्न कारणों से धर्मविरूद्ध एवं नागरिक विवाहों में वृद्धि हो रही हैं। ऐसे ईसाई लोग हैं, जो संस्कार की प्रभावशीलता से ज़्यादा व्यवहारिक सुविधा को प्राथमिकता देते हैं। संदर्भगत कारणों, सकारात्मक प्रभाव, अंतर्निहित दांव, धार्मिक पहचान के सवाल, आदि चारों ओर होने वाले धर्मविरूद्ध एवं नागरिक विवाह, आदि का ईमानदारी से अध्ययन एवं मूल्यांकन होना चाहिए ।

2. अधिक से अधिक परिवारें विभिन्न कारणों से अणुकुटुम्ब बनते जा रहे हैं। अनुभव ने हमें सिखाया है कि विवाह की स्थिरता, बच्चों का

मानवीय निर्माण, परिवार की आर्थिक मज़बूती आदि में परिवार के आकार का बड़ा प्रभाव है।

3. विवाह में देरी करने वाले और कुछ अन्य मामले में विवाह को टालने वाले युवा–युवतियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। पारिवारिक जीवन के लिए विशेष बुलाहट के बारे में जागरूकता की कमी, विश्वास का अभाव, माता–पिता से मिले नकारात्मक नमूना–जैसे आपसी प्रेम का अभाव, घरेलू हिंसा आपसी धोखा, सबसे उचित सम्बन्ध की सूक्ष्म तलाश एवं लिंग भूमिका की शंका, आदि इस के कारण हो सकते हैं।

4. कुछ बुरी आदतें भी पारिवारिक जीवन को अलग–अलग मात्रा में दुश्वार और नाजुक बनाती हैं, और यह इस बात पर निर्भर रहता है कि हर बुरी आदत पारिवारिक जीवन में क्या–क्या नष्ट करती है।

किसी भी मामलें में बुरी आदतों को मनौवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक इलाज और साथ चलने से जीता जा सकता है। हमारे शीघ्र ध्यान देने लायक बुरी आदतें हैं: धूम्रपान की लत, मदिरा, नशीले पदार्थ, जुआ, पोनोग्राफी, सामाजिक नेटवर्क, टी.वी. के धारावाहिक आदि।

18. कई परिवारें आमानवीय गरीबी के शिकार होते हैं, जिस के कई हेतुक घटक हैं। ऐसे परिवारें हैं, जो आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, आध्यात्मिकता के अभाव की परिस्थिति में रहनेवाले परिवार हैं, और ऐसे भी परिवार हैं, जो बौद्धिक गरीबी के शिकार हैं। बहुमुख गरीबी की स्थितियों को जड़ से उखाड़ने की कोशिशें एवं गरीबों के प्रति अमोघ सहानुभूति आदि, ख्रीस्तीय परिवार के स्वाभाविक गुण होना चाहिए। जैसे संत पापा फ्रान्सीस ने स्पष्ट किया है : हमारे जमाने में गरीबों का

रूदन एवं धरती का रूदन दोनों आपस में बँधे हुए हैं। संत पापा कहते हैं : ''परिवर्तन की शीघ्र गति एवं अवनति के कारण हम ऐसे संकेत देख सकते हैं, जो व्यवधान की ओर पहुँच रहे हैं, और ये सब बड़ी मात्रा में प्राकृतिक विपदाओं के अतिरिक्त सामाजिक एवं आर्थिक संकटों में साफ–साफ दिखते हैं''।[16]

[kM III

3-orZeku dk ikfjokfjd thou dh x.koRrk c<kus dk 0;ogkfjd ekxZ

3-1-ifjokj dk lqlekpkj dk c[kku

19. जैसे कैथलिक चर्च की धर्मशिक्षा में (Catichism of the Catholic Church) प्रस्तुत किया गया है, मूल भूत स्वभाव एवं ख्रीस्तीय विशिष्टता का जिक्र करते हुए, प्रवचनों, धर्मशिक्षाओं एवं अन्य औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यम से कलीसिया परिवार के धर्मशास्त्र की शिक्षा प्रदान करें। कलीसिया को यह बखान करना होगा कि ''पुरूष और स्त्री की रचना करने से'', ईश्वर ने ही ''परिवार की स्थापना की और उसे अपनी मूलभूत संविधान से नवाजा है'' और कि ''इस के सदस्य, समान प्रतिष्ठा रखनेवाले व्यक्ति हैं''। एक परिवार तब एक आदर्श ख्रीस्तीय परिवार बनता है, जब इस में ''कलीसियाई सहभागिता की विशिष्ट प्रकाशना एवं सफलता निहित होती हैं।'' हर एक परिवार को याद दिलाना होगा, कि ''जब वह बच्चों के प्रजनन एवं शिक्षा में सहयोग देता है, तो वह पिता के सृजन कार्य को प्रतिबिम्बित कर रहा है'', और कि ''वह ख्रीस्त की याचना और बलिदान में भाग लेने के लिए बुलाया गया है''।[17]

20. **thou leFkZd euksHkko ,oa dk;Z%** पुरोहित, दंपतियों को यह उपदेश दें कि वे ''संख्या में बढ़ते जाये; कभी कम न हो''।[32] (यिरमियाह 29:6)। ऐसे एक सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में, जहाँ गर्भधारण को खत्म करने के नियमों में छूट दिया गया है, कलीसिया को बिना कोई शंका से और भी अधिक दृढ़ता से गर्भधारण के पहले पहल से लेकर स्वाभाविक मृत्यु तक जीवन के अलंघ्य मूल्य का बखान करना है।

21. **ikfjokfjd izkFkZuk%** दैनिक पारिवारिक प्रार्थना एवं ईश्वरीय वचन का वाचन, आदि को प्रोत्साहित करना है। फिर भी, शहरी एवं प्रवासी परिवारों के विभिन्न वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए पुरोहितगण हर एक संदर्भ में योग्य एक आध्यात्मिकता का विकास करने में श्रद्धालुओं की मदद करें। अन्तर–धार्मिक परिवारों एवं तलाक किये गये एवं पुनः शादी किये लोगों और उन के बच्चों की आध्यात्मिक सेवा हमारे शीघ्र ध्यान देने लायक क्षेत्र है।

22- **cPpksa dh ftEesnkfj;k¡%** ख्रीस्तीय परिवार में माता–पिता और बच्चों की जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षा देना कलीसिया का फर्ज है। अपने माता–पिता के प्रति बच्चों का आदर ईश्वरीय आज्ञा की माँग है। माता–पिता के प्रति बच्चों का आदर , ''उन लोगों के प्रति कृतज्ञता की भावना से व्युसन्न होता है, जिन्होंने अपने जीवन रूपी उपहार द्वारा, उन के प्रेम और कर्म द्वारा, अपने बच्चों को इस संसार में पैदा किया है और आकार, प्रज्ञा और कृपा में बढ़ने को उन्हें समर्थ बनाया है''।[18] विनयशीलता

एवं आज्ञाकारिता माता–पिता के प्रति बच्चों के आदर के संकेत हैं। सयाने बच्चों को चाहिए कि ''वे अपने माता–पिता की बुढ़ापे में और रोगावस्था में, अकेलापन में और परेशानियों के समय उन्हें भौतिक और नैतिक सहारा देते हुए उन के प्रति अपने आदर की अभिव्यक्ति करें ''।[19] परिवार में समन्वय और प्रभावकारिता को बढ़ावा देने में माता–पिता और दादा–दादियों के प्रति आदर और आभार की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

23- ekrk&firkvk dh tokcnkfj;k % खीस्तीय माता–पिताओं की मुख्य जवाबदरियों के बारे में समय–समय पर कलीसिया दिशा–निर्देश देती आ रही है और हमारे ज़माने में, जहाँ माता–पिता की जवाबदारी निभाने में बड़ी चुनोतियों का सामना करना पड़ रही है, इन निर्देशों को आगे उभारने की ज़रूरत है। खीस्तीय माता–पिताओं की सबसे महत्वपूर्ण जवाबदारियाँ हैं :

i. ईश्वर की आज्ञा पूरी करने के लिए अपने बच्चों को शिक्षा देना।

ii. बच्चों की शारीरिक और आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरी करना।

iii. ऐसे एक परिवार का निर्माण करना, जहाँ का नियम कोमलता, क्षमा, आदर, विश्वस्तता और निस्वार्थ सेवा हो,

iv. ऐसे स्कूलों का चयन करें, जहाँ माता–पिताओं को खीस्तीय शिक्षकों के रूप में अपने कार्य में सबसे उत्तम मदद मिले।

v. बच्चों को विवक और स्वतंत्रता के उचित प्रयोग की शिक्षा देना।

vi. बच्चों को भौतिक और सहज वृत्ति के आयामों को आन्तरिक और आध्यात्मिक आयामों के अधीन करना सिखाना।

vii. अपने बच्चों की सुसमाचार के अनुरूप जीवन बिताना सिखाना और उन्हें कलीसिया के जीवन से जोड़ना।

viii. बच्चों को क्षेत्रीय समाज के अतिरिक्त विशाल समाज में सामूहिक जवाबदारियों की ओर अग्रसर करना।

ix. बच्चों को सद्गुणों की शिक्षा देना, जो आत्म–त्याग, ठोस फैसला एवं स्वंय पर नियंत्रण के निरन्तर अभ्यास की माँग करता है और

x. अपनी पेशा और जीवन अवस्था के प्रति बच्चों की वास्तविक पंसद का, विशेषकर समर्पित अथवा पुरोहिताई जीवन के लिए उनकी बुलाहट का, सम्मान करें।[20] खीस्तीय माता–पिता लिस्यु की संत तेरेसा के माता–पिता संत लूयीज़ मार्टिन (1823–1894) संत मारी जेली ग्वंरिन मार्टिन (1831–1877) से सीख लें, जो खीस्तीय माता–पिता की जिम्मेदारियों और दांपत्य एवं पारिवारिक आध्यात्मिकता के असाधारण गवाह बनकर उभर गये हैं। इसके अतिरिक्त संत कुरियकोस एलियस चावरा द्वारा परिवारों को दिये गये ज्ञानपूर्ण उपदेशों का अध्ययन खीस्तीय परिवारों द्वारा किया जायें। खीस्तीय पत्रिकाओं द्वारा नमूनादायक परिवारों का सम्मान करना और उन्हें दूसरों तक पहुँचाना खीस्तीय परिवार के सुसमाचार के बखान करने का एक अप्रत्यक्ष, मगर असरदार तरीका है।

24- ifjokj dh dyhfl ;kbZ cqykgV % विवाह और परिवार के ज़रिए ही एक मानव व्यक्ति का मानव परिवार में और ईश्वर के परिवार यानी

कलीसिया में प्रवेश कराया जाता है। प्रेम को सुरक्षित रखना, प्रकट करना और उस का संचार करना ही परिवार का सार और भूमिका है। संत जॉन पॉल द्वितीय ने परिवार की अपनी भूमिका निभाने के चार मार्गों का जो जिक्र किया है, वह है : व्यक्तियों की एक बिरादरी का निर्माण करना, जीवन की सेवा करना, समाज के विकास में भाग लेना एवं कलीसिया के जीवन एवं मिशन में सहभागी होना।

3.2 ifjokj ,o ;ok nifr;k d lkFk pyuk

25. परिवार के सुसमाचार का बखान कर ख्रीस्तीय विवाह को बढ़ावा देने के साथ–साथ परिवार के निर्माण की शुरूआत करनेवाले युवा दंपतियों और घायल परिवारों के साथ चलने के चरागाही कार्य को भी प्रोत्साहित करना भी कलीसिया का दायित्व है। समय–समय पर परिवारों से मुलाकात करना और परिवारों की आशिष करना पल्लि पुरोहित के आध्यात्मिक सेवा कार्य के ऐसे दो प्रभावशाली पहलू हैं, जो साथ चलने के चरागाही कार्य के सफल तरीके के रूप में जारी रहते हैं। इस परम्परागत दृष्टिकोण के अतिरिक्त कई धर्माप्रान्तों में धर्मबहनों ने पारिवारिक कांऊसिलिंग एवं पारिवारिक मिशन की शुरूआत की है। घायल परिवारों की समस्याएँ एवं युवा दंपतियों की विविध ज़रूरतें होती हैं, इसलिए व्यक्तिगत मामलों पर ध्यान देने के पारिवारिक कांऊसिलिंग का दृष्टिकोण हमारे जमाने में परिवारों के साथ चलने का एक उचित तरीका है। यह दंपतियों को स्वयं को और दूसरे को स्वीकार करने में मदद देता है। पारिवारिक कांऊसिलिंग न सिर्फ दंपतियों को अपने रागात्मिक गांठों को खोलने और एक बहतर स्तर की संतुष्टि एवं भावुक

बन्धन पाने की मदद देता है, बल्कि, कलीसियाई अनुशासन एवं आध्यात्मिक लैंगिकता, बाँझपन, अगर हो तो, एवं ऐसे व्यक्ति और स्थानों की ओर, जहाँ से जवाब पाने की उनकी उम्मीद है, मुडने की भी मदद देता है। सिफारिश किया जाता है कि इस प्रकार का कम से कम एक पारिवारिक कांऊसिलिंग केन्द्र हमारे धर्मप्रान्तों के हर एक फोरैन में उपलब्ध हो। कोई–कोई स्थानों में, यह देखा जाता है, कि पारिवारिक रिवाजों का नियंत्रण पैरिश स्वयं करता और उन रिवाजों को मनाता भी है, जिससे परिवारें अपने परम्परागत पारिवारिक समारोहों से वंचित किये जाते हैं (उदाहरण के लिए, कुछ पैरिशों में पास्का रोटी काटने का रिवाज पैरिश केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में किया जाता है)। घरेलु कलीसियाओं को पैरिश की कलीसियाओं में विलीन नहीं किया जायें। पैरिश स्तर के समारोह में परिवारों को अपनी पहचान और क्रियाशील विशिष्टता को नहीं खोना है। पैरिश स्तर पर कलीसियाई पहचान और एवं हर एक परिवार की विशिष्टता में परिवार की पहचान के बीच समुचित संतुलन हो।

3.3. ifjokj ,o [khLrh; fuekk.k

26. धर्मप्रान्तों को विवाह तैयारी के क्रम कर संशोधन करने का समय निकल चुका है। ऐसे करते समय विवाह की प्रथाओं एवं पारिवारिक जीवन के सार्वभौम एवं क्षेत्रीय मसलों एवं प्रवृत्तियों का भी ध्यान रखा जायें। यह सिफारिश किया जाता है कि पैरिश से कम–से–कम एक प्रायोजक दंपति अथवा अगर संभव हो, तो विवाहित दंपतियों की दो या तीन मंडली एक पुरोहित एवं एक धर्मबहन के साथ हर नये दंपति को

तैयार करने में और उन के निरन्तर प्रशिक्षण में शरीक हो जायें। जिस तरह बपतिस्मा संस्कार में किया जाता है, विवाह–तैयारी में, विवाह के संस्कार के बलिदान में एवं विवाह जीवन में बंधे हुए नये दंपतियों के विवाह–जीवन के शुरूआती कुछ वर्षो में प्रायोजक दंपतियों का कुछ विशिष्ट स्थान हो। जहाँ–कहाँ संभव हो, प्रशिक्षित दंपतियों की मंडली दंपतियों को निरन्तर प्रशिक्षण दें, दो या तीन या उससे भी अधिक वर्षों से शादी में बंधे हुए दंपतियों को अपने वैवाहिक जीवन के अनुभव दूसरों के साथ बाँटने का निमंत्रण दें, और अगर कोई परेशानियाँ हों, तो उनको हल करने में दंपतियों की मदद करें। कई स्थानों में परिवारों की मदद करने में, विशेषकर परिवार में और परिवारों के बीच हो रही टकरावों को हल करने में लोकधर्मी जन सराहनीय पहल करते हैं। पुरोहित गण इन नई प्रेरिताई कार्यों को प्रोत्साहन दें, उन का मार्गदर्शन करें और उन के साथ हाथ मिलायें।

27. कलीसिया को चाहिए की वह पैरिश में चरागाही कार्य में लगे हुए पुरोहितों के अतिरिक्त समर्पित भाई–बहनों के चरागाही कार्य में पारिवारिक प्रेरिताई कार्यों को प्राथमिकता दे। परिवारों के लिए अपने भावि सेवा कार्य में निपुण और सफल बनने के लिए यह सिफारिश किया जाता है कि अपने सेमिनारियों एवं समर्पितों के प्रशिक्षण केन्द्रों की पाठ्यचर्या में, ''कैथलिक पारिवारिक प्रेरिताई कार्यों के दृष्टिकोण जैसे विषयों को भी शामिल किया जायें। और भी महत्वपूर्ण रूप से, वर्तमान में सेवा कार्य में लगे हुए पुरोहितों एवं समर्पितों को पारिवारिक प्रेरिताई कार्य में अल्पकालिक अग्रवर्ती शिक्षा दिया जायें, ताकि, पारिवारिक प्रेरिताई कार्य में वे अपने ज्ञान और कुशलता को सामयिक बनायें, और पारिवारिक मामलों में

सार्वत्रिक कलीसिया के नवीनीकृत उत्साह और समर्पण को बाँट लें। संस्थाएँ, जैसे CANA विवाह के बारे में अध्ययन के लिए चन्गानाशेरी की पोन्टिफिकल जॉन पॉल द्वितीय संस्था एवं त्रिशूर की FATRI इस मामले में बहुत ही सहायक होंगी। इतने कहने के बाद कोई भी इस बात को न भुलाये कि परिवार के नवीनीकरण और पवित्रता के कार्य में हर एक ईसाई की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। पारिवारिक प्रेरिताई कार्य को निभाने के लिए परिपक्व एवं उत्साही दंपतियों को चुनकर उन्हें प्रशिक्षण दे सकते हैं। ध्यान देने लायक बात है कि प्रेरिताई दंपतियों के लिए हमारी कलीसिया के कुछ धर्मप्रान्तों ने पहले से ही सफल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित किया है।

28. उचित लैंगिक शिक्षा समय की माँग है । इन्टरनेट एवं डिजिटल युग में आज के बच्चे आधे से भी ज़्यादा लैंगिक जानकारी इन्टरनेट से प्राप्त करते हैं, जो अक्सर अश्लील सामग्रियों द्वारा उन्हें प्राप्त होता है। पोनोग्राफी एक नशीली जाली है और मानव लैंगिकता रूपी मज़बूत एवं पवित्र ईश्वरीय उपहार का दुरूपयोग है। उचित लैंगिक शिक्षा देने के महत्वपूर्ण कार्य से अगर माता–पिता शर्मिंदगी के कारण दूर हटते हैं, तो बच्चे इसे और कहीं से प्राप्त करेंगे।

29. सामान्य सरकारी मदद प्राप्त करने में कलीसिया परिवारों की प्रभावशाली रूप से सहायता कर सकती है। हमारे अंधिकांश परिवारें इस बात से अनजान हैं कि ऐसे कई राष्ट्रीय, राज्यस्तरीय एवं पंचायत स्तरीय सरकारी सहायता कार्यक्रम हैं, जिस की वे माँग कर सकते हैं। हर एक धर्मप्रान्त के सामाजिक सेवा केन्द्र इस मसले पर ध्यान दें और

उस प्रकार आर्थिक रूप से स्थिर एवं सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित होने में परिवारों की मदद करें। कलीसिया को चाहिए कि परिवारों को प्रशिक्षण दे, ताकि वे अपने सदस्यों को समग्र पारिस्थितिक शिक्षा प्रदान करें। संत पापा फ्रान्सीस के शब्दों का हम पुनःस्मरण करें, ''सबसे पहले हम परिवार में सीखते हैं कि किस तरह जीवन के प्रति प्रेम और आदर दिखलाना चाहिए; साधनों का उचित उपयोग, क्रमबद्धता और स्वच्छता, क्षेत्रीय परिस्थिति प्रणाली का सम्मान एवं सारी सृष्टि की परवाह, ये सब हमें सिखाया जाता है। परिवार में हम समग्र शिक्षा पाते हैं, जो सही ढंग से व्यक्तिगत परिपक्वता में अग्रसर होने को हमें समर्थ बनाती है। परिवार में माँग किये बिना पूछने को हम सीख जाते हैं, हमें दिये गये सब कुछ के प्रति ईमानदार आभार की अभिव्यक्ति के रूप में धन्यवाद कहने, हमारे उग्रता और लालच पर नियंत्रण रखने एवं क्षमा माँगने के लिए भी जब हम ने किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाया है। हार्दिक भद्रता की इन सादी अदाएँ सहभाजन के जीवन एवं अपनी परिस्थितियों के प्रति आदर उत्पन्न करने में मददगार होती हैं''।[21]

fu'd'k

30. जैसे संत चावरा कुरियाकोस एलियस ने कहा हैः ''परिवार पृथ्वी पर स्वर्ग की छाया है।'' आपसी प्रेम और परवाह का साक्ष्य देने वाले अनेक ख्रीस्तीय परिवारों के प्रति हम ईश्वर का धन्यवाद एवं स्तुति करते हैं। एक वास्तविक ख्रीस्तीय परिवार का नमूना नाज़रेत का पवित्र परिवार है एवं एक वास्तविक ख्रीस्तीय विवाह का मिसाल पवित्र त्रित्व है, जिस में कलीसिया के प्रति ख्रीस्त का प्रेम झलकता है। उन सबके बावजूद, विवाह एवं पारिवारिक जीवन के श्रेष्ठ बुलावा के साथ ईश्वर अपनी संतानों को जिन सौभाग्यों का वादा करता है, उन का आनन्द लेने से ख्रीस्तीय परिवारों को रोकने वाली बहुत सारी बाधाओं के बारे में कलीसिया दुःखद रूप से जागरूक है। व्यक्तिगत विश्वास का क्षय एवं जीवन के प्रति एक संपूर्ण लौकिक दर्शन को गले लगाना, आदि परिवार के प्रति ईश्वरीय योजना के लायक बनने से ख्रीस्तीय परिवारों को रोकने के गहरे कारण बने हैं। इसलिए, परिवार के प्रति ईश्वरीय योजना को समझना एवं ईश्वर के सपनों के अनुसार जीवन को पुनः तराशना अतिआवश्यक है। इस प्रयास में लीनिमेन्दा के पहले भाग में प्रस्तुत किये गये परिवार के सुसमाचार, दूसरे भाग में दिये गये समकालीन परिवार की चुनौतियों का अवलोकन एवं तीसरे भाग में आज के पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के संकेत रूपी व्यवहारिक मार्गों की विस्तृत सूची भी हमारे लिए बहुत ही मददगार होगी।

ppk d fy, lokyi

1. खीस्तीय परिवार के बारे में बाईबिल संबन्धी एवं कलीसिया के आधिकारिक शिक्षा के बारे में क्या परिवारें जागरूक हैं? परिवार के धर्मशास्त्र के कौन से पहलू हैं, जिन पर वर्तमान में ज़ोर दिया जाना चाहिए?

2. पुरूष और स्त्री की समान प्रतिष्ठा के बारे में क्या परिवार का हर एक सदस्य जागरूक है? आप के दृष्टिकोण प्रस्तुत करें।

3. सीरो–मलबार बिरादारियों के परिवार के आकार के सिकुड़ने के सवाल का हम कैसे व्याख्यान कर सकते हैं?

4. समकालीन परिवारों की मुख्य चुनौतियाँ क्या–क्या हैं? उनकी गंभीरता एवं अत्यावश्यकता के अनुसार उन की सूची बनायें।

5. क्या परिवारों को एक वास्तविक प्रार्थना–अनुभव होता है? पारिवारिक अवसरों, विशेषकर पारिवारिक प्रार्थना को सुधारने के लिए आप के क्या सुझाव हैं?

Endnotes

1. Catechism of the Catholic Church (1994), 2202.
2. Catechism of the Catholic Church, 2205.
3. Pope John Paul II, Familiaris Consortio, (1981), 21
4. Catechism of the Catholic Church, 2207.
5. Pope John Paul II, Mulieris Dignitatem (1988), 10.

6. The Pontifical Council for Justice and Peace, The Compendium of the Social Doctrine of the Church (2004), 146, 147.
7. Vatican Council Second, *Gaudium et Spes*, 22.
8. "The *Consortium Vitae Coniugalis:* Nature and Application" in *Studia Canonica* 6, 1972.
9. II Vatican Council, *Lumen Gentium,* 11; *Gaudium et Spes*, 48.
10. Pope Francis, *Lumen Fidei,* 53.
11. *Catechism of the Catholic Church*, 2205.
12. *Gaudium et Spes,* 52.
13. *Gaudium et Spes,*52.
14. *Familiaris Consortio*, 45.
15. *The Compendium of the Social Doctrine of the Church,* 252-254.
16. Pope Francis, *Laudato Si,* 61
17. Catechism of the Catholic Church (1994), 2202-2202.
18. Catechism of the Catholic Church (1994), 2215; Sir 7:27-28.
19. Catechism of the Catholic Church (1994), 2218.
20. Catechism of the Catholic Church (1994), 2221-2233; *Familiaris Consortio*, 71.
21. *Laudato Si*, 213.

Hkkx & 3

Ikokfl ;k dk fe ku

pukfr ;k ,o lHkkouk,

iLrkouk

1. ईश्वर के परिपालन में बीसवीं और इक्कीसवीं सदियों के प्रव्रजन के बलबूते एक सार्वभौम कलीसिया के रूप में सीरो–मलबार कलीसिया का विकास हुआ है। प्रव्रजन सीरो–मलबार के श्रद्धालुओं की विशेषताओं में एक है और उन के जीवन का एक अभिन्न अंग है। हरे चरागाहों की तलाश में साहसिकता दिखलाने वाले सीरो–मलबार श्रद्धालुओं को हमेशा ही अपने परिवार और कलीसिया से प्रोत्साहन मिलता रहा है। केरल की शैक्षाणिक संस्थानों के योगदान, विश्व के चारों तरफ पहुँचने में, उन्हें सक्षम बनाया है। विभिन्न देशों में अपना स्थायी निवास बनाने वाले प्रवासीगण का इतना विकास हुआ कि दूसरी और तीसरी पीढ़ियाँ भी उन देशों के पुत्र–पुत्रियाँ बनी जिनमें उन का स्थायी निवास है। इसलिए प्रव्रजन के बलबूते सीरो–मलबार कलीसिया, जो पहले केरल की प्रान्तीय सीमाओं तक सीमित रहती थी, आज एक वैश्विक कलीसिया बन गयी है। और संत थोमस से प्राप्त हमारे प्रभु ईसा मसीह के सुसमाचार का विभिन्न सांस्कृतिक–भाषाई एवं धार्मिक संदर्भो में प्रचार करने में वह बड़े उत्साह से कार्यरत रहती है।

1- Ikotu dk ckbfcy lcU/kh ,o vk/;kfe fo|k lcU/kh nf'Vdk.k

2- **ckbfcy lcU/kh nf'Vdk.k %** बाईबिल प्रव्रजन की पुस्तक है, एक ऐसे लोगों का इतिहास है, जो सदा ही एक जगह से दूसरी जगह की ओर प्रस्थान करती रहती है। जीत और हार, आनन्द एवं दुःख, परीक्षाओं एवं यातनाओं, उम्मीदों एवं निराशाओं का एहसास करते हुए हर एक पात्र नित्यता की ओर सफर करता है। पुराने विधान में प्रव्रजन के कुछ चमकीले उदाहरण हैं, जैसे ईश्वरीय योजना के अनुसार आगे बढ़ने के लिए इब्राहिम को मिला रहस्यात्मक बुलावा; अपना देश छोड़कर फिलिस्तियों के देश में निवास की खोज करने के लिए इसहाक को मिली बुलाहट; इसहाक ने जो अविश्वास का सामना किया एवं अतिथि देश से उन का तिरस्कार; अजनबी यूसूफ का मिस्र को अकाल से बचाने को सक्षम बनना और वहाँ का प्रशासक नियुक्त होना; और अपनी घरेलु परिस्थितियों से अनजान राहों की ओर ले जाये गये पूर्वज लोग, आदि प्रवासियों की आज की हालतों का प्राचीन रूप हैं।[1] यह अनुभव हमें ईश्वरीय योजना के निकट ले जाता और उस के परिपालन का परिचय कराता है। इस अर्थ में प्रवासी लोग ईश्वर की जनता है, जो एक उद्‌देश्य के पूर्ति के लिए चुने गये हैं।

3. ईसा का संपूर्ण जीवन मानवीय गतिशीलता का एक मिसाल है। अपने माता–पिता के साथ ईसा को बेथलेम जाना पड़ा और उस के बाद मिस्र जाना पड़ा थाः पलस्तीन में उनका आम जीवन रहा, और विभिन्न स्थानों में उन का कैद और मुत्यु की दंडाज्ञा हुई थी। समाज से उखाड़े गये लोगों से ईसा ने तादात्म्य स्थापिता किया। भ्रमणकारी प्रेरितों के रूप में सुसमाचार का बखान करने के लिए ईसा के चेले संसार के

चारों तरफ चले गये थे। प्राचीन ईसाई बिरादारी ने प्रवासी जनता का विशेष ख्याल रखा और ईश्वर के नाम पर उन्होंने सब लोगों के लिए समानता एवं न्याय की घोषणा की।[2] प्राचीन कलीसिया में अजनबियों को प्यार करने और उन के प्रति अतिथि सत्कार की भावना रखने का लोगों को निर्देश दिया जाता था। अजनबियों का स्वागत करना न्याय का कार्य था।[3]

4. dyhfl ;k lcU/kh iko/kku % शुरूआत से ही धार्मिक अनुष्ठानों के संरक्षण करने की कलीसिया की चिन्ता रहती थी। अपनी ही कलीसिया में निश्चित जगहों में रहने वाले श्रद्धालुओं के ऊपर पुरखों एवं धर्माध्यक्षों के अधिकार का, पुरानी सदियों में नियम बनाया गया था। निसिया की प्रथम दुनियावी महा सभा (325) के नियमों में हम ऐसे पढ़ते हैं, मिस्र लिबिया एवं पेन्टेपोलिस की पुरानी परम्पराओं का संरक्षण हों (C 6)। चौथी लातेरेन महासभा (1215) के नियमों के अनुसार, ''चूँकि कई स्थानों में अलग–अलग भाषा बोलने वाले लोग एक ही शहर और धर्मप्रान्तों में रहते हैं, जिनका एक विश्वास है, मगर अलग–अलग संप्रदायें और रिवाज़े हैं, हम इसलिए सभी धर्माध्यक्षों को यह सख्त आदेश देते हैं कि उचित व्यक्ति को उनके लिए उपलब्ध करायें जो आगे बताये गये कार्यें के विभिन्न संप्रदायों और भाषाओं के अनुसार करें : उनके लिए उपासना विधियों का अनुष्ठान करे, उन के लिए कलीसिया के संस्कारों का अनुष्ठान करे और वचन और नमूना से उन्हें शिक्षा दे'' (C 9)

5. संत पापा पीयूस बारहवें के प्रेरितिक आज्ञप्ति Exsul Familia 1952 को प्रवासियों के बारे में लिखा गया <<*Magna Carta*>> मानी जाती है। दूसरी वत्तिकान महासभा,[4] Motu Proprio pastoralis Migratorum Cura, कानोन नियम की दोनों संहिताएँ, और Erqa Miqrantes Caritas Christi[5] आगे इसी विषय का विस्तार विवरण देती हैं। अपनी Sui iuris (स्वशासन प्राप्त) कलीसिया के निर्देशों के अनुसार उपासना करने का अधिकार सभी ईसाई श्रद्धालुओं को प्राप्त है। अन्य Sui iuris (स्वशासन प्राप्त) कलीसिया की प्रान्तीय सीमा में रहने वाले श्रद्धालुओं की संख्या अगर पर्याप्त हों, तो उनके संप्रदाय के पुरोहितों, पैरिशों अथवा Episcopl Vicars को उपलब्ध कराना होगा।[6] स्थानीय धर्माध्यक्ष एवं मेजर आर्च बिशप के बीच आपसी समझौता के साथ ऐसे प्रावधानों को रूप देना चाहिए। किसी को भी अपनी Sui iuris कलीसिया से दूसरी Sui iuris कलीसिया में सदस्यता लेने के लिए मज़बूत करना कानोन नियम के अनुसार मना है। नियम का प्राण किसी भी व्यक्ति को आसानी से अन्य Sui iuris कलीसिया के चयन करने की अनुमति नहीं देता है। अपने संप्रदाय को जानने, धारण करने और इस के संरक्षण करने की श्रद्धालुओं की जिम्मेदारी है।[7] संक्षिप्त में प्रवासियों के साथ चलने की Sui iuris कलीसिया की जिम्मेदारी नियम द्वारा अधिकृत की गयी है, और संस्कारों एवं संस्कार के अनुकरणों का अनुष्ठान, बच्चों, युवक–युवतियों एवं वयस्क लोगों का विश्वास प्रशिक्षण एवं भक्तिकार्यों के संगठनों को व्यवस्थापित करना आदि इस जिम्मेदारी का हिस्सा है।[8]

2- Ikoklu dk Lo:Ik ,o tfVyrk

6- iokt u d! fl)kUrk % मानव जाति का इतिहास प्रव्रजन का इतिहास है। स्वंय की जीवन परिस्थितियों के सुधार करने की इच्छा,

नये लक्ष्यों की तलाश, उत्तरजीविता का प्रयास, संसार के क्षणभंगुर अस्तित्व में नये अर्थ और सफलता की खोज, आदि प्रव्रजन के कारण रहे हैं। शरणार्थियाँ, स्थायी श्रमिक, समयानुकूल श्रमिक, नाविकगण, बहुराष्ट्रीय अधिकारी वर्ग, घुमक्कड़ लोग, आदि प्रवासियों के दायेरे में आते हैं। सीरो–मलबार के अधिकांश प्रवासियाँ ऐसे लोग हैं जो बेहतर शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय अथवा कृषि कार्य के लिए घर छोड़ दिया है। भारत के अन्य राज्यों में (आन्तरिक प्रव्रजन) अथवा भारत के बाहर (अन्तर राष्ट्रीय प्रव्रजन) स्थायी निवास बनाने के लिए उन्हें केरल की अपनी मातृ कलीसिया की चरागाही सेवा के लाभ को छोड़ना पड़ा था। रूपान्तरण और समाकलन में आन्तरिक प्रवासियों एवं अन्तर राष्ट्रीय प्रवासियों के बीच निकट की समानताएँ हैं।

7- igyh ih<h d: iokfl;k dk vu|:i.k% प्रवासी अन्य संस्कृति, भाषा और परिस्थिति में प्रत्यारोपित किया जाता है। वह अपने दोस्तों एवं रिश्तेदारों को खो देता है। मगर इस प्रकार का नुकसान आर्थिक सफलता के लिए उनकी आन्तरिक प्रेरणा द्वारा हल किया जाता है। पहली पीढ़ी का प्रवासी कठिन परिश्रम करता है और किसी भी प्रकार की तकलीफ उठाने के लिए तैयार रहता है, ताकि वह एक नयी परिस्थिति में अपना स्थायी निवास बना सके। अन्य देशों की तुलना में विकसित देशों में ही अनुरूपण और समाकलन आसान हो जाते हैं। इस अवस्था में एक व्यक्ति अनजाने या जानबूझकर अपनी पुरानी सांस्कृतिक पहचान खो देता है, जो उस के विचार में उस की भविष्य की प्रगति के लिए एक बाधा होती है। फिर भी वह अपने भूतकाल के प्रति

खिन्न रहता और अपनी पुरानी पहचान को संजोता है। वहाँ उस का अनुरूपण हुआ है, मगर समाकलन नहीं।

8- feVVh d: i|=k dk lkedyu% दूसरी और आगे की प्रवासी पीढ़ियाँ, जो एक नयी मातृभाषा बोलती हैं और संभवतः घर पर अपने माता–पिताओं की भाषा बोलते हैं, शायद दो दुनियाओं में जीवन बिताती हैं। दो निष्ठाओं के साथ बढ़ने के लिए वे मज़बूर किये जाते हैं। अक्सर माता–पिता उन की पुरानी परम्परा के बारे में बड़े गर्व से बोलते हैं और 'खोये गये मूल्यों' के बारे में उन्हें समझाते हैं। इस अवस्था में समाकलन बहुत ही दुश्वार हो जाता हैं। इस परिस्थिति में नयी परिस्थिति की माँगों को सम्मिलित करते हुए और माता–पिताओं की पहचान के मूल अनुभव को प्रतिधारित करते हुए बच्चे स्वयं एक बीच का रास्ता अपनाने को सीख जाते हैं। यही आदर्शपूर्ण होगा कि न तो अपने माता–पिताओं की पहचान पूरी तरह खो देना और न नयी संस्कृति में पूरी तरह डूब जाना। यद्यपि दूसरी पीढ़ी तो इस विषय परिस्थिति से मुश्किल से गुजर जाती है, तो भी तीसरी और आगे की पीढ़ियों के लिए अनुरूपण आसान हो जाता है।

9- io:tu dh tfVyrk% आन्तरिक एवं अन्तर राष्ट्रीय प्रवासियों को ढेर सारी सामाजिक एवं राजनीतिक मसलाओं का सामना करना पड़ते हैं। जब आन्तरिक प्रवासी धर्म, भाषा, संस्कृति आदि से संबन्धित भिन्नताओं का सामना करते हैं, तो अन्तर राष्ट्रीय प्रवजन दुनिया के लिए एक समस्या है, क्योंकि यह देश के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित कर सकता है। अन्तर–राष्ट्रीय प्रवासियों को निम्न लिखित समस्याओं का सामना करना पड़ते हैं : (1) स्थानीय

जनता प्रवासियों को अपनी आर्थिक स्थिरता के लिए एक खतरा मानती है, (2) वंश और जातीयता के नाम पर विवेचन होता है एवं रंग, वंश एवं जातीय पृष्ठभूमि के कारण शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न होता है, (3) कई प्रवासी श्रमिकों को कई घण्टों तक काम करना पडते हैं, अपर्याप्त श्रम परिस्थिति, अपर्याप्त वेतन, पोषक भोजन एवं निवास की कमी, आदि से गुजरना पड़ते हैं; (4) कुछ श्रमिक मानसिक तनाव एवं मानसिक हानि झेलने को मज़बूर होते हैं ; (5) नौकरी के अवसरों के नाम पर 'मिट्टी के पुत्र' और बाहरवालों के बीच हमेशा अशान्ति बनी रहती है और (6) कुछ अन्य देशों में प्रवासियों के कोई अधिकार नहीं होते हैं।

3- lhjk&eyckj iozt u % bfrgkl ,o fodkl

10- bfrgkl % औपनिवेशिक ज़माने में आन्तरिक प्रव्रजन की संख्या बहुत ही कम थी, यानी भारत की कुल आबादी के 3 से 4 प्रतिशत थी। मगर, करोड़ों की संख्या में उत्तर भारत के श्रमिक ब्रिटीश लोग द्वारा भारत के बाहर उन की कालोनियों में ले जाये गये। स्वतंत्रता के बाद का दृश्य बहुत ही भिन्न था। सन् 1950 के आखिरी भागों में सीरो–मलबार श्रद्धालुओं का प्रव्रजन शुरू हुआ और 1960 तक इस की गति तेज हुई एवं 1980 तक यह चरम पर पहुँच गया। सन् 1950 में अगर कृषक एवं अकुशल लोगों का प्रव्रजन हुआ, तो 1960 तक में भागिक रूप से कुशल लोगों एवं हाईस्कूल तक पढ़े हुए लोगों का प्रव्रजन हुआ था। सन् 1970 में नर्स लोग एवं आई.टी तकनीशियनों का बड़ी संख्या में प्रव्रजन होने लगा। प्रव्रजन के शुरूआती चरण आन्तरिक था, मगर बाद में अमेरिका,

कैनाडा, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैड एवं यूरोप में भी प्रव्रजन होने लगा। सन् 1960 में तेल व्यापार के उत्कर्ष के कारण गल्फ देशों की ओर प्रव्रजन का बहाव तेज होता गया। प्रव्रजन करने वाले अकुशल एवं भागिक रूप से कुशल लोगों के पास, जिस बिरादरी में उन्होंने प्रव्रजन किया, उस में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने की न तो भाषा की कुशलता थी और न आर्थिक ताकत। मगर, कुशल पेशेवर लोग, अपनी शैक्षणिक योग्यताओं एवं आर्थिक प्रतिष्ठा के कारण, अपने प्रव्रजन के देश में अपनी पुरानी पीढ़ी से ज़्यादा प्रतिष्ठा और स्थिरता बनाने में समर्थ बने।

11. सन् 1960 के दौरान प्रव्रजन ने एक पठार का स्तर प्राप्त किया। फिर भी सार्वभौमीकरण के पास प्रव्रजन को तेज करने का अपना स्वयं का मार्ग है। इसलिए प्रव्रजन के भविष्य के बारे में कोई अनुमान लगाना मुश्किल है। वास्तव में सन् 2000 में उल्टा प्रव्रजन के संकेत दिखने लगे। केरल में औद्योगीकरण की कमी अगर प्रव्रजन का कारण बनी, तो केरल में सर्विस उद्योगों की शुरूआत, स्वाभाविक रूप से बुजुर्ग होना एवं सक्रिय पेशाओं से सेवा निवृत्त होना, आदि ही उल्टे प्रव्रजन के मुख्य कारण बताये गये हैं।

12- lhjk&eyckj iokfl;k dk ox : वर्तमान में सीरो–मलबार प्रवासियों के तीन वर्ग होते हैं :

1. सन् 1940 में प्रव्रजन करने वाले,
2. बेहतर पेशे की तलाश में लगातार प्रव्रजन करनेवाने युवा परिवारें,
3. शिक्षा अथवा पेशे के उद्देश्य से प्रव्रजन करने वाले छात्र–छात्राएँ, अविवाहित श्रमिक पुरूषों एवं स्त्रीयाँ।

पहले वर्ग के श्रद्धालुओं में से, उन के बच्चों ने दूसरी एवं तीसरी पीढ़ी तक विकास किया है, और उन्हें यह नहीं लगते कि वे प्रवासी हैं, मगर वे यह दावा करते हैं कि वे मिट्टी के पुत्र हैं। ऊपर बतायी गयी सूची में से, दूसरे एवं तीसरे वर्ग सीरो–मलबार कलीसिया के सबसे कम उम्र का विभाग है। संसार भर के प्रवासी बिरादरी की औसत उम्र चालीस से कम है। यह सारी बातें संकेत करती हैं कि केरल के परिवारों में बुजुर्ग लोगों की संख्या बढ़ने की और प्रवासी बिरादरियों में युवाओं की संख्या बढ़ने की संभावना नज़र आ रही है।

13- vkdM+s% वर्तमान में सीरो मलबार कलीसिया के श्रद्धालुओं की कुल संख्या 49,00,000 है, जिस में 13,00,000 से ज्यादा लोग केरल के बाहर प्रवासी हैं। भारत में केरल के बाहर प्रवासियों की संख्या 5,50,000 है और भारत के बाहर 7,50,000 है। वर्तमान में भारत के सीरो–मलबार धर्मप्रान्तों के बाहर 2,00,000 श्रद्धालु रहते हैं जिन्हें उचित कलीसिया संबन्धी परिलेखन की ज़रूरत है और उसी तरह 5,5,000 भारत के बाहर हैं जिन में गल्फ देश,[9] यूरोप, यू.के., सिंगापुर, आफ्रीका एवं अन्य शामिल हैं।

14. lhjks&eyckj J)kyqvksa dh pjkxkgh lsok ds fy, mBk;s x;s Bksl dne% अपनी सारी बाधाओं के बावजूद भी प्रवासियों के मामले में सीरो–मलबार सक्रिय रही है और उन की चरागाही सेवा के लिए कई कदम उठाये भी है। दक्षिण केरल से उत्तर केरल की ओर जिस समय से प्रव्रजन की शुरूआत हुई थी, उसी समय से कलीसिया ने अपने सक्रिय दखल से प्रभावशाली चरागाही सेवा का ख्याल रखा और सन् 1953 में तलाशेरी के धर्मप्रान्त की स्थापना हुई, जो बाद में अन्य पाँच धर्मप्रान्तों में विभाजित हुआ। दूसरी वत्तिकान महा–सभा के बाद, उस की शिक्षा से प्रेरणा पाकर, विशेषकर कलीसियाई सहभागिता से प्रेरणा पाकर, सीरो–मलबार कलीसिया को अपनी पहचान का बड़ा एहसास हुआ और प्रवास में रहनेवाले, विशेषकर केरल के बाहर एवं विदेश में रहनेवाले अपने पुत्र–पुत्रियों की उचित चरागाही सेवा का बोध हुआ।

15. प्रव्रजन की शुरूआत से ही प्रवासियों की चरागाही सेवा के बारे में जागरूक थी और सीरो–मलबार कलीसिया रोम के प्रेरितिक सिंहासन से लगातार याचना करती रही कि अपने श्रद्धालुओं की चरागाही सेवा का प्रावधान बना दिया जाये। सन् 1978 से लेकर प्रवासियों की ज़रूरतों के निपटारा के लिए प्रेरितिक परिदर्शकों की नियुक्ति होने लगी। उस के फलस्वरूप सन् 1988 में कल्याण धर्मप्रान्त की स्थापना हुई, सन् 2001 में चिकागो में सारे युनाईटेड स्टेट्स के लिए संत थोमस धर्मप्रान्त की स्थापना हुई और इसके धर्माध्यक्ष को कैनडा का प्रेरितिक परिदर्शक गया, बनाया सन् 2012 में फरीदाबाद धर्मप्रान्त, सन् 2014 में मेलबॉर्न में सारे आस्ट्रेलिया के लिए संत थोमस धर्मप्रान्त की स्थापना एवं इसके ध र्माध्यक्ष को न्यूजीलैंड के प्रेरितिक परिदर्शक बनाये गये, सन् 2015 में मिसिस्सागुआ धर्मप्रान्त की स्थापना सारे कैनाडा के लिए हुई एवं मण्डया धर्मप्रान्त की सीमा का विस्तार सन् 2013 हुआ जिस में बंगलूरू के लातीनी धर्मप्रान्त की चार सिविल जिलाएँ शामिल हैं। इन सारी जगहों में अन्य sui iuris कलीसियाओं के साथ एक अच्छा संबन्ध को बरकरार रखा गया है।

16- i:okl e: pjkxgh dk;Z% कलीसिया के परम अधिकार के ज़रिए विविध कलीसियाई सीमा निर्धारण पर अमल करने के बजाय सीरो–मलबार कलीसिया ने कुछ ठोस कदम उठाये हैं। विभिन्न देशों, जैसे यूरोप, युनाईटेड किंगडम, गल्फ देशों, भारत के महत्वपूर्ण शहरों आदि में पुरोहित नियुक्त किये गये हैं, इन में से अधिकतर स्थानों में याजकीय अथवा लोकधर्मी समन्वयक नियुक्त किये गये हैं : जवाबदार धर्माध यक्षगण चरागाही भेंट भी करते आ रहे हैं, एक सार्वभौम मिलन के लिए प्रवासी बिरादरियों के प्रतिनिधि गण मांऊट संत थोमस, काक्कानाड में बुलाये गये थे, चरागाही पत्र सारी प्रवासी बिरादरियों में भेज दिये गये है; उपासना–विधि एवं धर्मशिक्षा की किताबों को तैयार कर उन्हें वितरित भी किया हैः आदि इन ठोस कदमों से कुछ हैं। प्रवासियों के बीच सुसमाचार कार्य एवं चरागाही सेवा के लिए बनाये गये मेजर आर्की एपिस्कोपल आयोग भारत के बाहर रहनेवाले प्रवासियों के लिए विविध कार्यों को रूप देता है, जबकि प्रेरितिक परिदर्शक के नेतृत्व में "Santhome Mission in India" भारत में रहनेवाले प्रवासियों की ज़रूरतों का ख्याल रखता है।

17- i:okfl ;ksa dk ;kxnku% सीरो–मलबार प्रवासी एक जुट हुए और उन्होंने संघों का निर्माण किया और वे अपने अपने स्थानों में हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को दोहरते हैं। इस के लिए दूसरी एवं तीसरी पीढ़ियों के प्रयास सराहनीय है। अपने समाज के सामाजिक, नागरीय एवं राजनीतिक जीवन पर वे सफल रूप से प्रभाव डालते हैं। अन्तर कलीसियाई अन्तर–संप्रदायी एवं अन्तर–धर्मिक कार्यकलापों के लिए प्रवास की जगहें बढ़ती संभावनाओं को प्रदान करती हैं। अन्य

संप्रदाय के ईसाई श्रद्धालुओं के साथ सुविधाओं के सहभाजन करने की एक सकारात्मक प्रवृत्ति विदेश के देशों में मौजूद है।[10] अपने समाजों में, जहाँ वे रहते हैं, प्रवासी बिरादरियाँ सामाजिक परोपकारी कार्यों के लिए एक दूसरे का सहयोग कर सकती हैं।

18. हमारे लोग जब अपने जीवन में समृद्ध होते हैं, उन के परिवारों में भेजी जानेवाली कमाईयाँ निश्चित रूप से हमारे परिवारों, पैरिशों, स्थानीय गाँवों, और यहाँ तक कि केरल राज्य और बड़े पैमाने में हमारे राष्ट्र की समृद्धि में योगदान देती रहती हैं। उस तरह, सीरो–मलबार के सदस्यों का प्रव्रजन ने उनके अपने–अपने स्थानों को मात्र नहीं, जहाँ उनका प्रत्यारोपण हुआ है, बल्कि अपनी मातृ कलीसिया को भी अपने उदार योगदान दिये हैं।

4. lhjks&eyckj i:otu dh pqukSfr;k¡

19- fo'okl ,oa ijaijk dk gLrkarj.k% प्रवासी परिवारों की, जो एक नयी मिट्टी में प्रत्यारोपित किये गये हैं, विकास के लिए परवरिश की जाने की ज़रूरत थी; क्योंकि नयी मिट्टी एवं परिस्थितियाँ हमेशा अनूकूल नहीं रही हैं। कलीसिया के आग्रह के अनुरूप अपने विश्वास को जीने में प्रवासी परिवारों को बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा था। उन सबके बावजूद, अपने पारिवारिक परंपराओं एवं प्रार्थनाओं, पारिवारिक मूल्य प्रणाली, सांस्कृतिक परंपराओं, एवं धार्मिक क्रियाओं के द्वारा वे अपने विश्वास की परवरिश करते रहते थे। सीरो–मलबार कलीसिया की ओर से पर्याप्त चरागाही सेवा के अभाव में भी पवित्र बलिदान में भाग लेना और स्थानीय कलीसिया के आध्यत्मिक कार्यें के

हिस्सेदार बनना, सीरो–मलबार कलीसिया के श्रद्धालु अपना कर्तव्य समझते थे। फिर भी एक सीरो–मलबार बिरादरी तक पहुँचने की जवाबदारी भुलायी नहीं जा सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि अनधिकृत सम्मेलनों एवं प्रार्थना सभाओं से, विशेषकर, विविध धाराओं के सम्मेलनों से दूर रहें। अपने आस–पास में कार्यरत् ऐसे गुटों के बारे में सतर्क रहना और उन से दूरी बनाये रखना भी ज़रूरी है।

20. रविवारीय धर्मशिक्षा प्रवासियों के बीच विश्वास के हस्तांतरण का एक प्रभावशाली साधन है, यह देखा गया है कि प्रवासी लोग, जो प्रवास के स्थानों से सीरो–मलबार कलीसिया के उपासना समारोह में लम्बे समय से भाग लेते हैं, वे उन्नति करते एवं एक बिरादरी के रूप में जीवन बिताते हैं। प्रवासी बिरादरी में रहने वाले विविध धर्मप्रान्तों के श्रद्धालुओं को समायोजित करने के लिए यह ज़रूरी है कि उपासना विधि का समारोह धर्माध्यक्षीय सभा के फॉरमुला के अनुसार हों। प्रवासी लोगों की चरागाही सेवा के लिए दिये गये चरागाही निर्देश कहते हैं : ''प्रवासी बिरादरियों के लिए की जानेवाली उपासना विधि एवं संस्कारें हमेशा ही सीरो–मलबार उपासना विधि हो और सीरो–मलबार कलीसिया की धर्माध्यक्षीय सभा द्वारा मान्यता प्राप्त पुस्तकों का उपयोग हो और संप्रदाय से जुड़ा हुआ और समारोह की प्रणाली के अनुरूप हो।''[11] जैसे अधिकांश प्रवासियों ने बीस साल की उम्र में अपनी–अपनी जगह छोड़ दी हैं, तो उन में से बहुत सारे माता–पिताओं को बहुत सारी परंपराओं एवं उन के अर्थ का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है। प्रवासियों की ज़रूरतों की पूर्ती करने में धर्मशिक्षा के परम्परागत प्रणाली हमेशा उपयुक्त नहीं हो सकती है। इसलिए इस मिशन के कार्यान्वयन के लिए हमें अपने

क्षितिजों के विस्तार करने की ज़रूरत है। जहाँ–जहाँ एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम नहीं होता है, माता–पिताओं को चाहिए कि सीरो–मलबार किताबों का उपयोग करते हुए वे अपने बच्चों को धर्म शिक्षा प्रदान करें। परिवार में सयाने लोगों के विश्वास और आध्यात्मिकता को नवीनीकृत करने के लिए सयाने लोगों की धर्मशिक्षा पर अमल करना होगा।

21. प्रवासियों के बीच युवक–युवतियों एवं युवा परिवारों की संख्या ज़्यादा है। आधुनिक संचार प्रणालियाँ, जीवन–शैली, मनोरंजन, आदि बहुत जल्दी ही उन पर प्रभाव डालते हैं। शहरों में अनामिता की स्थिति बनी रहती है, इसलिए प्रवासियों की, उनके संबन्धित स्थानों में पहचान करने में सूचना, बुनियादी ढांचे, प्रणालियाँ, आदि के अभाव में कलीसिया असमर्थ होती है। अपनी प्राथमिकता पेशा, आर्थिक स्थिरता एवं सामाजिक जीवन की प्रतिष्ठा होने के कारण युवक–युवतियों में अपने निकट के पैरिशों की तलाश करने की पहल का अभाव होता है।

22. ikfjokfjd lcU/k % अधिकतर प्रवासी परिवारों का आकार छोटा है। पारिवारिक बन्धन की कमी के कारण उन में आपसी समर्थन का अभाव होता है। माता–पिताएँ पूरी तरह अपने सयाने बच्चों पर निर्भर रहते हैं; क्योंकि उनके प्रवासी स्थानों पर उनके कोई रिश्तेदार नहीं होते। यह स्थिति उनके विवाहित बच्चों पर प्रभाव डालती है। पेशे की परिस्थितियों के तनाव और दवाब, बढ़ता आर्थिक बोझ एवं ऋण, सहायता का हाथ बँटाने वाले परिवार के अन्य सदस्यों की कमी, आदि युवा परिवारों के दवाब को बहुत भारी बनाते हैं और वे जीवन के कठोर कार्यकलापों के सामना करने में असमर्थ होते हैं। अपनी नौकरी की

जगहों से बहुत ही देर से आने के कारण अपने प्रार्थना–जीवन एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों की उपेक्षा करने को वे मज़बूर हो जाते हैं।

23. युवा लोगों के साथ विश्वास बाँटने में श्रेष्ठ नमूनाओं एवं जीवन साक्ष्य की ज़रूरत होती है। दादा–दीदियों द्वारा ही पोता–पोतियों को विश्वास हस्तांरित किया जाता था। अक्सर युवा प्रवासी फ्लैटों एवं मकानों में रहते हैं। अधिकतर लोग अपने माता–पिता से अलग रहते हैं इसलिए दादा–दादियों के साथ रहने के मौके से पोता–पोतियाँ वंचित रह जाते हैं।

24- “kkfn;k| % विवाह के रीति–रिवाज एवं पारिवारिक जीवन की एक समृद्ध परंपरा एवं विरासत सीरो–मलबार कलीसिया के पास हैं, जिसे अपने पुरखों ने सदियों से संजोया, संचित रखा और अटल विश्वास के साथ हमें हस्तांतरित किया है। विवाह में पवित्रता और विश्वस्तता को बरकरार रखते हुए, परिवार के बन्धनों एवं ख्याति का पालन करते हुए प्रवासी क्षेत्रों की विविध सांस्कृतिक परिस्थितियों में भी उन्होंने इस विरासत को आगे बढ़ाया। सार्वभौमीकरण, उपभोक्तावाद, अणु कुटुम्ब की संस्कृति, विदेशी संस्कृति का अनुकरण, तकनीकों का विकास, फलस्वरूप इस का दुरूपयोग, काम के प्रति अनावश्यक उत्साह, आदि ने शहरों में प्रवासी परिवारों की जड़ हिला दी हैं। ठोस पारिवारिक जड़ों की रक्षा करने हेतु कलीसिया को इन सब मामलाओं का सामना करने की ज़रूरत है।

25. मिश्र विवाह एवं पंथ विवाहों की असामनता कैथलिक प्रवासियों के बीच बढ़ती जा रही हैं। परम्परागत सुव्यस्थित विवाह, जहाँ दोनों

पार्टियों को दूसरी पार्टी की योग्यताओं पर विचार करने का अवसर मिलता था, आज 60–70 प्रतिशत तक कम हुआ है एवं किसी से प्यार कर शादी करना अपने जीवन साथी को चुनने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रूप में महिमान्वित किया जाता है। अल्पसंख्यक कैथलिक युवक–युवतियाँ ऐसे पाठशालाओं एवं कॉलेजों में पढते हैं, जहाँ लड़का–लड़की की दोस्ती की प्रणाली प्रंशसित की जाती है। अन्य खतरें, जैसे अपनी बिरादरी से जीवन–साथी को नहीं खोजना, चालीस साल की उम्र में भी विवाहित होने का असमंजस, जीवन के बारे में उचित दर्शन नहीं होना, दोस्तों के साथ विलासिता एवं बारंबार सप्ताह के अन्त में छुट्टियाँ मनाना, मानवीय एवं पारिवारिक मूल्यों की गंभीर शिथिलता, अंहमानी एवं स्वयं पर केन्द्रित जीवन, आदि ने प्रवासी युवा पीढ़ियों पर बुरा प्रभाव डाला है।

26- fu/kkfjr {k= ds ckgj pjkxkgh dk;Z Ikj ifrc/k % सीरो–मलबार कलीसिया को निर्धारित क्षेत्र के हिसाब से इस के पाँच महानगरों तक सीमित करने के कारण संसार के चारों तरफ फैली हुई अपनी संतानों की उचित चरागाही सेवा देने में कलीसिया असमर्थ हो जाती है। यद्यपि पवित्र सिंहासन ने पर्याप्त दिशा–निर्देशों एवं धर्मवैधानिक प्रावधानों की परिकल्पना की हैं, तो भी एक बड़ी संख्या के लोगों को उचित चरागाही सेवा प्राप्त नही होती है। उपासना–जीवन एवं धर्मशिक्षा के अवसरों की कमी एवं कलीसियाई एवं पारिवारिक विश्वास परम्परा से अलगाव, आदि गंभीर मामलाओं का आज प्रवासी लोग सामना कर रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में अपने ही देश में प्रवासी रहने की अंसगति एक अन्य गंभीर समस्या है। प्रवासी श्रद्धालुओं के बारे में न तो लातीनी कलीसिया और न

सीरो–मलबार के पास सही एवं यथार्थ आंकड़े है। बहुत से लातीनी ध र्माध्यक्ष सीरो–मलबार श्रद्धालुओं को उचित चरागाही सेवा उपलब्ध कराते हुए सहयोग का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं एवं श्रद्धालु इस को संजोते हुए एक बड़ा अनुग्रह समझते हैं। धर्माध्यक्षगण, जिन्होंने एक सही दृष्टिकोण से कलीसिया के आदशों को समझने की तकलीफ उठायी हैं और आवश्यक प्रावधान बनाये हैं, कलीसिया द्वारा, विशेषकर, प्रवासियों द्वारा प्रंशसित किये गये हैं। फिर भी, कुछ लातीनी धर्माध्यक्ष एवं पुरोहितगण कलीसिया की शिक्षा के बारे में प्रत्यक्ष रूप से अनजान रहते हैं, अतः वे सोचते हैं कि सीरो–मलबार कलीसिया के श्रद्धालुओं को चरागाही सेवा देना फूट पैदा करता है। लातीनी धर्माध्यक्षों के साथ संवाद एवं सहयोग से ही इस को प्रभावशाली रूप से हल किया जा सकता है। स्थानीय लातीनी कलीसिया में आंशिक रूप से जोड़े गये प्रवासियों को वापस लाने में भी एक ऐसे एकजुट प्रयास की ज़रूरत है।

27- dsjy dh vkj iokl tu % केरल के बाहर अन्य राज्यों से केरल की प्रवासियों का अपूर्व बहाव पर हमारे विशेष ध्यान की ज़रूरत है। केरल राज्य की करीब 70 प्रतिशत आबादी प्रवासियों की है। समान दृश्य अन्य राज्यों में भी देखा जा सकता है, जहाँ मिशन धर्मप्रान्तें और प्रवासियों के लिए स्थापित धर्मप्रान्तें होते हैं। प्रवासियों के अन्तर्वाह को संभालने के लिए हमारी कलीसिया को तैयार रहना होगी। संसार की चारों ओर से आये हुए अन्य Sui iuris कलीसिया के कैथलिक श्रद्धालु एवं विभिन्न गुटों के गैर–कैथलिक ईसाई श्रद्धालुओं की भी चरागाही सेवा की ज़रूरत है।[12] सीरो–मलबार कलीसिया को चाहिए कि वह अपने श्रद्धालुओं को शिक्षा दे, ताकि 'अन्य व्यक्ति' की भाषा, संस्कृति एवं संप्रदाय को ध

यान में रखते हुए उसे गले लगायें और उन की परंपरा एवं कलीसियाई पहचान का सम्मान करें।

5. lhjk&eyckj iokl tu dh lHkkouk,¡

28- iokl h dyhfl ;k l s lkoHkkSe dyhfl ;k rd % सार्वभौमीकरण ने सार्वभौम गाँव की खिड़कियाँ खोल दी हैं। प्रव्रजन के ज़रिए 75 वर्षो के अन्तराल में, एक कलीसिया, जो दक्षिण भारत के एक छोटे से राज्य तक सीमित रहती थी, आज दुनिया के सभी महाद्वीपों तक फैल गयी है और हर जगह इसके श्रद्धालुओं की संख्या काफी बड़ी है। प्रव्रजन कभी भी सीरो–मलबार कलीसिया के पूर्व निर्धारित एवं सम्मिलित प्रयास नहीं था। ईश्वर के परिपालन में ऐसा हुआ है। कई वर्षों के बीत जाने पर प्रवासीगण जिस मिट्टी में उन को रोपा गया है, उसी में गहरी जड़ फैलाकर, उसी मिट्टी के पुत्र पुत्रियाँ बन जाते हैं। अब सीरो–मलबार कलीसिया की जिम्मेदारी प्रवासियों की चरागाही सेवा के भी परे हैं और यह सार्वभौम सीरो–मलबार कलीसिया की आवश्यकताओं के पार जाती है। समय के संकेतों को पहचानकर, कलीसियाई जीवन के सभी स्तरों में सार्वभौम स्वरूप पर ज़ोर देना है और इस में सार्वभौम संस्कृतियाँ, भाषाएँ, धार्मिक पृष्ठभूमि आदि शामिल हैं।

29- iokl hx.k fofo/k l kL—frd] Hkk'kk;h] /kkfed] ifjfLFkfr ;ks e% कलीसिया की पहचान का संरक्षण करना एवं सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण करना दोनों अलग–अलग है। पहला तो एक व्यक्ति के सार को बताता है, तो दूसरा दैनिक जीवन की अभिव्यक्ति की बात है। कलीसिया के नियम इस पर ज़ोर देते हैं कि प्रत्येक Sui iuris कलीसिया को

अपनी धर्मक्रिया का संरक्षण करना है। जैसे श्रद्धालुगण विभिन्न सांस्कृतिक परिस्थितियों में रहते हैं, कलीसिया के कार्यों एवं अन्य कार्यो को भी प्रवासियों की नयी परिस्थितियों के अनुरूप बनाना होगा और जहाँ तक संभव है, नयी सांस्कृतिक परिस्थितियों के लिए उन्हें अनुभूत एवं प्रासंगिक बनाना है। स्थायी निवास की नयी जगह में भाषा, खान–पान की आदत, श्रम के नीतिशास्त्र, पहनावा और कई सारी जीवन–शैलियाँ भिन्न हो सकती हैं।

30. कोई भी संस्कृति गतिहीन नहीं है, लेकिन रूपांतर एवं परिष्कार की ज़रूरत है। कलीसियाई पहचान की विशेष संस्कृतियों में अभिव्यक्ति होती रही है।[13] मगर, इस बात का भी ध्यान रखा जाये कि किसी एक विशेष संस्कृति कलीसियाई पहचान को निःशेष नहीं कर सकती है। एक प्रवासी अपने प्रव्रजन के स्थान में किसी भी संस्कृति में अपनी कलीसियाई पहचान को जी सकता है। प्राचीन ईसाई बिरादरियाँ विश्वास को जीने के समान मनोभाव की गवाही देती है।[13] सीरो–मलबार कलीसियाओं की कलीसियाई विरासत को जीना इस के कई सारी संस्करणों को जन्म दे सकता है। गल्फ देशों में, उदाहरण के लिए प्रभु का दिन शुक्रवार को ही मनाया जाता है। औपचारिक कार्यक्रमों में पुरोहित एवं श्रद्धालुओं के पहनावे पर यूरोप और अमेरिका के ड्रेस कोड का प्रभाव हो सकता है। यह आरोप लगाया जाता है कि केरल के बाहर सीरो–मलबार कलीसिया का विस्तार करने से अक्सर कलीसियाई जीवन में केरल की संस्कृति का दोहराव होता है, मगर इस आरोप को तुच्छ समझकर इस की अवज्ञा नहीं की जा सकती है। इस बात पर हमें आत्म मंथन की ज़रूरत

है कि क्या केरल की संस्कृति का अनुपालन केरल के बाहर सीरो–मलबार कलीसिया के विस्तार में एक बाधा है?

31- vUrkj lkL–frd vuqdyu % प्रवासियों को अपने प्रवास की जगहों की संस्कृति में सन्निविष्ट करने से ज़्यादा वास्तव में जो हो रही है वह अन्तर सांस्कृतिक अनुकूलन की एक प्रक्रिया है, यानी प्रवासियों की असली संस्कृति एवं नयी संस्कृतियों के बीच निरन्तर जारी रहनेवाली पास्परिक सांस्कृतिक विचार–विमर्श है। यह आपसी कार्यकलाप हर एक प्रवासी के सांस्कृतिक परिधान में जीवंत रहता है। नयी परिस्थितियों के अनुरूप होते हुए अपनी पहचान को बनाये रखने का सबसे उत्तम मार्ग है कि निरन्तर जारी रहने वाली इस पारस्परिक प्रक्रिया द्वारा अपने स्वयं का रूपांतर होने देना है। अगर पुरोहितगण अथवा बिरादरियाँ इस प्रक्रिया से गुजरने को तैयार नहीं होते, तो नयी पीढ़ी के लिए कलीसियाई पहचान अप्रांसगिक हो सकती है। सीरो–मलबार बिरादरियों की भाषा एवं रीति–रिवाजों को नयी परिस्थितियों के लिए अनुभूत बनाना है, और इस के लिए उस क्षेत्र की उभरती संस्कृति एवं प्रवृत्तियों के साथ निरन्तर संवाद की ज़रूरत होती है। लैंगिक संवेदनशीलता के बढ़ते आदर्श, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, योजना बनाने में भागीदारी, टीम–वर्क में पारदर्शिता, आदि विकासशील शहरों एवं देशों में अनिवार्य मूल्यों के रूप में माने जाते हैं, अतः अपने चरागाही कार्य में ऐसे मूल्यों का मान करने और उन्हें सम्मिलित करने के लिए चरागाही के नेतृत्व में रहनेवाले हमेशा ही तैयार रहें। इस के लिए पुरोहितगण एवं बिरादरी के नेताओं को एक विशाल विचार अपनाना होगा, ताकि 'उभरती परिस्थितियों में सीरो–मलबार कलीसिया' ही बने रहने की अर्थपूर्ण राहों की तलाश कर सकें।

32- iokfl;k d }kjk l|lekpkj dk ipkj % कलीसिया के इतिहास में गतिशीलता सुसमाचार के प्रचार का अवसर बन गयी थी। ईसाई प्रवासीगण, अपने जीवन एवं गवाही के ज़रिए, सुसमाचार प्रचार के माध्यम बने रहे हैं। कलीसिया के पुत्र–पुत्रियों की विपुल प्रेरिताई यात्रा के कारण ही संसार के हर एक एक कोने में कलीसिया का विस्तार हुआ है। हर एक प्रवासी का, ईश्वर ने इस जिम्मेदारी के साथ अभिषेक किया है, ताकि वह उन लोगों को प्रभु ईसा मसीह के बारे में बताये, जिन्होंने पहले मसीह के बारे में नहीं सुना है, एवं नवीनीकृत गवाही के ज़रिए सोयी हुई ईसाई चेतना को पुनः जागृत करें। यह वांछनीय है कि प्रवासी लोग संत पौलूस के इन शब्दों को अपने हृदय में संजोये रखेंः ''धिक्कार मुझे यदि मैं सुसमाचार नहीं सुनाता'' (1कुरि 9:16)। जैसे संत थोमस भारत भेजे गये थे, वैसे ही प्रवासी लोग भी दुनिया की चारों तरफ भेजे गये हैं। यह प्रवास उत्तरजीविता अथवा आर्थिक स्थिरता के लिए मात्र नहीं, बल्कि सार्वभौम रूप से कलीसिया के निर्माण करने के मिशन की पूर्ति के लिए भी है।

33. हिन्दु बहुल उत्तर भारत के राज्यों में, मुस्लिम बहुल गल्फ प्रान्तों में एवं ईसाई बहुल यूरोप में अथवा अन्य देशों में भी ईसाई प्रवासियों की मौजूदगी सुसमाचार प्रचार के एक महत्पूर्ण साधन भी है। यह सीरो–मलबार कलीसिया का परम दायित्व है कि इन श्रद्धालुओं की हर संभव मदद करे ताकि जहाँ वे रोपे गये हैं, वहाँ वे सक्रियता से गवाही देते रहें। पवित्रात्मा की अपार शक्ति से वे पक्के ईसाई बन जायें ताकि एकाधिकता वादी, विविध सांस्कृति एवं धर्मनिरपेक्ष समाज के साथ संवाद कर सकें।

34. ikfjokfjd eY; dh f k{kk % शहरी संस्कृति में ऐसा प्रतीत होता है, कि प्रभु की आवाज़ '' अन्य आवाज़ों'' द्वारा डुबा दी जाती है। बच्चों को हर चीज़ उपलब्ध करायी गयी है। तकलीफ उठाने का प्रशिक्षण उन्हें नहीं दिया गया है। कठिन परिश्रम, दर्द एवं यहाँ तक कि पैसा के मूल्य के बारे में भी वे अनजान रहते हैं। माता–पिताओं के आजीवन कठिन परिश्रम लापरवाह बच्चों द्वारा बेहद खराब किये जाते हैं। माता–पिताएँ, बच्चों के भविष्य के लिए अपनी उम्मीदों एवं सपनों के साथ बच्चों की आध्यात्मिकता के लिए किसी जगह का आरक्षण नहीं करते। कम सुविधाओं में रहने वाले अपने भाई बहनों के साथ अपने समय, क्षमताएँ एवं उपहार बाँटने का प्रशिक्षण बच्चों को नहीं दिया गया है। नियमित एवं दैनिक पारिवारिक अथवा व्यक्तिगत प्रार्थना, बारंबार का पाप स्वीकार, परिवार की वार्षिक आशिष, पारिवारिक कार्यकलापों में व्यक्तियों की भागीदारी, पारिवारिक भोज, सहभाजन एवं मनोरंजन, तीर्थयात्राएँ एवं पिकनिक आदि की अतिशीघ्र अवनती हो रही है।

35. dyhfl;kbZ igpku % सदियों से अपने को हस्तांतरित कलीसियाई पहचान एवं आध्यात्मिकता का संरक्षण और पोषण करने के कठिन प्रयास में लगे बहुत सारे प्रवासी लोग हैं। हमारी कलीसियाई पहचान में विभिन्न तत्व हैं। जो कुछ अनिवार्य है, उन्हें छोड़कर बाकी सब बातों में उस क्षेत्र के रीति–रिवाजों का अनुकूलन किया जा सकता है। भवन की आशिष, बच्चे का जन्म, विवाह, गर्भधारण, मृत्यु, आदि से संबन्धित कुछ अनुष्ठानें मात्र संत थोमस ईसाईओं की विलक्षणताएँ हैं। पास्का का अद्वितीय पारिवारिक समारोह, 25 दिनी एवं 50 दिनी परहेज, साथ–साथ 15,8, एवं 3 दिनी उपवास, संत थोमस की कब्र की ओर एवं कैथालिक

चर्च के अन्य गणमान्य संतो की कब्र की ओर तीर्थ यात्रा करने की गहन परंपरा, आदि भी संत थोमस ईसाईओं के बीच प्रचलित थे। धर्मविधि सम्मत ऐसे सारे अनुष्ठानें संत थोमस ईसाईओं के लिए स्वयं को और दूसरों को विश्वास की परंपरा की शिक्षा देने का अवसर रहा, जो विश्वास प्रशिक्षण मूल्यों का हस्तांतरण एवं कलीसियाई पहचान के साधान के रूप में निरन्तर जारी रहते थे।

36. परंपरागत रूप से अपने बच्चों को आगे बढ़ाने में प्रवासी परिवारों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहे हैं। नयी पीढ़ि अपने क्षेत्र की, जहाँ वे रहते है, मूल्यों के बीच संघर्ष का मुकाबला करती है। पहली पीढ़ि के प्रवासी लोग, उन के प्रवास में जाने से पहले केरल में जड़ जमायी सीरो–मलबार बिरादरी के कई पारिवारिक अनुष्ठानों का पालन करते थे। युवा पीढ़ियाँ, जिनका विकास केरल के बाहर हुआ है, या तो ऐसे अनुष्ठानों का अनुपालन नहीं करती और यदि वे कर भी लेते, तो वास्तव में उन अनुष्ठानों के गहरा अर्थ या महत्व नहीं समझते हैं। वे एक विशाल दुनिया में सम्मिलित हो जाते हैं। पारिवारिक उपासना विधि एवं धर्मशिक्षा की किताबें स्थानीय भाषा में तैयार की जायें एवं नयी परिस्थितियों के अनुकूल बना दी जायें।

37. हर एक प्रवृत्ति की एक विपरीत प्रवृत्ति होती है। सार्वभौमीकरण की भीषण हवा के साथ, विपरीत प्रवृत्ति यानी अपनी जड़ों तक वापसी की भी मज़बूत होती है। अपनी असली संस्कृति, अपनी जड़ों में वापस जाने की संसार भर में व्याप्त इस उभरती प्रवृत्ति का सीरो–मलबार कलीसिया को लाभ लेना चाहिए। नयी प्रवृत्ति 'सार्वभौमीकरण के तत्व

पर आधारित होगी, यानी, सार्वभौमीकरण एवं जड़ खोजने की प्रवृत्तियों की समकालीनता। प्रवासियों की ज़रूरतों के लिए अपनी रणनीति को विकसित करते समय, सीरो–मलबार कलीसिया को सार्वभौमीकरण की रणनीतियों को भी पूर्ण बनाने की ज़रूरत है, ताकि इस उभरती प्रवृत्ति का मुकाबला कर सके।

38. संत थोमस द्वारा संस्थापित सात कलीसियाओं की ओर एक तीर्थयात्रा और साथ–साथ अन्य प्रसिद्ध तीर्थस्थानों की ओर एक सुव्यवस्थित तीर्थयात्रा अपनी जड़ की ओर चलने की एक आध्यात्मिक यात्रा होगी। संत थोमस से संबन्धित सन 2022 में होने वाली जंयती के उपलक्ष्य में तीर्थ स्थान बनाये जा सकते हैं। अपने श्रद्धालुओं को प्रोत्साहन दिया जायें कि कम से कम जीवन में एक बार एक तीर्थ स्थान की यात्रा करें। सीरो–मलबार कलीसिया के संतों को, जैसे संत अलफोन्सा, संत चावरा, संत एऊप्रासिया एवं हमारी कलीसिया के धन्य लोग, आदि को अर्थ पूर्ण रूप से, हमारी प्रवासी बिरादरी द्वारा लोकप्रिय बना दिया जाएँ।

39- viuiu dh ,d Hkkouk dk vUrfufo'V djuk % युवा प्रवासियों की चरागाही सेवा में आनेवाली मुख्य चुनौतियों में एक है कि युवा प्रवासी लोगों में सीरो–मलबार कलीसिया के साथ अपनेपन की भावना की कमी होती है। उस का फलस्वरूप कई प्रवासी लोग अपने निकट के लातीनी कलीसिया में बांरबार जाते हैं, उन में से कुछ लोग गैर कैथलिक कलीसियाओं अथवा अन्य गुटों में जातें हैं। संसार की चारों तरफ अपनी कलीसिया की मौजूदगी के बारे में बताये जाने के बाद भी वे केरल के अपने धर्मप्रान्त से अपनी निष्ठा को बरकरार रखना चाहते

हैं। युवा पीढ़ि को सीरो–मलबार कलीसिया की कलीसियाई परंपरा में आगे बढ़ाने के लिए एक सम्मिलित प्रयास की दरकार है।

40. राष्ट्रीय एवं अन्तर–राष्ट्रीय उच्च शिक्षा के अवसरों के द्वार खुले होने के नाते सीरो–मलबार कलीसिया के युवक–युवतियों की एक बड़ी संख्या आज प्रवास में जाती है। अपने मातृ पैरिश से उच्च शिक्षा के लिए प्रवास में जाने वाले युवक–युवतियों एवं छात्र–छात्राओं को पहचाने की एक व्यवस्था को रूप देना होगा, जैसे प्रवासी सदस्यों के लिए एक रजिस्टर रखना एवं प्रवास के क्षेत्र के प्रिस्ट इन चार्ज को एक चिट्ठी प्रेषित करना। मोबाईल ऐप्लिकेशन्स तैयार किये जायें, ताकि प्रवासी अपने प्रवास के क्षेत्रों में सीरो–मलबार बिरादरी की खोज कर सकें।

41. lhjk&eyckj dk vf/kdkjhx.k ls iokfl ;k dh mEehn% बुजुर्ग प्रवासी लोगों की ओर से यह शिकायत अक्सर आती है कि अपनी भेड़ो की तलाश करने में सीरो–मलबार कलीसिया हमेशा विलंब करती है। उनके जमाने में उन्हें चर्च की सख्त ज़रूरत थी। अब, सामान्य रूप से उनके बच्चें, जैसे वे कहते हैं, उन के हाथ से निकल चुके हैं, और जिस तरह उन का विकास हुआ उनसे वे सब अच्छी तरह हिलमिल गये। एक 'अजनबी', विदेशी सीरो–मलबार लिटरजी के अनुपालन करने की उनकी इच्छा नहीं है। इधर सवाल आता है या तो आस्त्वि का या फिर अवसान का। बहुत सारी जगह, हमारे प्रवासी लोग उन के स्थायी निवास बनाने के चक्कर की दशा में अपनी मातृ कलीसिया से यह उम्मीद करते हैं कि गिरजाघर के निर्माण के लिए उन्हें ज़मीन उपलब्ध करायी जाये। कई जगहों में लोग पूँजी इकट्ठी करने, ज़मीन

खरीदने एवं बिरादरी की अन्य प्रशासनिक ज़रूरतों के लिए वैधानिक संस्थाओं का पंजीयन करना चाहते हैं।

42. प्रवासी लोग अपनी मातृ कलीसिया से यह उम्मीद करते हैं कि वह ज्यादा से ज़्यादा प्रवासियों से मित्रता रखे। संस्कारों एवं संस्कारों के अनुकरण के अनुष्ठानों में उन्हें केरल के अपने पैरिश प्रीस्ट से अडचनों का सामना करना पड़ते हैं। ऐसे अवसर आते हैं, जब प्रवासी लोगों को नयी सदस्यता लेने को मज़बूर किया जाते हैं अथवाा कोई निर्माण कार्य के लिए भारी भरकम पैसे देने के लिए बाध्य किये जाते हैं। कुछ प्रवासियों ने उन के क्षेत्रों में गिरजाघरों का निर्माण किया है और कुछ गिरजाघरों का निर्माण कार्य चल रहा है। इन सब बातों का कभी–कभी ख्याल नहीं रखा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ प्रवासी लोगों को केरल के उनके पैरिश चर्च में इसलिए महत्व दिया जाता है कि उन्होंने आर्थिक योगदान दिया है। दुःख की बात यह है कि यद्यपि वे लोग अपने प्रवास क्षेत्र के सीरो–मलबार कलीसिया का अनुसरण नहीं करते, यहाँ तक कि उन में से कुछ लोग सीरो–मलबार प्रवासी बिरादरी के खिलाफ काम करते हैं, तो भी आर्थिक योगदान इन सब बातों को ढक लेता है। जब ये प्रवासी लोग विवाह के लिए वापस केरल पहुँचते हैं, तो उन से प्रवासी क्षेत्र के उनके पैरिश प्रीस्ट की सर्टिफिकेट भी माँगी नहीं जाती है। स्वतंत्र अवस्था प्रमाणित करने के लिए प्रवासी क्षेत्र के पैरिश प्रीस्ट की सर्टिफिकेट प्रस्तुत करने का नियम बाध्यात्मक बना दिया जाये। वर्तमान दुनिया भर के प्रवासियों के लिए चरागाही सेवा की व्यवस्था होने के नाते अधिनिवास एवं अर्ध अधिनिवास के नियमों का पालन करना ज़रूरी नहीं है।

43. lxBkukRed 0;oLFkk % गंभीर योजनाएँ बनाते समय कलीसिया को उल्टा प्रव्रजन, छात्र–छात्राओं का सार्वभौम प्रव्रजन, आप्रवासन, आदि के बारे में भी अध्ययन करना होगा। उसी प्रकार का अध्ययन उन लोगों के बारे में भी हो, जो दूसरी या तीसरी बार प्रव्रजन करते हैं, उन की उपासना विधि की भाषा, उन का सांस्कृतिक अनुकूलन, अन्तर–सांस्कृतिक अनुकूलन, उन की प्रेरिताई प्रयास, आदि। इन की जटिलताओं का सामना करने के लिए सरल चरागाही हल काफी नहीं होगा। ये सारी बातें निरन्तर कलीसिया के निरीक्षण में रहें और इसलिए एक कार्यालय की व्यवस्था करना भी ज़रूरी है। प्रेरिताई सिंहासन की अनुमति से मेजर आर्की एपिस्कोपल विज़िटर पर बने नियम का प्रावधान एक समाधान हो सकता है।[15]

44. मिट्टी के पुत्र–पुत्रियों के समाकलन का प्रवासियों की पहली पीढ़ि शायद विरोध करेगी, क्योंकि वे चाहते हैं कि अपने बच्चे उसी प्रकार जियें जिस प्रकार उन्होंने अपना जीवन जिया था। मगर नई ताकत और जोश के साथ इन बच्चों को स्वीकार करने के लिए अपने क्षितिजों को खोलने की मदद कलीसिया उन्हें प्रदान करे। उन की ज़रूरतों की पूर्ति, जैसे भाषा, में संस्कृति, धर्मशिक्षा, उपासना विधि, आदि के लिए एक अनुसंधान केन्द्र की स्थापना में भी देर नही हो। प्रवासी बच्चों एवं युवक–युवतियों को लक्ष्य बना कर एक नये एवं चित्ताकर्षक शिक्षा–विज्ञान के लिए एक धर्मशिक्षा विभाग भी खोल दिया जाये। प्रवासी क्षेत्र की भाषा का सम्मान और प्रवासी लोगों एवं नवदीक्षित लोगों को आवश्यक स्वीकृति देते हुए कलीसिया की उपासना विधि का संचार करें।

45. ''भटकी हुई भेड़'' को रास्ते में न छोड़ दिया जाये। उन की तलाश करनी है, उन्हें पाना है और वापस मुख्यधारा में ले आना है। जहाँ–जहाँ नयी बिरादरियों का निर्माण होता है, प्रवीण लोगों की मदद ली जायें एवं आधुनिक तकनीकों का भी इस्तेमाल हो। दूर चले गये श्रद्धालुओं को मुख्य धारा की ओर लाने हेतु एवं हमारे धर्मशास्त्र संबन्धी एवं धर्मशिक्षा संबन्धी विरासत के नवीनीकरण के उद्देश्य से ऊपर बताये गये प्रवीण लोगों की एक धर्मशास्त्र संबन्धी समिति को भी रूप दिया जा सकता है।

46. सीरो–मलबार कलीसिया की पुरानी प्रान्तीय स्वतंत्रता की पुनःस्थापना होना साफ तौर पर न्याय का कार्य है, क्योंकि डर के बिना प्रवासियों के ख्याल रखने के लिए यह अनिवार्य है। सभी Sui iuris कलीसियाओं के समान अधिकार की धारणा को पाने के लिए एवं सीरो–मलबार कलीसिया के प्रति अन्याय एवं भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करने के लिए सभी उपलब्ध प्रणालियों का इस्तेमाल किया जायें। सार्वभौम रूप से श्रद्धालुओं की चरागाही सेवा के लिए उपयुक्त अधिकार क्षेत्र की भी सख्त ज़रूरत है।

47. lkoZHkkSe dyhfl;k dk fuekZ.k djsa fy, lg;ksxh iz;kl % हमारी कलीसिया को सार्वभौम बनाना मातृ कलीसिया की जिम्मेदारी है। महत्वपूर्ण शहरों में, विशेषकर, भारत के शहरों में रहने वाले प्रवासियों को गिरजाघरों एवं केन्द्रों के निर्माण के लिए मदद की ज़रूरत है और इसके लिए दत्तक ग्रहण/साझेदारी की धारणा का अनुसरण हो सकता है। आर्थिक रूप से अच्छे खासे पैरिशें, फोरैनें, संस्थाएँ, प्रान्तें अथवा धर्मप्रान्तें, दोनों भारत में एवं भारत के बाहर, इस प्रयास में भागीदार हो

सकते हैं। ASSM के ज़रिए सीरो–मलबार कलीसिया ज़रूरतमंद प्रवासियों को, विशेषकर, उनकी प्रारंभिक दशा में मदद देती है।

48. आर्थिक मदद के अलावा तकनीकी जानकारियाँ भी बाँटी जा सकती है। प्रवासी कलीसियाओं के विकास के लिए दूरवर्ती मिशनरियों एवं फील्ड मिशनरियों की धारणा का विकास करना भी समय की माँग है। सेवानिवृत्त लोग, युवा एवं अन्य लोग फील्ड मिशनरी हो सकते हैं, जो निर्माण कार्य, शिक्षा एवं समान ज़रूरतों में हाथ बँटा सकते हैं।

49. /keiikUr lkoHkkSehdj.k dk ifrfuf/k;k dk :Ik e% इस बात पर विचार करना अवसर के अनुकूल होगा कि प्रवासियों के लिए वर्तमान में कार्यरत धर्मप्रान्तें, अन्य मिशन धर्मप्रान्तों के साथ मिलकर, चूँकि, वे भाषा और संस्कृति से परिचित हैं, सीरो–मलबार कलीसिया को सार्वभौम बनाने में किस तरह एक नेृत्व की भूमिका निभा सकते हैं। वर्तमान मिशन धर्मप्रान्तों में अधिकांश जगह प्रवासी लोगों की अच्छी आबादी है। कुछ सुझाव नीचे दिये गये हैं :

1. नये–नये क्षेत्रों में रूप लेनेवाली सीरो–मलबार बिरादरियाँ, कलीसिया के दस्तावेजों के प्राण के आधार पर, सुसमाचार प्रचार एवं सांस्कृतिक अनुकूलन की पहल करनेवाले बन जायें;

2. इन धर्मप्रान्तों के सहयोग से अन्य Sui iuris कलीसियाओं के मेजर सेमिनारियों एवं प्रशिक्षण केन्द्रो में सीरो–मलबार उपासना विधि समारोहों को संपन्न करने की पहल कलीसिया द्वारा की जानी चाहिए। इन संस्थाओं में ओरियेन्टल उपासना विधि, कैनोन नियम एवं कलीसिया संबन्धी शिक्षा पढ़ाये जाने के लिए भी कलीसिया की तरफ से पहल हो;

3. समाज में पुल बाँधने वालों के मिशन के बारे भी इन धर्मप्रान्तों को पूरी जानकारी होनी चाहिए;

4.सीरो–मलबार उपासना विधि स्थानीय भाषा में मनायी जाये एवं दूसरी एवं तीसरी पीढ़ी के अनुकूल बनायी जाये ;

5.प्रवासियों को एकता में बाँधने के लिए और उन्हें उन की अपनी विकास एवं प्रगति की जानकारी देने के लिए विविध भाषा में एक न्यूज बुल्लेटिन एवं मैगेज़िन भी प्रकाशित किया जाये;

6.पर्वो के समारोहों, सम्मेलनों एवं अन्य सभाओं में भाग लेने, विशेषकर, उन अवसरों पर प्रवचन देने के लिए, प्रवासी क्षेत्र के लातीनी धर्माध्यक्षों एवं अन्य अधिकारियों को बुला लिया जायें ;

50. pjkxkgh lok dk fy, urkvk dk if k{k.k % प्रवासी लोगों की अगुआई करने के लिए उन्हें सक्रिय एवं जीवन्त पुरोहितगण एवं समर्पितों की ज़रूरत हैं। हाल ही में व्यवस्थापित प्रवासी बिरादरी में संत थोमस ईसाईओं के विश्वास की परम्पराओं एवं आध्यात्मिकता का पालन करने में प्रोत्साहन देने के लिए नियुक्त पुरोहितगण एवं समर्पित लोग सीरो–मलबार कलीसिया की कलीसियाई विरासत के बारे में मज़बूत ध ारणा रखनेवाले एवं उत्साही हों। बदली हुई परिस्थितियों एवं जनता की संस्कृतियों की सराहना करने का उन्हें प्रशिक्षण दिया जाये, ताकि नयी सांस्कृतिक परस्थितियों में अलग हुए बिना सम्मिलित होने में प्रवासी बिरादरियों की वे मदद कर सकते हैं।

51. प्रवासियों के कार्यों को संभालनेवाले अधिकतर पुरोहितगण केरल से आते हैं। जब केरल से आये पहली पीढ़ियों से व्यवहार करने की बात

आती है, तो यह एक बल है। मगर, यही कार्य एक कमजोरी साबित होती है, जब मिट्टी के पुत्रों को संभालने की बात आती है। केरल से आने वाले पुरोहितों को भाषा की कुशलता एवं प्रवासियों के जीवन एवं संघर्षों का बेहतर ज्ञान होना आवश्यक है। युवा पीढ़ियों को दिशा–निर्देश देने के लिए पुरोहितों, समर्पितों एवं लोकधर्मी नेताओं को समयोजित प्रशिक्षण देने में देर नही की जाये।

52. प्रवासी बिरादरी में जानकार लोकधर्मी नेताओं की अनुपलब्धता एक बड़ी चुनौती है। प्रवासियों की शैक्षाणिक योग्यताएँ नाटकीय परिवर्तनों से गुजर गयी हैं। अकुशल एवं अर्धकुशल श्रमिकों से प्रवासी लोगों का कुशल पेशेवर लोग बनजाना कलीसिया के सामने रखी गयी नयी जिम्मेदारियाँ हैं। सार्वभौमीकृत पेशेवर लोगों के प्रति कलीसिया का दृष्टिकोण भूतकाल से भी विभिन्न होना चाहिए। कलीसिया के विविध कार्यकलापों के लिए उन की क्षमताओं के उपयोग करने के मार्ग एवं साधन की तलाश होनी चाहिए।

53. iokfl;k dk chp lefir ijkfgr x.k ,oa /keZ cgu% जहाँ तक प्रवासी से अपने संबन्ध का सवाल है, लातीनी धर्मप्रान्तों अथवा धर्मसंघों में सेवा देनेवाले पुरोहितों व समर्पितों का चित्र साफ हों। उन में से दो वर्ग अत्यावश्यक ध्यान के पात्र हैं : यानी, वे पुरोहितगण अथवा समर्पित जो मूल रूप से सीरो–मलबार कलीसिया के सदस्य हैं,

1. मगर, वर्तमान में लातीनी धर्मप्रान्तों अथवा धर्मसंघों के सदस्य बन गये हैं;

2. एवं सीरो–मलबार धर्मप्रान्तों अथवा समर्पित जीवन में शामिल हुए हैं, मगर वर्तमान में लातीनी धर्मप्रान्तों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

54. सीरो–मलबार कलीसिया के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में समर्पितों की अवस्था के बारे में निम्न लिखित सवालें उठाये जाते हैं :

1. कलीसिया अपने स्वभाव से ही मिशनरी है, ऐसा ही सीरो–मलबार कलीसिया भी। प्रान्तीय सीमा उन लोगों के लिए एक परेशानी है, जो केरल के बाहर प्रेरिताई कार्य करने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि हो सकता है कि इस के लिए अन्य Sui iuris कलीसिया में शामिल होने की उन से माँग की जाये। पूर्वी कलीसियाओं के बीच सीरो–मलबार कलीसिया ही सबसे ज़्यादा त्रस्त है, क्योंकि प्रचुर मात्रा में बुलाहटों के होने के बावजूद भी सुसमाचार के प्रचार में उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अगर सुसमाचार प्रचार को चरागाही सेवा से आन्तरिक रूप से जोड़ दिया जाये, तो क्या यह पर्याप्त है कि प्रवासियों की चरागाही सेवा मात्र के लिए सीरो–मलबार कलीसिया को स्वतंत्रता मिलती है; सुसमाचार प्रचार के लिए नहीं?

2. हमारे मिशनरी लोगों द्वारा भी कलीसिया के सार्वभौम स्वभाव को सुनिश्चित किया जायें,

3. जैसे सीरो–मलबार के समर्पितों को पहले से ही सार्वभौम स्वभाव प्राप्त हैं, तो प्रवासियों की चरागाही सेवा में उन की भागीदारी एवं योगदान क्या हो सकते हैं?

4.सीरो–मलबार प्रोविंशल हाऊसों में, एवं उन के अधीन आनेवाले अन्य भवनों में, जो लातीनी धर्मप्रान्तों में सेवाएँ देते हैं, सीरो–मलबार उपासना विधि एवं अन्य कलीसियाई पहचान का, कुछ नियम शीलता के साथ, क्या हम पालन कर सकते हैं?

5.प्रवासियों की सेवा में सीरो मलबार कलीसिया को क्या उन पुरोहितों एवं समर्पितों की भागीदारी मिल सकती है, जिन्होंने लातीन धर्मप्रान्तों एवं समर्पितों के धर्मसंघों में शामिल हुए हैं? कलीसिया के नियमों द्वारा दिये गये संकेतों के अनुसार उचित समाधानों का प्रस्ताव दिया जा सकता है।

55. **c|ykgVk dk c<kok nuk ¼** जहाँ प्रवासी लोगों को उचित चरागाही सेवा और ध्यान दिया जाता है, वहाँ प्रचुर मात्रा में बुलाहट बढ़ती जाती है। प्रवासी युवा एवं बच्चों को मानवीय एवं आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने में एक पैरिश बिरादरी एक विश्वसनीय कोख हो सकती है। प्रवासियों को उन की भाषा और संस्कृति में प्रभावशाली चरागाही सेवा देने में प्रवासियों के बीच से आनेवाली बुलाहट सहायक होगी। प्रवासियों के बीच में बुलाहट को बढ़ावा देने के लिए कलीसिया के हर सदस्य को, विशेषकर माता–पिताओं को सतर्कता से सोचना होगा। सार्वभौम कलीसिया की ज़रूरतों की पूर्ती करने के लिए स्थायी डीकन, पुरोहितगण एवं समर्पितों को प्रशिक्षण देने के बारे में हमें गंभीरता से विचार करने की ज़रूरत है। अगर हम युवा–संसाधनों को प्रेरिताई कार्य के साधन बनाएँगे, तो यह सीरो–मलबार की सार्वभौम बिरादरी की ताकत बढ़ायेंगे।

56. **vk/kfud i|kfxfd;k dk mi;kx ¼** एक क्षेत्र में जब, सीरो–मलबार प्रवासी लोग शीघ्र प्रेषणशील एवं प्रौद्योगिकी प्रणलियों के प्रति निरावरण रहते हैं, तो हमारी धर्मविधि के संरक्षण करने में ज़रूरी शिक्षाओं को बड़ी गंभीरता से एवं स्पष्ट रूप से संसार के चारों तरफ फैले हुए हमारे प्रवासियों को समझाने की ज़रूरत है। प्रभावशाली एवं परस्पर संवेदात्मक

संचार प्रणालियों का इतना विकास किया जायें, ताकि लोग कलीसिया की शिक्षाओं के बारे में जानें और सत्य के प्रति स्पष्टता के साथ उन का अनुकरण भी करें। इंटरनेट एवं स्मार्ट फोन के अवसरों की संभावनाओं का शोषण, उचित तरीके से बनायी गयी वेबसाईट, वाट्स ऐप, ट्विट्टर, फेस बुक आदि, जब उचित रूप से संभाले जाते हैं, तो कलीसिया में ये सब प्रभावशाली संचार के माध्यम बन सकते हैं । युवा पीढ़ि को बेहतर ध्यान देने में यह कलीसिया की मदद कर सकती है।

57- fofHkUu n'kk l s lcfU/kr ekeyk,¡ ¼

1.विकसित देशों में अपने युवाओं को कलीसिया में वापस लाने की पद्धतियों को तैयार करने से पहले, इस समस्या की गहराई तक अचरजो का सामना करने की पूरी तैयारी साथ उतरने को हमें समर्थ होना है। कलीसिया की पहचान से पेश आने से पहले धर्म एवं विश्वास के बारे में सवाल का सबसे पहले निपटारा करना पड़ेगा।

2.गल्फ देशों से अधिकतर बुजुर्ग लोग वापस केरल लौटेंगे। मगर, उन के बच्चे, या तो वहीं रहेंगे या फिर कहीं ओर प्रव्रजन करेंगे। इस समस्या की जटिलता का सावधानी से विश्लेषण करना होगा।

3.चरागाही सेवा से छूटे हुए हमारे कैथलिक परिवारों की मदद के लिए बहुत कुछ तैयारी एवं रणनीति की ज़रूरत है।

4.एक आर्थिक शेर के रूप में भारत का उभरना सीरो–मलबार कलीसिया के लिए एक बृहद लहर है। भारतीय संस्कृति में निर्मित कलीसिया ही आसानी से उच्च शिक्षा प्राप्त युवा पीढ़ियों के लिए अपनी प्रासंगिकता की दृढ़ धारणा पैदा कर सकती है।

58- lkekU; leL;k,¡% कुछ सामान्य चिन्ताएँ निम्न लिखित हैं :

1. सार्वभौमीकृत सीरो–मलबार केन्द्रों में अभिलेखागार एवं इतिहास के दस्तावेजीकरण पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि यह आन्दोलन दिन–प्रतिदिन बल पा रहा है।

2. राजनीतिक, व्यवसाय संबन्धी अथवा स्वयं के लाभ के लिए प्रवासियों द्वारा सीरो–मलबार संस्थाओं का शोषण एक बढ़ता हुआ खतरा के साथ–साथ एक चुनौती भी है। हर परिस्थिति में इस की योग्यता के अनुसार हर एक प्रवासी द्वारा इस खतरे को विवेकपूर्ण रूप से संभालना का रहता है, फिर भी कुछ इन गिने लोगों के स्वार्थपूर्ण उद्देश्य सीरो–मलबार बिरादरी की चेतना और एकता को दसअसल नुकसान पहुँचाते हैं।

3. प्रवासी क्षेत्रों की सफलता की कहानियाँ हमारी कलीसिया की मैगजीनों में दोहरायी जा सकती हैं। उसी तरह प्रवासी लोकधर्मी व्यक्तियों एवं मिशनरियों की सफलता की कहानियों को लोकप्रिय बनाना और उन्हें पुरस्कारित भी करना है।

fu'd'k

59. संसार की आखिरी छोर तक ईसा मसीह के गवाह बनना ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अवसर है। सार्वभौम कलीसिया पहाड़ी पर जलाया गया एक मशाल के सदृश है, जो सारे संसार को प्रकाश देता है। सीरो–मलबार प्रवासियों की समस्याओं को समझने एवं कलीसिया और समाज के लिए उन के प्रयासों को मान लेने एवं सराहने के उपलक्ष्य में यह असेंबिली समारोह हमारी कलीसिया के लिए एक मील का पत्थर है। सार्वत्रिक कैथलिक कलीसिया के विकास में भागीदारी नेतृत्व को प्रोत्साहन देने की कलीसिया आशा करती है। सीरो–मलबार कलीसिया को, अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करते हुए पल्लवित होना है, ठीक उसी समय अन्य कलीसियाई परंपराओं को आपसी मदद एवं सम्मान देना है, उन्हें समझना, उन की परवाह करना एवं उन की पऱवरिश करनी है। हमें प्रवासियों एवं आगे की पीढ़ियों का साथ देना है और सीरो–मलबार कलीसिया को सार्वभौम बनाने की और उस तरह हमारे संसार में सुसमाचार प्रचार करने का प्रण लेना है।

ppkZ dh fy, lokyः

1.सीरो–मलबार कलीसिया में एक प्रवासी कौन होता है? एक सार्वभौम कलीसिया बनने में प्रवासियों की क्या–क्या उम्मीदें हैं?

2.सीरो–मलबार कलीसिया से प्राप्त चरागाही सेवा से क्या प्रवासी लोग संतुष्ट हैं? सीरो–मलबार बिरादरियों तक पहुँचने के मार्ग और साधन क्या–क्या हैं?

3.सार्वभौम प्रवासियों के बीच विशेषकर, मूल्यों की प्रणाली, धर्मक्रियाओं एवं परिवारिक परंपराओ के बीच अनुकूलन, समाकलन, सांस्कृतिक अनुरूपण एवं अन्तर–सांस्कृतिक अनुकूलन किस तरह लायें जायें?

4.सीरो–मलबार प्रवासियों द्वारा बनायी रखने की पहचान क्या है? अपनी कलीसियाई पहचान के रूप में पहली पीढ़ि के प्रवासीगण एवं आगे की पीढ़ियों के प्रवासियों से अपनी कलीसियाई पहचान को जीने में, किन–किन अनिवार्य तत्वों एवं आकस्मिक तत्वों पर ध्यान देने की उम्मीद की जाती है?

5.कलीसिया के सुसमाचार प्रचार के कार्य में प्रवासी बिरादरियाँ किस तरह अर्थपूर्ण रूप से एवं सक्रियता से भाग ले सकती हैं? क्या–क्या चुनौतियाँ हैं? उनके मुकाबला करने के मार्ग और साधन का सुझाव दें।

Endnotes

1. *Gen 12:1; 50:23; 26:16; 41-42; Ex 1:9-10, 1:11-14, 3:8*; *Deut 28:48; Ps 137; Neh 1:9; Rut 1:7; Tob 14:12*. The success story of Isaac and Joseph is also the story of the well-established migrants in the developed countries. The reunion of Jacob and his sons is the model of family reunion of migrants and refugees in the modern world after long period of suffering and isolation. When the Israelites increased in number the new Egyptian king felt threatened. Sentiments like "sons of the soil" from different parts of the nation and abroad are the signs of vulnerability of aliens in any foreign land. Once problems appear, the first to be blamed are the immigrants who are either expelled or subject to rigorous control.
2. *Mt 2:1&13; 25:34-35*; *Lk 2:4; 9:58; Rom 12:13; 1Tim 3:2, 5:10; 1Pet 4:9*; *2Cor 8:9; Act 8:1;Eph 2:19; 1Cor 12:13-14; Gal 3:28.*
3. *Lev 19:33-34*; *Rom 15:7; Mt 25:31-45; Act 10:34-35*.
4. LG 23; GS, AG 38; CD, 23, 27; OE 2-4.

5. Pope John Paul II, *Erga migrantes caritas Christi*, 2004, nos. 52-54.
6. Letter of Pope St. John Paul II to the Bishops of India on 28th May 1987. The Holy Father insisted the same also in his address to the Plenary Assembly of the Congregation for the Oriental Churches, 1st Oct, 1998.
7. CCEO 17, 21, 29, 31, 32, 128, 38, 39-41, 213, 148, 588, 193, 1465; CIC 112, 383, 476, 518, 112, 111, 214.
8. Pope John Paul II, *Erga migrantes caritas Christi*, 2004, nos. 52-55.
9. There are two Apostolic Vicariates in the Gulf countries: The Southern Vicariate - the territories of the United Arab Emirates, Oman and Yemen and the Northern Vicariate - Kuwait, Qatar, Bahrain and Saudi Arabia.
10. In many of the migrant communities in India and abroad, Syro-Malabar liturgical celebrations are conducted in the Latin Churches. Qatar, the only country in the Gulf where there is an independent Syro-Malabar Church, our people began their community life by sharing a place of worship with the Malankara Orthodox Church. This situation continued until both Churches constructed individual independent churches on a land provided by the government.
11 "Guidelines for the pastoral care of migrants" Part III, in The Code of Particular Law of the Syro-Malabar Church, Syro-Malabar Major Archiepiscopal Curia, Mount St Thomas, Kochi, 2013, P.146.
12. LG 13; *CIC* Can. 844, §§3-4 and *CCEO* Can. 671, §§3-4.
13. *GS 58-59*.
14. Christian faith with all its Jewish cultural garbs were not essentially to be carried forth (Acts 15). The first four books of the apostolic canon of the New Testament contain four different versions of the story. Their titles imply that there is one Gospel, related to four different writers (Lk 1, 1-4).
15. CCEO c. 148.

lkekU; fu'd'k

सीरो–मलबार कलीसिया ईश्वर के राज्य का बीज बनी रहती है और अर्थ एवं आशा के रूप में लोगों को सुसमाचार प्रदान करती रहती है। इस लिहाज़ में मेजर आर्की एपिस्कोपल सभा, पवित्रात्मा के मार्गदर्शन में एक सुनहरा मौका है। मार वर्की वितायात्तिल, जो सीरो–मलबार कलीसिया के भूतपूर्व मेजर आर्च बिशप थे और प्रेमपूर्ण स्मृति के लायक है, सभा को कलीसिया के एक अधिकार सम्मत विभाग की एक सहभागिता का नाम देते हैं। ये ऐसे पवित्र दिन हैं जो यह पहचानने में हमें सक्षम बनाते हैं कि पवित्रात्मा कलीसिया से क्या कहता हैं[1] सभा की तैयारी में, लीनिमेन्दा सभा के तीन मुख्य विषयों के विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है और इन में से प्रत्येक विषय समकालीन समाज में सीरो–मलबार ख्रीस्तीय जीवन की मज़बूतियों एव कमज़ोरियाँ को प्रकाश में लाता है। ये विषय श्रद्धालुओं के जीवन से रू–ब–रू होने की सीरो–मलबार कलीसिया की तत्परता को प्रकट करते हैं। परिवार एवं समाज में प्रभु ख्रीस्त को साक्ष्य देने में श्रद्धालुओं की चिन्ताओं एवं चुनौतियों पर कलीसिया ध्यान देना चाहती है और उस तरह आनेवाली सभा को कलीसियाई समागम की एक महान घटना के रूप में देखना चाहती है। यह सभा, सीरो–मलबार कलीसिया को अपनी प्रेरिताई विरासत को जीवन में उतारने की और सार्वत्रिक कैथलिक समागम को अपना सहांश देने में सक्षम बनाती है। ये विषय वर्तमान समय की चुनौतियों के मुकाबला करने की कलीसिया की उत्सुकता और जहाँ कहीं भी वह कार्यरत रहती है, वहाँ देश–निर्माण की प्रक्रिया में, अपना सहयोग देने की तत्परता को अभिव्यक्त करते हैं। ईसा मसीह के सादगी का जीवन एवं उन की शिक्षाएँ, सुसमाचार के मूल्यों को जीवन में उतारने के लिए अपने जीवन को परिवर्तित करने के व्यक्तिगत कदमों की पहल करने का आग्रह करती है। लीनिमेन्दा का पहला भाग ''सादगी का जीवन'', वर्तमान संस्कृति पर, जो धार्मिक एवं सामाजिक रिवाजों पर उपभोक्तावाद एवं व्यक्तिपरक के मनोभाव रखती और विकास की भ्रान्त धारणाओं को ग्रहण करती है, एक आलोचनात्मक दृष्टि डालता है। विभिन्न स्तरों पर होने–वाली चर्चाओं को,

इस बात पर मंथन करने की ज़रूरत है कि सादगी की आध्यात्मिकता किस तरह सीरो–मलबार कलीसिया के विविध स्तरों का, जैसे व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन, चरागाही रूख एवं कलीसिया की संरचनाओं, आदि का स्पर्श कर सकती है।

दूसरा भाग, ''परिवार में साक्ष्य'', सीरो–मलबार श्रद्धालुओं को परिवार के प्रति ईश्वर की योजना को पुनः ग्रहण करने एवं पारिवारिक जीवन की समकालीन चुनौतियों के मुकाबला कर बहुमूल्य पारिवारिक परंपराओं को मज़बूत करने का न्यौता देता है। परिवार की संरचना एवं स्थिरता को दुर्बल करनेवाली समाज की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, मात्र पारिवारिक जीवन को नहीं, बल्कि सीरो–मलबार बिरादरियों के निर्माण के लिए भी खतरा पैदा करती हैं। समकालीन परिवारों की सामाजिक–सांस्कृतिक हालातों में होनेवाले परिवर्तनों की उपेक्षा नहीं की जा सकती, जो भावपूर्ण एवं आवेगपूर्ण आयामों के असंतुलन का अंजाम लाते और परिवारों की अस्थिरता एवं नाश की ओर ले जाते हैं। प्रभावकारिता एवं व्यक्तिगत परिपक्वता के बारे में एक कैथलिक अवबोध के साथ, अपने पारिवारिक प्रेरिताई कार्यों के द्वारा, पारिवारिक, संबन्धों को मज़बूत करने के मार्गों और उपायों पर विचार करने की सभा उम्मीद करती है। लीनिमेन्दा पर होने वाले विचार–विमर्श को, इस बात पर चर्चा करनी होगी कि विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालुओं का संयुक्त प्रयास, किस तरह युवा दंपतियों को परिवार के सुसमाचार को जीवन में उतारने की पहल देकर उनके साथ चल सकता है।

तीसरा भाग, ''प्रवासियों का मिशन'', सीरो–मलबार कलीसिया के प्रव्रजन की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर केन्द्रित है। निरन्तर परिवर्तनों से गुजरनेवाले भाषाई, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में प्रवासी परिवारें एवं बिरादरियाँ किस तरह सीरो–मलबार कलीसिया के विश्वास एवं परंपराओं को हस्तांतरित कर सकती हैं, यह हाल ही के दशकों में कलीसिया की चिन्ता रही है। फिर भी, प्रवासी बिरादरियों एवं अन्य प्रवास की जगहों में रहनेवाले श्रद्धालुओं के उन के विश्वास को जीवन में उतारने एवं उन की अपनी परिस्थितियों में सुसमाचार के प्रचारक बनने के लिए उन्हें मज़बूत

करने के विभिन्न व्यवहारिक एवं उपायों को सभा को अपनाना होगा। ये परिस्थितियाँ, सीरो–मलबार कलीसिया के लिए वैश्विक पहचान तक विकसित होने के मौकाएँ हैं, और इसके लिए प्रवासी बिरादरियों को सही दिशा निर्देश दिया जाना और अपनी उचित सीमा में रहने वाले श्रद्धालुओं को तैयार किया जाना भी होगा।

इस लीनिमेन्दा को इसलिए प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि इन चुनौतियों के प्रति कलीसिया एक जुट होकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें। ''लीनिमेन्दा'' शब्द का अर्थ लातीन भाषा में ''प्रारूप'' होता है। यह, सभा के विषयों का एक विस्तृत प्रारूप है, जो अवलोकनों एवं प्रतिक्रियाओं के एक विस्तृत क्षेत्र को प्रकाश में लाने का उद्देश्य रखता है। विभिन्न स्तरों में चर्चाओं को सुविधायुक्त बनाने के लिए, जैसे धर्मप्रान्त, पुरोहितों का मिलन, पैरिश कांऊसिल, पैरिश, धर्मसंघ, प्रवासी बिरादरियाँ, पारिवारिक इकाईयाँ, एवं व्यक्तिगत, आदि प्रत्येक विषय के अन्त में प्रश्नावली भी दी हुई हैं। विभिन्न स्तरों पर इन सवालों पर होने वाली प्रतिक्रियाएँ सीरो–मलबार श्रद्धालुओं के दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करेंगी। यह प्रतिक्रियाएँ, Instrumentum Laboris का एक सिंह भाग, सभा के दस्तावेज के निर्माण एवं सभा की चर्चाओं का मुख्य हिस्सा होगी। इसलिए सीरो–मलबार कलीसिया के धर्माध्यक्षों की सभा, सभी श्रद्धालुओं को यह सलाह देती है कि लीनिमेन्दा में दिये गये विषयों पर ध्यानपूर्वक मनन करें।

ABBREVIATIONS

AAS	:	Acta Apostolicae Sedis
AG	:	Ad Gentes
ANF	:	Ante-Nicene Fathers
CCC	:	Catechism of the Catholic Church
CCEO	:	Codex Canonum Ecclesiarum Orientalium
CD	:	Christus Dominus
CIC	:	Codex Iuris Canonici
EG	:	Evangelii Gaudium
EMCC	:	Erga Migrantes Caritas Christi
FC	:	Familiaris Consortio
GS	:	Gaudium et Spes
LF	:	Lumen Fidei
LG	:	Lumen Gentium
LS	:	Laudato Si'
MD	:	Mulieris Dignitatem
NPNF	:	Nicene and Post-Nicene Fathers
OE	:	Orientalium Ecclesiarum
PFS	:	Pope Francis' Speech
PL	:	Patrologia Latina
PP	:	Populorum Progressio